

अन्ततः

प्रकाशक

पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली

हिमांतु घोरी } अन्तत.

अन्ततः
कहानी संग्रह

•

प्रकाशक
पूर्वोदय प्रकाशन
८ नेताजी सुभाष भाग
दिल्ली ६

•

मूल्य: तीन रुपये पचास पैसे

प्रथम संस्करण
१९६१ ।

•

मुद्रक
राष्ट्र भारती प्रेस
कृष्णा धेमान दरियागज
दिल्ली ६

भारतीय विद्या ऽ दिव
बान्तर

निमंल वर्मा को

ये कहानियाँ

लगभग सात घाठ वर्षों की अवधि में जितनी कहानियाँ लिखी उन में से कुछ यहाँ एकत्रित की गई हैं—समय एवं विविधता के क्रम से ।
—मेरे प्रथम कहानी-संग्रह के रूप में । मृष्टि के साथ-साथ दृष्टि बदलती है । इसलिए कहानियों में भी बलाव दीखे तो अचरज नहीं । कहानी मात्र कहानी ही नहीं रही अब परम्परा से परे कुछ और भी है—यथाथ का तटहीन प्रतिबिम्बन—एक नए सद्म में एक सचाई ।—साकेतिक । शब्दों का ऐसा समीक्षमय साकार सजीव चित्र—सरकरामा भी तरह जिसका विविध भाषाम होत हुए भी हर भाषाम अपने में पूरा —एक पूरा चित्र हो ।—कुछ-कुछ इसी दिशा में दृष्टि सोचने लगा हूँ । इसलिए कहीं-कहीं वह कहानी छूट गई है जिस अब तक लोग कहानी मानते आए हैं ।

कहानी लिखने के अनिश्चित भाष्य लिखने में अधिव रचि नहीं रही जसा कि अपना ही पाठों के कुछ लोग अब तक करते आए हैं । वस्तुतः हर निष्पत्ति कलाकार अपने में अपनेना होता है । हर कहानी स्वयं को स्वतः व्यक्त करती है ।

जिम दिशा की ओर मेरा इगित है वह मेरी कहानियों से प्रतिबिम्बन हुआ तो अपना प्रयास सफल समझूंगा । कहानिया का इस रूप में सज्जन का थय भाई प्रदीप जी का है जिनका आभारी नहीं हूँ । अपना का ही कही आभार माना जाता है ।

नई दिल्ली
मार्च १९६५

हिमायु जोगी

अन्तत
आदमी जमाने का
स्वभाव
धमाव
परिणति
मई बात
रहित
बूद पानी
तिमटा टुप्पा दुस्त
दिनारे व सोप
दिगी एव न्हरे वें

अन्ततः

•

यावता है विरजू। निरा यावता। जब स गोसाइ बाबा गए, बूढ़ी बिनिया न अपन मह के टुकड़ से पासा-योसा। पर टूटे बरम की रेव मिट न पाई। बरम-बेवता की धूनी पर जा उसन कम मान-मनोनी न की। तीरप-बरत के त्रिए टका बहान। सनिन एमा कोई दिन नहीं छिन नहीं जब उसने हरजी के पान म जा अपनी विपण न मुनाई। परमेसर तो सब की मुनत हैं। पर उमी के भाग पूरे—तो क्या।

सब के सड़के सौ-सगन स मिहनत-मजदूरी बरत हैं। रूपा-मूसा कुछ तो पैर को मिला ही है। किन्तु बिनिया का विरजू कुछ नहीं करता। तिन भर टासा किरता है। वहीं कूड़ के ढर स जनी-बुर्मी बोड़ी के टुकड़ बटोर लिए। किसी क फट-गुचन से तन डार लिया। जूटा मूटा बही कुछ मिल गया तो ठून लिया। नहीं तो राम का नाम नम, पट्टी बरिया तान सी।

बुड़ारे के भार न बिनिया की कमर मूच घाई। बास तन की तरह छफ हा गए। मुरझाए मुराड़े पर अनगिनत रेगाएं फिर गईं। घांसी

की जोत भी अब उतनी न रही। फिर भी तिन रात मिट्टी से सनी रहती। धरखा घाम साँझ-सकारे की कुछ भी परन्व न थी उसे। दो दुधमुहे, अनाथ घेबते खाव-खाव कर घर आते ही चिपट जाने। विरजू भाइ पोछ कर सब दिन में ही साफ किए रहता। सबके घर दिन में दो बार चूह जलत हैं। पर अभागी त्रिनिया अपनी रीती हठिया म क्या उवासे। उपरों की घाँघ म क्या सँके! चूहा तो रोज ही जलता लेकिन अधिक तर बेचल घुए का गुवार उमड़ कर रह जाता।

फूव झोल के मेले में इम दरम नोटकी घाई है। तिसन महाराज की लीना है। पाँच भर के छोट-बड़ सभी छोकरा म दिना स मूसां हो रही थी। अन्त म जब सब हाँ दसमी का तिन आया सब ही सब मत गए तो विरजू भी अपने को जाने से रोक न पाया। वह भी पीछे-पीछे चल पड़ा। सभी ने दो रूने आने दो आने के टिकट खरीने। ठाठ से अन्दर घुसे। पर विरजू के पास पैसे कहां! निकल कहां! फिर उसे अन्दर जाने भी कौन देता? अत द्वार पर ही झिडक कर परे घबेस दिया।

गैस-वर्तिया की रौगनी गाने-बजाने की आवाज बाहर भीतर की घमक दमक उसे बड़ी भली लगी। बहुत रात तक वह टिन की आदरो की आट स इधर उधर से छेन-मुराली स ताव भाँक करता रहा।

आधी रात गए बड़ी मुश्किल से घर लौटा। तिसन महाराज की मोला छोड़ने को मन न होता। लेकिन जब कोई जबरदस्ती घबेस कर स ही चला ती क्या करना।

रास्त में ही कभी वह एक पाँच पर खड़ा होकर बमुरिया बजाने का स्वांग भरता। कभी रास-सीला का। कभी कहीं पठ की लटकती जड़ दीवती उसी की दोनों हाथों स बस कर जकड़ सता और नाग-मर्दन की तरह देर तक इधर-उधर हवा में घुमाता रहता। फिर निनकठा उछलता झुड़ता। ग्वास-बासों की तरह चौकड़ी भरता। और फिर कभी गिटक

पड़ता । विरहिन गापिकाओं की तरह हाथ हवा में उछाल-उछाल कर छीने पर पत्कना और अनायास अकारण रो पड़ता ।

सोच ये करतब देख कर ठहाका मार कर हसते 'किस विरजू की क्या !

पर सोच कर मोया पर नीं कही ।

दूमरे तिन भोर उगते ही अम्मा से बोला— माई हम भी गया बछिया खराएगे । बनार्द महाराज बनेगे । यस एक अमुरिया सा द । सोल रोज मावन मिसरी ऐगी न !

किसकी गया खराएगा ? घर मा गूनी भी गड़ी है एर । सीमनी हूई बुद्धिया माई बोली— 'मावन मिसरी ही भाग मा होनी तो ये पुट्टा करम स क अग्निया मा जनमतो ही बाहे को ?

विरजू चुन बठने वाला कब था । सुबह उठने ही पट्टोसिन मनिया की गाय भस खोनन लगा तो हाथा-पाई तक की नौबत आ गई गापी गपीर स— निगोटे दाढ़ीदार अर हीन सील लिहो । अर ने पत्कारना शुरू किया ।

तब तिन भर अदरिया अर म अगनाए सार गांठ का अरकर बापता रहा । पर इस पागल के हवान अवन डोर डगर करना कीन । अरत में अमपाई क उग पार नखर पड़ी । दगा—बिसनुवां क दो वन अर रहे है । साठी निल् उअर अगुप भागा और उठे ही अगल हांक स अना ।

शाम को ठीक समय पर वाग भी सोच अया । बिसनुवां के अान मं उठे गहा अर बाता — बनार्द महाराज गहा है विगनवा ! दोषो मावन मिसरी !

बिसनुवां अ्राडिया से बाहर अया । दगा कि बस आज अया अर गरगत्र अर है । अररर स बोला— विरजूवा अान का अगल स अयागि र !

"विरजूवा अोपत्र है अवार ! तुनर अर विरजू बोना अराअर बनार्द बोत ! दोषो मावन मिसर ! महाराज जात है ।

बिसनुवा की वह किवाड़ के घोट सझी भाव रही थी। गुठ की इसी लाती हुई मुसकराकर बोली— ले धो लस्ला। गया चराय के मिलत है मासन मिसरी बल चराय के नही। भगहन मा परमेसर ने सुनी तो गया खरीयेगे तव मिलेगी महाराज को मासन मिसरी।

इतन पर ही विरजू सतुष्ट होकर चला गया। जब-तब यही उसका नेम-निषम हो चला। बिसनुवा के बल घणा कर हापी हो गए। एकाध बनी गुड बनाई-महाराज को भी मिलती रही। उसी पर वे मगन रहे। हाथ म निगाते की वासुरी माये पर मोर-पखना पीठ मे काली कमलिया लिए फिरत रहे।

इस साल खबर उठी कि हरिमपुरा म राम लीला होगी। सात-आठ दिन तक रहगी। खूब रौनक रंग धूम धाम मचगी। तब वह भी एक बसरिया मोर-पखना लिए जा घमका। चौधरी धाचा कुमेटी के परधान करता घरता घ। अत उनके पास जा बिनती के किसी हू तक शिका यत के मुर मे बोला— कमनिया हरीस को तो राम-लछिमन को पाठ दिहो और बनाई-महाराज की बीने खबर नहि।

चौधरी धाचा क्या करते। क्या कहते इस बावरे से। कुछ सोचते हुए टासन हुए बोले— राम-लीला मा तो राम लछिमन ही होत है बिसन-बनाई नही। जब महाराज की लीला होगी तो बनाई का पाठ तुम को ही लिया जायगा। जाओ मोर-पखना सम्हानिक घरो। वकस पर काम आवेगा।

विरजू की सहज बुद्धि ने सहज ही इस भी स्वीकार कर लिया। ठीक ही तो कहने हैं काना! राम लछिमन की लीला म महाराज का पाठ कहा से आवेगा।

सकिन फिर भी वह रोत्र बिना भागा लीला दखने जाता। सोठा हरन और दसरथ-भरन के तिन तो वह सब ही फूँ फूँ कर रोने लगा। भरत की भानू भक्ति पर उसकी घणाघ भास्या थी। किन्तु उसने भी

अधिक प्रभावित था—बजरग से। अयोध्या की अमक-दमक जनकपुरी का अमक विलास कुछ भी उसे अपनी ओर खींच न पाया। बस लम्बी छुवासे राम भक्त बन्दर का ही पुजारी बन बठा वह। लका दहन के दिन तो ओर भी बावला हो उठा। बजरग बली की ज ज जै !' कहता हुआ स्टज की तरफ आखें मूदे सपका तो दो धार स्वयं-सेवका ने रोव लिया। अनेको तरह से समभाया-बुभाया। नहीं ता न जाने क्या कर बठता !

दूसरे दिन से वह रोज बजरग—बधर ददा के घर जाकर बड़ी खट्टा से प्रणाम करता। बजरग की छाप उसके अन्धेप हृदय पर ऐसी पड़ी कि मोर-पसना धामुरिया बिसनुवां के बस सब भूत गया। अपने को ही होने वाली सीता का बजरग समझने लगा अब।

सो की टेढ़ी-भड़ी लकड़ी की लम्बी पूछ बना ली। मुगगर पर पटे पुराने खीबट लपेटकर हनुमान की गदा भी बन गई। दिन रात उहीं के साथ गृगार म लगा रहता। जो कोई भी मिलता उसी से कहता—'देई सात बजरग जल्दी ही लका जराय डारेंगे। सीता माई क हरन से पहल ही रावन राबस मारि डारेंगे।'

दिन भर फिर कर अन्त में सध्या को घर आता। धान ही खट्ट पूछता—'माई आत्र नू किसने रात मा काम करने गई? माई क मुग से वहीं भूम स गुमर पधान का नाम निबन पडता तो उसकी सारी देह फुक जाती। दांत पीम कर ओप से बांरत हुए बिन्ताना वह—'रावसनी है तू ! फिर रावन के गन मा जाहे गर् ? राम लछिमन के रात मा जाओ ! भिभीमन-गुगरीव महाराज के रात मा जाओ। जनक महाराज क सेठ मा जाओ। मुमा रावन क गन मा गई तो बजरग तोरी अण्डिया जराय डारेंगे ! कसर साडि डारेंगे ! वह आदेश में मुगगर धुमान सपना। सीता क बजरग की तरह हाथ-पांथ मचाना शुरू कर देना।

एक दिन न जाने क्या लहर आई। परेगान-मा गीषा मगीरख मुदरिख के घर जा पमका। लख सारी रात गोदा नहीं। आंगों न सात

बिसनुवां की बहू किवाड के धोट खड़ी मांक रही थी। गुठ की डली लाती हुई मुसकराकर बोली— से धो लल्ला ! गया चराय के मिलठ है माखन मिसरी बल चराय के नही। घगहन मा परमेसर ने सुनी तो गया खरीदेंगे तब मिलेगी महाराज का माखन मिसरी।

इतने पर ही विरजू मन्तुष्ट होकर चला गया। जब-तब यही उसका नेम नियम हो चला। बिसनुवां के बल अथा कर हाथी हो गए। एकाध ठली गुठ बनाई-महाराज को भी मिलती रही। उसी पर वे भगन रहे। हाथ म निगाले की वांसुरी माये पर मोर-पखना पीठ म कासी कमलिया लिए फिरत रहे।

इस साल खबर उठी कि हरिनपुरा में राम लीला होगी। सात-आठ दिन तक रहगी। खूब रौनक रंग धूम धाम मचगी। तब वह भी एक बसुरिया मोर-पखना लिए जा घमका। चौधरी चाचा कुमटो के परधान, करता घरता थ। अत उनके पास जा बिनती के किसी हूँ तक सिफा यत के सुर म बोला— कुमनिया हरीस को तो राम-सछिमन को पाठ दिहों और बनाई-महाराज को नीने खबर नहिं।

चौधरो चाचा क्या करते। क्या कहते इस बाधरे से। कुछ सोचते हुए टालत हुए बोले— राम-लीला मा तो राम सछिमन ही होत है बिसन-बनाई नहा। जब महाराज को लीला होगी तो बनाई का पाठ तुम को ही लिया जायगा। जाओ मोर-पखना सम्हारिक घरो। बकत पर काम आवेगा।

विरज की सहज बुद्धि ने सहज हो इसे भी स्वीकार कर लिया। ठीक ही तो कहत हैं काका। राम सछिमन की लीला म महाराज का पाठ वहां म आवेगा।

लकिन फिर भी वह रोज बिना नागा लीला देखने जाता। सीठा हरन और दसरथ-भरन के दिन तो वह सष ही फूँ-फूँ कर राने लगा। भरत की धातृ भक्ति पर उसकी अगाध आस्था थी। किन्तु उसने भी

अपि प्रभावित था—बजरग से। अयोध्या की चमक दमक जनकपुरी का बमब विलास कुछ भी उसे अपनी ओर खींच न पाया। बस लम्बी छ वाले राम भक्त बन्दर का ही पुजारी बन बठा वह। सका दहन के दिन छो ओर भी बाबला हो उठा। बजरग धली की ज ज ज !' कहता हुमा स्ट्र की तरफ भाँसें मूदे लपका तो दो चार स्वयं-भवको ने रोक लिया। अनेकों तरह से समझाया-बुझाया। नहीं ता न जाने क्या कर बठता !

दूसरे दिन स वह रोज बजरग—दबधर ददा के घर जाकर बड़ी धडा से प्रणाम करता। बजरग की छाप उसने अबोध हृदय पर ऐसी पड़ी कि मोर-वखना बामुरिमा बिसनुवा के बल सब भूल गया। अपने को ही होने वाली सीला का बजरग समझने लगा अब।

लोक की टट्टी-मेढी लकड़ी की सम्बी पूछ बना ली। मुग़र पर पड़े पुराने शीषड सपेकर हनुमान की गदा भी बन गई। दिन रात उही के छात्र शृंगार में लगा रहता। जो कोई भी मिलता उसी से कहना—'ये ई साल बजरग जल्दी ही सवा जराय डारेंगे। सीता माई क हरन ते पहले ही रावन राबन मारि डारेंगे ।

दिन भर फिर कर घात में सध्या को घर घाता। घात ही बद् पूछता—'माई छात्र तू किमके छेत मा काम करने गई? माई क मुख से बहीं भूल स मुमर पघान का नाम निबल पढता तो उमकी सारी देह फक जाही। दांत पीम कर त्रोध म कांते हुए बिन्नाता वह— राबसनी है तू। फिर रावन क मत्र मा काहे गई? राम सछिमन के छेत मा जाओ! मिभीसन-मुगरीब महाराज के छेत मा जाओ। जनक महाराज के छेत मा जाओ। मुना रावन क छेत मा गई ता बजरग सोरा मपडिया जराय डारेंगे! कपर ताडि डारेंगे! वह आवेश में मुग़र धुमाने सयता। सीता क बजरग की तरह हाथ-पांख नवाना गुरू कर देता।

एक दिन न जाने क्या सहर बड़ी। परेशान-मा सीषा भगीरथ दुर्वासि के घर जा चमका। दाव मागी रात सोया नहीं। धाँसों में सान

डोर साफ भनक रहे थे। लीला के हनुमान की तरह राम को दण्डवत प्रणाम किया। धुनों ने बस खडा दोनों हाथ जोड़ता हुआ फिर बोला—
महाराज बात ठीक बताओ ! वजरग न लवा जराई ! महाराज अपने हाथों रावन मारि हो ! पर रावन तो हम रोज ही देखत हैं महाराज !

कहा ? सहज विस्मय से भगीरथ ने पूछा।

निमजला मा बठि क तिजारत करत है ! विरजू उसी रफ्तार से बोला गाव को पघान बनत है। भावत वार बुसावत रहा। तमाखू सामो विरजुमा बोनत रहा। हम खुद ने धुनवार देहन— हम विरजुमा नहीं वजरग है। हम महाराज के घर जात हैं। रावन तू देखत का है ! तीरो लकापुरी भव के हम जराय डारेंगे।

हि स स ! जीभ काटते हुए भगीरथ बोले यह क्या ? मुझे पघान का घर जलाने को कहता है ! वहीं मुन लिया तो खान उधेड़ देंगे तरो। जानता नहीं महाजन है। दो गाँव के पघान ! सब विरजू, तू बीरा गया है रे !

सान की तरह फुककारना विरजू बोला— कहत का हो ! महाराज हो कर डरत हो ! तुम राज-पाठ करो। हम जराय डारेंगे सका सारी !

बुप-बुप कहते हुए भगीरथ बुप कराने लग। सेविन दूसरी घोर धाग पर धी छू रहा था— सीला म तो धनुष स के रावन मारत हो ! यहाँ बुप-बुप करत हो ! महाराज होकर का तुम भी डरत हो ?

‘लीला तो सीला है विरजू ! ऐसी बातें नहीं बकने। मेरी मुदरिसी खनरे म पड जाएगी। तेरा क्या है ! तू तो रोज का फिरवा है ! मैं बाल-बच्च याता !

विरजू अबस पढा— ‘तो हम बताओ ! —भूठ-भूठ सीला गह देत हा ! पण्डत हो क भूगी सीमा रषत हो ! पाखण्ड करत हो ! !

भगीरथ क्या बहें। क्या कह क सममाए-जुमारै। सीला तो सीमा है। उसकी बात घोर है विरजू ! यह तो घर की बात है। खिसि

माने स्वर म योने ।

'अयन् बोलत हो । डरत हो राक्षस से ! भूट सीना रचत हो ! निगोडा ! रावन मरिक्के उठन है । जिन्ना होई जात है । तिमजना मा बठि तिजारन भरत है । डोर गवई-गवार गमम के हमको टगत हो । घोमा देत हो । भूटे राम वनत हो । पहन अब रावन की लका नहीं भूटे राम—तारी अजुघ्या जराय डारंगे । फूट डारंगे दुनिया सारी । आण्डाल टगत हो हम ।

आवण म बहु मुगार नचाता हुमा राज की तरह भपण । लोगों ने किराी तरह बीच-बचाव किया और उमसे पत्ना छडवाया ।

हारे निपाही की तरह हुना निराग बिरजू घर सोण । त्रौष से उगवा पायलपन आज घरम सीमा पर था । मुगरी उमी ममय उसने प्राण में भ्रोक दी । पूछ सोड मरोडकर फेंक डाली और चौकल पर हाथ-पांव पगारे धनुष सेट गया ।

साभ क समय भी खुनी । जागा । अपनी फनी चरिया मनेवर पर पहुना । उदास बोना— मार इस गांव मा हमारी गुजर नहीं । सब मूठ दाड़ीजार बसत है हिया । हम जान हैं ।

उसर की प्रतीक्षा किए बिना ही बिरजू बाहर निकल पडा । कपे में चरिया हाथ में सडुटिया लिए उम धपियारे मं न मालूम कहां शो गया ! झूठी मारि चीसनी-चिन्माती रोनी रही । पर बिरजू सोण कर न पाया ।

महीने बीत गए । बिरजू का कोई पता-पानी न मिला । कोई हलिनुरा की तरफ तो कोई दबागर की तरफ बगाना । कोई कहता बिरजू घर पूरा पगना हा गया । कोई कहता—बिरजू ने बराग म लिया । बिनिना आबस म गिर गडाए पू-पूवर धरने पू करम को रोनी रहती ।

मान मनोनी फिर शुरू की । हुरती के पान में और ओर से परिपार

पहुंची। लेकिन कहीं कोई आसार भलकते न थे।

संध्या के समय एक दिन दरवाजे पर आवाज सुनाई दी—“माई !

हड़बड़ाती हुई वह द्वार की ओर सपकी— कौन बिं र जू ! दरवाजा खोलकर देखा—दुबल हड्डियों का ढांघा खड़ा है। हाथ में लाठी एक फटा धोखटा कमर में सपेटे। दूसरा कंध में। बनावटी ऊन की बकरे की सी दाढ़ी है। आँखों पर गोल-गोल छाले-स पड़ हैं—घरमें की तरह।

कौ—न ! हमार बिरजुवा है रे तू ! धुधली आँखों को बुढ़िया ने फिर मला।

बिरजुवा हिरजुवा हम नाहि जानत है माई ! हम तो दाढ़ी बाबा हैं। जमीन मागत हैं दान मा। घसा-टका मागत हैं ! देघो जमीन ! गाधी महाराज को हुकुम है !

‘बिरजू बिरजू ! मा लिपट पड़ी। इत रोज को सब धायो ! का सब ही बीराय गयो बिरजू ! रोट रोट हम धाधा होइ गइन ! सब घर मा बठो। खोनी मिनिया करके हम खवाबहि बिं र जू !

बिरजू धैमा ही खबा। जैसे कुछ भी सुना समझा न हो। धैसे ही बहके स्वर में बोला— बिरजुवा बिरजुवा नहीं ! देघो माई कुछ तो जमीन देघो !

बिरजू जे का कहत है ! हठांग बुढ़िया ने कहा जर-जमीन हमदे लग कौन धरी है ! दूसरा के खेत मा काम करत हैं। बठो बिरजुवा। हाठ दीलत हैं। बीमार भो है का ?

कुछ भी बोल न पाया वह। दर तक खड़ा रहा। फिर मुहत्ता हुभा भीगी आवाज में बहते लगा— मुलक मुलक मा जाना है माई ! हमदे लगे कहा कौन ठौर धरी है !

गाव-गाव घर घर यही सब उसका नियम हो धला। सुना या हरिनपुरा में एक बार जमीन मांगने के लिए एक बाबा आए थे। उनकी

बातों का बस ऐसा रग पड़ा कि उस तिन से उठों का चेसा बन बैठा ।
बैसी ही दाढ़ी यसा ही रूप रग बनाकर भटबता रहता—घर घर, द्वार
द्वार दीन-दुखियों का मसीहा बनकर प्रसन्न जगता ।

एक सन्धे घर्मों तक बिरजू की फिर कोई खबर न लगी । याद में
पता चला कि वह दबागर में बीमार पड़ा है । जमीन मांगने के सिस
सिसे में भगड़ा हो गया । किसी पुराने जमींदार के सूतार मुहलगे सटलों
में उस निहत्ते पर लाठी मार दी । गिवाले में वह पपमरा पड़ा है । कोई
पानी के लिए भी पूछने वाला नहीं ।

अमागिन बुद्धिमा क्या करे ! सारे पड़ोसियों की दहरी-देहरी जाकर
अपना दुगडा रोई । किसी तरह गांव की अनामी या सोर-भान के दर
से रमियां के बबबा, सिम्पन के माना पनिया के साऊ और पण्डत
अबीराम के भानजे माघेराम तयार हुए । रातों रात दबागर पहुंच ।
देसा—बिरजू अचेत पड़ा है । कपडे छार-छार पटे हैं । जगह जगह रिमते
पाव हैं । घोर सूण हैं । बान बिगरे । रह रहकर कराहने की आवाज आ
रही है—“दे घो जमीन दे घो । गांधी महाराज को । बाबा
को जमीन दे घो । ज भी न ।

ढांडी पर सांवर बिनियो घर साईं । तिन रात टहन-टुकड़े में लगी
रही । नाया हाथ टूट गया था । सारा शरीर जम्मी था । हर रग
अमकता-दुगता रहता । बिननी अमी-बुगी भाइ पूर की पर दम से भी
न हुई ।

मुनिप धीरे एक तिन अर्ध भूत रहे थ । अमी तक इनती रात गर
नामी लीगी न थी ।

मामा अर्ध बदाड हो ? भूत से कृपमुमामी मुनिप में कहा ।

पर वह बिरजू देगता रहा । दगता रहा । येने किसी दूधपी मुनिपों
में दूबा हो । कृप मोबता हुआ फिर बोला—“नाहि अर्ध नाहि । अर्ध
भूत सब हिदा अगीर के मामो ।

सुनियाने ने अपनी नहीं हुयेली से समेट कर सब सामने रख दिया । उसमे से मुवा बिरजू ने बटोर लिए । सुतली में गूथ कर दाढी बना भी । फिर कराहता हुआ, घसे ही अमबर बोया— सुनो सुनो ! बाबा भाखत हैं । सुनो !

फली गुन्धिया के ऊपर अपना दुबला तन रखा । किसी तरह पाल्थी मार सी । बदरिया का फटा टुकड़ा बादा की तरह कंधे में लपेट लिया । खोखला अन्ना दिनों पहले मार-पीट में न आने कहा बना गया था । तैर तक सोचता रहा । विधान न बना । अन्त में हार मान सी । घसे ही बोलना गुरू क्रिया । दोनों वर्षों का निवृत्त ला, हाथ जुटा के बिठला दिया ।

‘ मुसक मुसक मा गरीबी है । भ्रमपरो है । जमीन जगरे लगे ज्यादा है, दूसरे गरीबन को लियो । जर-जमीन सब परमेसर की है । हवा-पानी परमेसर की है । बाबा अपने ताई नाहिं भाखत हैं । हाथ जोरि पाँव परि के कहत हैं । दे ओ जमीन घना-टवा द ओ ।

दानों बच्चे अवाक हाथ जोड़े बठ थे । सब देख मुन रहे थ । पर समझ में कुछ धा न पाता । पिताई क डर से दस साध बठ थ—हसी रोके । इतने में खसिहान से नानी लोट भाई । दरवाजे पर लड़ी की लड़ी देखती रह गई ।

‘ सुनत नहिं बड़की भाई ! भ खत हैं । हाथ जोरि क बँठो । धीरू ने धीरे से सुनक कर कहा । बुद्धिया भी ठगी-ठगी सी सब ही हाथ जोड़कर बँठ गई ।

‘ मुसक मुसक मा बबर फाटि के भावत हैं । जमी रफार से बिरजू कहता रहा — दे ओ ! नहीं तो सडाई होई ! मारा मारि होई ! बाबा जुगत दस के कहत हैं । दिनके लगे जौन है दे ओ । बाबा की भोपी अरि तैओ ! पाँच पूत लोहने हैं । छत्र एक हमहि मान सिहो । हमार हिस्सा हमें दओ । दे ओ भा ! बोल-बोल रे छोरे तू का देत है ! छोरी तू का देत है ! भाई ! बोल रि भाई तू का

देत है। बाबा जात हैं। 'जा स है

विरजू की भावाज लड़खड़ा आई। स्वर टूट गया। अपनी टूटी हथेली अपने प्राण पमार दी और अचेत होकर गिर पड़ा।

विरजू विरजू ! ' बुढ़िया माई उसकी ओर लपकी— का होई गया विरजू ! जे का बहात है ! गला भर धाया बुढ़िया का— 'हमरे लग पांच पून नहिं। एको तू ही है। तू ही ! सब तोर है। ये हि गुढ़ी कमबल जौन चाहत है स जाधा। सब स जाधो विरजू ! सब स व !

पर विरजू ने न सुना। न दया। सदा के रीत हाथ इस बार भी रीत थ। बुढ़िया मुक्क-मुक्क कर रोती रही। बार-बार उस टूटी हथेली को उलट-अलट कर देगती रही। चूमती रही।

नाहिं नाहिं विरजू नाहिं ! उसन ओस स भीगी गानी मागी मुटटी भर जमीन से उदाई। उस रोती टटी हथेली में रज दी और माया तिका तिया। विरजू !'

पर दूसरी ओर से कोई भावाज न आई।

आदमी जमाने का



पूरे तीस वष की सरकारी नौकरी के बाद मरवाती तौर पर बकार धारित होकर यानी कि सन्यास-ब्राह्मण में प्रविष्ट होकर बाल बच्चों की छोटी बटानियन के साथ गाव लौटा तो घुघू बाबू के दान सबने पहने हुए । उहान पहले ही पत्र भेज कर सूचित कर लिया था श्रुति में उनका पुराना बिगरी दोस्त हू परदेग से घर लौट रहा हू और उनकी दान-सेवा के बारे भले हर काम म हर तरह का सहूलिल म साथ देने का वाग कर चुका हू—घर व मरे स्वागत में खट रहेंगे । यही हुआ भी । प्रारम्भिक पाठशाला के आठ-दस बच्चों के लिए भागे म कोई फटा पुराना झण्डा सजाए बस के बरह पर बठ थ । छोटे-मोठे हाथ हुआ म उछाजते हुए फटे बांस की तरह गला पाहने हुए—मिमिरा जी जिगवाग ना गणमदी नारा सगाते हुए उन्हें देखा तो हैरान रह गया ।

हृदय गद्गद् हो उठा । पलकें मीली हो गई । बसकर उन्होंने मुझे अपने सीन मे लगा लिया । मेर दोनों घुटनों को अपने सीने म बसकर बढा दे—जस बच्चा भयस रहा हो । सम्भवत इसम ऊपर व पहच भी

तो नहा सकत था ।

मैं कोई राजनेता नहीं विनाश क्षात्र-वेत्ता नहीं वनस्पति विज्ञान का एक साधारण-सा गरीब श्रम्यापक । फिर पुष्पू बाबू की यह दरिमा दिली नहीं तो घोर क्या थी ।

सम्ब सफर की सम्बो यवान के कारण सम्बा लंटा था । कुछ बटूत प्रहरी कामा म मन उलभा था । तभी गांव गिराम के घाठ-दस भस' घादमी उह घेर कर आ खडे हुए ।

मन मार कर उठना पडा । थोमतीजी से पाय बनान को कहा । गरम पाय स जली जीम का नोक तिसियाकर इधर उधर सरकान हुए सब सज्जना की घब तक भिषी सामू पर चिपकी जुवान घब घाटोमन्त्रि' पत्ती की सगह घसने सगी—

—पुष्पू बाबू के परमान इसका घमक उठा भित्तिरा जी । गधरे का पानी रक्खा कर सरम-दान स सागर बना जाता । पूरा पिचास हाप सम्बा यही कोई म्यालीस हाप खोटा—ससाऊ समन्दर है ! समन्दर ! भैस भी डूब जाती है । ऊधमी शष्वा को उधर जान को मनाही है । बसे घोरस जात भी उधर जान से डरती है । पुन घटने तक जाकर ही सोट घाता है ।

—क्या रतन पाठगासा भी इही का बनीलत है ! इहीं की ! एक न उगती गड़ी कर कहा— नहा सा सरकार भसा कहा पूछ ! अफसर हाकम ग सद भगदकर राता रात दमारत गहा कर दी । पर मुई दीवार बरमात ग पहन ही सोट गर् । भगवान का मुकर समझो । अगर जा कही भगपूर घरसात म गिरती तो राम जान क्या होना । गांव म एक भी बरषा बात्र क निण नहा बचता । बयस हररामका की एक घाल सिन न्पा सटकी को खोट घा'—बयस टांग टूटी । उग सोग उगा समय ह्यपत्राम म लण । पुष्पू बाबू कहां ता जा न पाण सविन अभाजन अपने सोट करम क कारण अब कधी नहीं मर ल' तो अपने कंध पर उठाकर सभग घा' सगबर गहन ही मगान तक उग पहुचाया । अपने हापों

आदमी जमाने का



पूरे तीस बर की सरकारी नौकरी के बाद सरकारी तौर पर बनारस-स्थापित होकर यानी कि सन्यास-आश्रम में प्रविष्ट होकर बाल बच्चों की छोटी बटालियन के साथ गाँव लौटा तो घुग्घु बाबू के दशम सबसे पहले हुए। उन्होंने पहले ही पत्र भेज कर सूचित कर लिया था कि मैं उनका पुराना डिगरी दोस्त हूँ परदेस से घर लौट रहा हूँ और उनकी दश-सवा के बुरे भले हर काम में हर तरह का सहदिल में साथ देने का वादा कर चुका हूँ—अतः वे मेरे स्वागत में खड़े रहेंगे। यही हुआ भी। प्रारम्भिक पाठशाला के छात्र-समूह बच्चों को लिए जागे थे कोई पत्र-पुराना झण्डा लटवाए बग के झण्ड पर बठे थे। छोट-मोटे हाथ हुआ में उछालते हुए फट बांस की तरह गला फाड़ने हुए—मिसिरी जी जिन्नाबाद का गगनभेदी नारा लगते हुए उन्हें देखा तो हैरान रह गया।

हृदय गद्गद हो उठा। पलकें मीली हो आई। कमर उन्होंने मुझे अपने सीने में लगा दिया। मर दोनों घुटनों को अपने सीने में कमर जकड़े थे—तैसे बच्चा मकस रखा हो। सम्भवतः इसमें ऊपर व पहलू भी

तो मही सबत थे ।

मैं कोई राजनेता नहीं बिनाल शास्त्र-वेत्ता नहीं, वनस्पति विज्ञान का एक साधारण-सा गरीब अध्यापक । फिर घुग्घू बाबू की यह दरिया दिसी नहीं तो घौर क्या थी ।

सम्ब नफर की सम्बी यकान के कारण लम्बा लेटा था । कुछ बहुत जकरी बामा म मन उलभा था । तमी गाव गिराम के घाठ-दम 'भले' भादमी उन्हें घर कर भा खड़े हुए ।

भन मार कर उठना पडा । आमतीजी स चाय बनाने को कहा । गरम चाय मे जलो जीम की नाक लिसियाकर इधर-उधर सरकान हुए सब सग्नना की अब तक भिधी तालू पर चिपकी जुवान भव भानोमन्कि बरों की तरह चलने लगी—

—घुग्घू बाबू के परसा इलाका घमक उठा भितिरा जा । गधेरे का पानी दक्का कर सरम-दान स सागर बना डाला । पूरा पिचास हाय लम्बा महा कोई ब्यालीस हाय चौटा—तसाऊ समन्दर है ! समन्दर ! भैत भी डूब जाती है । ऊपमी बग्वा को उधर जान की मनाही है । धसे झोग्त जात भा उधर जान स डरती है । घुग्घूने घन्न ठक जाकर हा सोट घाना है ।

—बया रतन पाठगाला भी इही की बनीयत ह ! इन्हीं की ! एक ने गमी गटा कर कहा— नहीं सा सरकार भला कहा पूछ ! भफसर हाकम म सट नगडकर राठा राठ इमारत सड़ी कर दा । पर मुई दीवार बरमात म पहन ही सोट गद । भगवान का मुकर समभो । घगर जा कहा भग्पूर बरसात म गिरती ता राम जाने क्या होता । गांव म एक भी बग्वा धीत्र क तिए नहा बघटा । बवल हररामका की एक घान छिन न्धी लड़की को घाट भाई—बवल टाग टूनी । उस माग उमा समय हापठाम स गए । घुग्घू बाबू वहां तो जा न पाण, लकिन अमागन घपने गां करम के बारन जब बधी नहीं, मर गई ता अपने बघे पर उगकर सभग घान सगकर इहान ही मवान तक उस पदुवाया । अपने हाथों

भाग दी। अपनी कोख की कन्या की तरह जसाया।

—जो कोई गांव में बीमार होता है वद के साथ-साथ ब्राह्मण भी बुला लाते हैं—धुंगू बाबू! साढ़े तीन हाथ कपड़ा हर बड़ी घर पर धरा रहता है। कौन जाने वद जख्मरत था टपके। भाखिर दाने ममाने हैं न!

—भखवार-कागज वाल कहते हैं कि सरम-दान से सवा तीन मील लम्बी सड़क देग में पहने-पहल इहनि ही बनवाई थी—मिसिरा जी! आप तो दो मोल वाल हैं। देखते होंगे। कहते हैं उससे छदा होकर सरकार-धरदार ने इलाके की भलाई के लिए हजारों रुपए की मन्दी दी। उससे धुंगू बाबू ने या लम्बा चौड़ा बगीचा नौ पानी का डिग्गया (परघर की छत से छही—घारा और से बन्द पक्की बावडिया) और एक गांधी पचायत घर का निरमान किया।

धुंगू बाबू के बार में जब तब कुछ सुनता रहता था लेकिन रचनात्मक कार्य में विनोबा जी की तरह इतनी गहरी पठ होगी इसका अनुमान न था। पाठशाला की इमारत गिर गई।—इसमें उन बेचारा का क्या दोष! साधना की बम्बी होगी! बड-बड हाथी-छाप बाघ बनाने की उनकी क्या वो! इतना भी किया तो कम है! दोर इगारा को तो पानी मिल ही जाता होगा! बगीचा। पचायत घर। मन ही मन एक गरीब अध्यापक ने धुंगू बाबू जैसे परोपकारी पुरुष को प्रणाम किया।

एक के बाद एक पंच वर्षीय योजना के धाकड़ों की कागजी घुड़ दौड़ की तरह बातों का सिलसिला भी चलता रहा। सबक कहने का तात्पर्य यही था कि—चूंकि अब मैं बाहर की विज्ञ-शाघामों से बच कर परमसर और रत्न की कृपा से सकुशल सुरक्षित घर लौटा हू इसलिए मुझे उनके काम में सहयोग देकर मन का भागी बनना चाहिए। यह मरा सोमाग्य है कि मैं उनका बचपन का मित्र और अब पड़ोसी हू।

बातों के इसी क्रम में आगे मालूम हुआ कि बल जो इलाके के महा माय डिप्टी कमिश्नर—नी जमील साह्य दोरे पर पधारने वाल हैं उन्होंने काय कम में बगीचा पचायत घर आदि का निरीक्षण भी रखा

है। जमीन साहब चूक मेरे पुराने सहपाठी हैं। अभी तक व मुझे भूसे नहीं है—घन व हर घड़ी मुझे अपने साथ रखेंगे। इसलिए भरा बतव्य है कि घग्गू बाबू का गहायता कर गाव की तरक्की की दो बातें उनके बानों तक भी पहुंचाऊ।

मुझ क्या आपत्ति !

व वन गए ता मैं श्रीमती जी से बोला कि उनके सामन बठ इस ठूठ बिजारी-बीठ ग तो घग्गू बाबू हजार भल हैं। इसका रोगन कर लिया। अपना नाम रोगन कर दिया। क्या है ! भगना पट ठा हर कोई भरता है !

गांभू व समय हम इही बातों म तल्लीन थ कि मेरा—घग्गू बाबू घवरान हूण बतहाजा भाग घा रह हैं। दुम-बन्त सरगोग की तरह। जमीन पर पसिन्ता हुआ पात्रामा सेकर सम्ब बाना पर सक्की टोपी सभाल कर।

मिगिरो जी मैं घान हा व पाग घाया हू। अपनी पुरानी घादत के घनुगाव नाक से बोवत हुए उहाने कहा। यो ही घार-छ वार दो घगुनियों व बीच नाक की नाक भूके रा दबाकर धार-धार साफ की सीं ! सीं ! कर। फिर मेरा मुह ताबते रह।

साकबर मैं स्वागत के लिए घाग बढ़ा तो—'नहीं ! नहीं ! हम गोबर व कीर्दा व लिए इसा-मी जगह बहुत है—मिगिरो जी !' नाक पर घहारण दो-तीन बार फिर हाय फरा घौर पाल्पी मार कर पग पर ही गड गू का तरह जम गए। मरे बराह मना करने पर भी माने नहीं।

उराने मुझे सूचित किया कि मैं उनका गहरा दोगत हू। व मुझे 'घरना गममन है। इगी कारण मुझे कुछ निवू बातें करना चाहते हैं। घन बच्चा का बाहर भेज दिया जाय।

दिगी तरह नगण बच्चों का बाहर पचना ठा उहाने इपर उपर देखा—श्रीमती जी की घौर ठिरठे घगूठ से इसारा दिया। व भी बाहर

बली गई। फिर दरवाजे बन्द करने का आदेश हुआ, वह भी पूरा किया। अन्त में बोले—कुण्डा मजबूती से बड़ा दिया जाय और सालटेन बुझा दी जाय। क्योंकि उनके स्वर्गीय दादा जी कहा करते थे कि दीवार के भी कान होते हैं और बम्बस्त दरवाजे भी देखा करते हैं।

वह भी यत्र की तरह हुआ तो हूबन हुआ कि अब मैं बठ जाऊँ।

कुर्सी पर मैं बठ गया। उन्होंने धपरे में मेरे पांव टटोले। जिन्हें मैंने पीछे हटा लिया। पास ही कुर्सी के नीचे पांवा के पास मेरे बरसाती साम्ने गम-बूट पड़े थे। वे धापे से बाहर थे। उन्हीं पर माथा टिकाए, अघोर होकर फूट पड़े।

बोले—मैं उनका एकमात्र मित्र हूँ। वे गले गले तक डूब गए हैं। मेरा परम धर्म है कि मैं उन्हें तिनके का सहारा दूँ। सुदामा श्रीकृष्ण के दरबार में बिना मुट्ठी भर चावल लिए रीत हाथ आया है। आज प्राणों की भीख मांग रहा है।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। हजार बार मेरे पूछने पर भी वे कुछ बतताने को राजी न थे। केवल बरबस धांधू दुलकाए जा रहे थे।

मैं सठकर उन्हें पग पर स उठाने लगा कि उन्होंने कसकर मेरे दोनों पांव जमूरे की तरह जकड़ लिए। रथ बण्ठ से बोले कि मैं बचन दूँ कि मैं उनकी बात मानूंगा और किसी से कुछ बहूंगा नहीं।

गोपनीयता के लिए मुझ से मेरे दुधमुद्दे बच्चों की दग्गा घम-पत्नी की दिवंगत पूज्य पिताजी की और मेरे अनेकों इष्ट मित्रों की जिनसे उनका कोई लेन-देन न था बार-बार कसम दिलाकर उन्होंने कहना प्रारम्भ किया—

जमील साहब आपके दोस्त हैं न ?

जी हाँ।

'तो कत वे हमारे घाम-समा के सहकारी-बगीचे में आएंगे न ?

दौने खिर हिलाया।

तो धानको वे धरने साथ रखेंगे न ?

शायद ।

तो घाप चुप रहियेगा । बाकी हम देख लेंगे ।

क्या ? क्या ? घनायाप मैंने उनकी घोर देखा ।

बस घाप चुप रहिए । अधिक पूछें तो गांव की तरकीबी के दो शक रहिए । नहीं तो हाठ सिध बठे रहिए । बस, बाकी हम खुद देख लेंगे ।

पुग्गु बाबू !' परेशान होकर मैंने कहा— अपना दिमाग बोग है । बात समझा नहीं ।—घातिर घाप क्या देव लने को कहते हैं ! बात क्या है !

बात भी कुछ हुआ करती है मिस्त्रियों जी ! घाप भी निरे नादा है !' उन्होंने मुझ नासमझ की घोर देखा । कुछ ठहर कर तनिक दूबरे स्वर में बोले—'क्या कहू ! किसमें कहू !—इन दो-याए मूरख मुर्गा का हास । एक हाथ से उन्होंने अपना बन्दर का हा दो घगुल चौड़ा माया धामा— बस ये मेरे प्राणों पर उतर आए हैं मिस्त्रियों जी ! मरी सात रीचने को घामादा है । इन्होंने मेरी सवाही रख दी है । वहीं का भी नहीं ग्य छोड़ा । बतलाइए । चुप क्यों है ! घाप ही बतलाइए न ! मैं क्या बन्द ! कहो तो जहर साकर बूच कर दू ।

मैं हैरत में उनकी घोर दगता रहा । भना मैं कैसे कहन मगा कि वे जहर साकर बूच कर जाय या न करें ! घातिर क्या हो पड़ा ऐसा ! मैंने जिज्ञासा से फिर प्रश्न किया ।

बात भी कुछ हुआ करती है मिस्त्रियों जी ! मुन्माबर उन्होंने यही पुराना भरत-बाक्य सिध दुहराया इन बार— घाप दस तो रहे है ! बितनी मुषीबत में हू ! फिर मुझमें पूछ कर जानबूझ कर मरी दोना घागों में घगुलियां बास रट है ।

मझे कुछ कहते न बना । उनकी घोर मैं ताकता रहा ।

प धीरे-से बुकबाए हाथ नषाकर । अपना दीप-बासीन सम्भापण काश व समाधान में उन्होंने प्रस्तुत किया । त्रिनका सतिष्ठत सार यह

है कि उन्होंने सहकारी फलोद्यान के लिए अपनी जमीन दी। अपना सबसब सुटाया लेकिन गाँव वालों ने सब स्वाह कर डाला। उनके विरुद्ध सबने लक्ष्यत्र रचा—अकेला समझ कर। और उनका मेरे अभावाभाव कोई भी नहीं है।

कितने पेड लगवाए थे ?

यह भी कोई पूछने की बात है मिमिरों जी ! नाग-पंचमी के दिन परमेश्वर का नाम लेकर पहले सवा इक्कीस पेड लगाए—लेकिन मरी अगोत्र रात्रिवा वन मुए रावणा ने चौपट कर दी। यह दिया—मरी गया ने लाए थे। मैंने उखेड कर किसी घोर को बेच दिए थे।—वे क्या जानें ! आगे फिर कमे साहस करता ! फलो के पौधा को जो मुचवाने म भगवान भी क्या कहते ! इसलिए चप रहा ।

उन्होंने आगे बतलाया कि उनकी जगह म होता तो क्या करता ! साक्ष दुटा के बीच अकला मला आदमी कर ही क्या सकता है !

तो अब क्या होगा ? आपने ता कहा था—पाच सौ पेड लग गए हैं ! मरे मोठ खुन आए।

उन्होंने सोचत हुए कहा कि वे इसीलिए तो मर पास आए हैं। अगर मैं कहूँ तो वे फला की तीन चार सौ टहनियाँ तुडवालें और जमीन पर गाड दें। यह काम तो आसानी से निकल सकता है लेकिन परसानी समुरी कुछ और है।

सो क्या ?

मने अनेक बार पूछने पर उन्होंने बतलाया कि पानी की डिगियों में पानी नहीं घाता।

'तो बनाई क्या थी ?

उन्होंने बतलाया कि प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए। एक बार पानी के सम्बन्ध म गाँव वाला से भगइते समय उन्होंने कहा था कि यदि गाँव म नो डिगियाँ न रखी कर दें तो अपने धाप की ओलाद नहीं। सो अपने धाप की ओलाद बनने के लिए। आगे घान पगर मैं कहूँ तो वे उनमें

रात को ही बालियों में पानी भरवा लेंगे। गांधी पचासत पर से अपने बच्चा को समी उठा लेंगे। भस प्रागन में बधी रहने देंगे। यदि मैं बहूँ तो वे चाहें से कह देंगे कि आम ममा भी सहकारी भग है। गरीब बच्चों को मुफ्त दूध यत्ता है।

वे बहन रहे लकिन मरे मन में नाना प्रकार के नाग सोचन रह। मैंने रात उठाई— गुना व गुण इस्तेफान करेंगे। टर्ही यो पहचाना गइ तो।

नहीं नहीं। उन्होंने भक्त में गिर दिलाया— 'माह्य वन मुबह के बजाय रात को ही सारीय लाएंग। व सब ठीक कर सेंगे। उन्होंने पानी के पारड नही बेन हैं।

यह गनहर मग मन बाँध घाया। इस सबके लिए मैं तयार न था।

यह गोरन घाया अपने वग का नही घणू बाबू। अपने सोने पर पत्थर पर कर सिंगी तरह कहा— बछा है भाव कमिन्तर साहब के सामन अपना अराध मान सें। बाकी पूरे में निन्वाण दूगा घोर।

'पाराध' फफकार कर उन्होंने नेया। मेरा प्रयोग वास्य बाध में ही बात जाना— व घात बना कह रहे हैं मिगिरा जी। अपनी एगक भर को छाती उन्होंने ठारी— घातका भजा सिग गया है। मुझ जग आदर्मी ग लेगा बट कर भगष न की मूरत व मूत पर घातन मोहर जान जाना है। उनका स्वर भर घाया।

मैं खुद था। व पारत ब न कर गिर पाया पर निन्वाण पर। बाव— इस अराध में कहा मिगिरा जी। यह ता भन है। गती है। फिर घात छोड़िए— मैंने देण के लिए कितना कृप नहीं किया। फिर पचासत पर मैंने गिर निन्वा निन्वा मो कौन-गा अराध किया। पचासता भग का भी पूरे दूध बना एगन पर स्वर्षा व मन भा जाय गया तो कौन-गा अराध हुआ। जाना न पानी कर सी। पर भर सिग। मैंने दो नून नान का मामन नु। मिगारो कौन गा अराध कर जाना।

लेकिन धुग्धू वायू भरा मन इस सब के लिए तयार नहीं। ' कहकर मैं दरवाजे की ओर लपका। वे बाज़ की तरह मेरी ओर झपटे। पर उससे पहले ही मैं किवाड़ खोलकर निकल गया।

सुना कुछ दूर तक वे मौचनके भाँखें फाड़े देखते रहे। फिर बढ़बढ़ाते हुए गाली देते हुए चले गए। सुना अपने भागन की झुठर पर लड़े हाथ हिला हिला कर कहते थे—मैंने देश में रण्डियों का ब्यापार किया। उन्होंने अपनी भाँखों से देखा। मैं दुर्गाचारी हूँ। दगाबाज हूँ। उधक्का हूँ। भव गाँव में क्या आया गाँव तबाह हो गया!

मैंने सुनी की मनसुनी कर दी।

रात को बिछौने पर लेटा ही था कि देखता हूँ—दरवाज़ पर दरज़न भर बच्चों के साथ एक महिला खड़ी है—बढ़ रही हैं—कि वे मेरी भाभी हैं। मुझे वे अपने बड़ भाई से ज्यादा समझती हैं। लेकिन मैं उनकी भाग का सिन्दूर पोंछन पर तुला हूँ। यदि वे विधवा हो गईं और मेरे बड़ भाई साहब गुजर गए तो मुझ ही उनके घर का भार उठाना होगा। चार जवान बच्चाएँ दहरी पर बठी हैं—दहेज दामाद सब मेरे मत्ते।

मैं अपने माँ-बाप का इकलौता हूँ। मेरे कोई छोटे-बड़ भाई नहीं। इस चिरन्तन सत्य के बाद भी मुझे कहना पड़ा कि अपने बड़ भाई साहब से मुझे पूरी हमदर्दी है। और मैं अपनी भाभी का सिन्दूर पोंछना नहीं चाहता।

मेरे इन बचन के बावजूद भी मेरी भाभी कहती रही कि अपने बड़े भाई साहब पर मैंने न जान कौन-ना टोना चला दिया है। न जान क्या खिता दिया है। जब से वे मर गए हैं आपसे बाहर हैं। पागलों का उस हाल कर रहे हैं। जहर की शानी बगल में दबाएँ जंगल की ओर भाग रहे हैं। वह तो लोग न समय पर पकड़ लिया। नहीं तो परमेसर उन क्या हाल होता!

मेरी भाभी रोने लगी। मर दरज़न भर भतीज़ भतीज़ियाँ उनके सुद

में मुर मिलाकर रोने लग ! मरे हो ग हिरन हो गए । घर भर के लोग जग पड़े । श्रीमती जो अपने कमल पर दुहती मार कर बरस पड़ी कि मैं कितना हृदयहीन हूँ ! कारण इन गरीब बच्चा को अपने घर पर बुला कर दुःख रहा हूँ—जो उनसे देला नहीं जाता ।

अपनी भाभी का रोना किसी तरह शांत किया । बच्चा को चुप किया ।

‘साखिर क्या चाहते हैं ? हताग होकर अपनी गरीब सोपनी का पानी पाछन हुए मैंने पूछा ।

यह तो मुझे ही मासूम हागा । हिनकिया भरत हुए उहने कहा कि उह साफ-साफ मासूम नहीं । व तो इत्ता ही कहने हैं कि उनका छोटा भाई होत हुए भी मैं उनकी आज्ञा नहीं मानता । वे तो मरा भला चाहते हैं । लेकिन कुनधता मरी ही धार स है । व तो इत्ता ही कहते हैं कि मैं कत्त साहब व साय रहूँ । चुप रहूँ । व जो पूछें—हा ‘ना मैं ही उमका उत्तर दूँ बस । इन बात का अपने वे पहले भी चिट्टी भेज कर स चुप हैं कि उनका मैं हर तरह से साय निभाऊंगा । सा अब भीके पर प्रतिज्ञा भग कर मैं मुकर रहा हूँ ।

क्या करता । इस आधी रात स यह समाना । पिण्ड छुगन के लिए मैंने ‘हां’ कह आता धीर किया ।

गुबहूँ वो पत्ने स पहले ही दरवार गटने ।

घर धुंधूँ बापू मामने गड़े ये । गिलहरी की तरह मर पांवा पर सोते हुए बोन—कि मैं इन बन्धुग स भी इध्या-गुगमा की मित्रता निभाई है । मैं उनका पूव बनम का गगा भाई हूँ अब ।

कुछ दर बठ ग्हे । जान समय व कह गए कि यदि मैं कहूँ तो इमी गुगी स माह्य का गाना मेरे ही घर पर बनगा । काकि वे (साहब) मर पुरान गहनाठा हैं । परसामी स उहने साहब को कहता भेजा है । धीर मर कहने पर स्वयं उहें (धुंधूँ बापू को) भी मरे घर पर भोजन पाने में आपणित न हागी ।

मैं उनकी मूरत देखता रहा ।

दोपहर ढल गई । श्रीमती जी भोजन तैयार बिय ऊपती रही ।
सक्ति माह्व के आने के कोई भी आमार दीखत न थ ।

मालूम हुआ है कि साह्व का गधा जमा सीधा घोवा जिन्गी में
पहली बार खूटा तुगाकर जगन भाग गया है । डिप्टी क्लर्क पन्थारी
पेशकार तहसीलदार सब षगल का पत्ता पत्ता छान रहे हैं । अत वे
अब साभ को ही पधारेंगे ।

माभ वले वे आये तो घुग्घू बाबू ने गांध भर के यच्चो की कवायद
शुरू करवा डाली—कमिश्नर साय की ज । गाधी जी की ज ।
नेता की ज । के गुजते नारो से मूनी घाटिया गुमजार हो गई ।
जगत न जानवर बिदकने सगे । तिरगे द्वार सजी भ्रष्टिया । साह्व को
बुरी तरह फूला से साद दिया गया था ।

इतना स्वागत-सत्कार देखकर साह्व हैरत म ये । निरीक्षण के
समय थ विभोर होकर चारा ओर देखने लगे । जस छोटा नाव पर चढ़
कर पानी की लहरों की ओर कसूहम से निहार रहा हा ।

साल पीसा काटत दुए बोन— मिस्टर मिथ्या भाप तो बाटौनी
पडे हैं । घतलाइए जरा य पीघ कब फल देंगे । उन्हान बिबनी पत्ती
सहलाई ।

घुग्घू बाबू क प्राण कांप आए । कहीं पीघा जड से ही उभड़ जाता
तो ।

साह्व न मेरी ओर देखा तो कहना पडा— यही घोये-यांचवें
सास ।

इतने ही पीघ सब लगाए तो मिस्टर मिथ्या क्या हमार पहाड़
स्विट्जरलंड ननी बन सकने । फॉरेन एक्सचेंज की टार्जेज दूर नही हो
सकती ! अत-एम्प्लायमण्ट का प्रावलम सात्व नही हो सकना ?

मैन मोन सहमति दी ।

दगीष के दो द्वार थे । उत्तर का दयानन्द-द्वार और दक्षिण का

सिबानन्त गार ।

कमिन्दर साह्य न इममें सशोधन रत्ता । धान—नाय का उत्तर
 द्वार और साउथ का दक्षिण द्वार होना चाहिये । इमम नेगनल
 इन्टिषान का मजबूती मिलनी है । क्या मित्रा ।

मैं चुप सिर हिलाता रहा । बाप की कतम जो सा बग था कि
 चुवान साबूगा नहीं ।

घमनाद के साथ द्विगिया की टूटियाँ गयी । उन उन पानी घाया ।
 कमिन्दर साह्य मुग्ध माव से दन्त रहे । एग ही गाव म एक साथ
 पानी की नीच्य द्विगिया ! नशन कितनी तरबनी पर है ! यह सब
 उनकी पाइय इयम प्लान' की बजह स है । साह्य धान बाप बुन्दुगात
 रह । बडबडाते रह । घूमते रहे । भयत रह ।

गांधी पवापत पर का उदुपायन दीनक जनाकर टूपा । बच्चा ने
 मास्टर जी क साथ रोज की पाठगाला का प्रायना दुहर्गई—उग जाग
 मुसाकिर भोर भई ।

इम पर दूर गइ किनी कम घाल नाममम न एतगज किया कि
 यह राग का समय है ।

इस पर दगन दन हुए साह्य बोन— नहीं ! नहीं ! यही बनना
 मायेगा ! यही ! उग जाग मुसाकिर पानिय-संगि नहीं है । यह तो
 मेजानम प्रबकिग है ! गर ।

दिर बगमालरम् का गम्भीर नीत भी गुत्रा ।

भस की स्वीम साह्य की बेह पसंग घाई । धान हाया उहोंने
 गरीब बच्चा को दूध बांग घोर नेगनम दैय क बार म भी बहा ।

साग गुग थ । बच्च छातिगों पेट रह थ । सबिन मरा माया
 पग था रहा था । मुभय सदा रहा न आ सबा । धन साह्य मे धामा
 पाबना कर पर घाकर बिबाड मूँ कर सग गया ।

मानूम टूपा कि राउ को सगात्रार पर स का बीकारों क बाहूँ
 छीन पेट तक भावरा का दौर बनता रहा । बचान उ हास गाव

के गरीब लोग भीगते रहें। पर पल्ले कुछ न पड़ा। केवल बकता के मुह की ओर ताकते रहे। सबने ताली पीटी तो चट चट गानी पीट देते।

घुग्घू बाबू को साहब ने जमाने का घाल्मी बतलाया और उसके घादग चरित्र के अनुकरण की बच्चों को विनोय रूप से सलाह दी और कहा कि घाने वाली पीठिया उनका नाम थ्रडा से लेंगा। क्योंकि मर कर भी जो मरते नहीं घमर रहते हैं उन घुनियादी मच्चे जन-सेवकों म से है वे।

फिर घुग्घू बाबू का भाषण हुआ। उन्होंने कमिन्तर साहब को देश के प्रमुख घादग प्रशासकों की श्रेणी में रखा। और उनदी काय-कुशलता अनुकरणीय बतलाई। उनके कर्मठ जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। फिर घाल्लें मूद कर गांव की गरीबी का वर्णन किया। इतना ममस्पर्शी बरुण कि साहब की पलकें भीग आईं। घुग्घू बाबू न अन्त म दोनों हाथ पसार कर सरकारी सहायता के लिए भोली फौना दी।

दूमरे दिन उठा नहीं कि थीमती जी ने भकभोरा। कहा कि मैं हमेशा का सापरशाह हू। उनकी बात सुनता नहीं। सुना घुग्घू बाबू की स्त्रीमों के लिए साहब ने पाइह हजार की सहायता दिलवाने का वचन लिया है। घुग्घू बाबू के सड़को को नौकरी दिलाने का धारवासन भी मिला है। सुना जाते समय साहब नकद इनाम म सौ रुपये उनके हाथ म धर गए। चारों ओर घुग्घू बाबू की बाहवाही हो रही है। और मैं तो त्रिन्गी यों ही बकार की। ध्यय का वनस्पति विज्ञान सेकर न जाने कहा कहा घाम खोन्ता रहा!

स्वभाव



हमी के शान एक अल्पगी-भी धारास्तभरी भीम कूटी ।

परि क्या हुआ मिला ? क्या हुआ ? विछोने पर सेटी
बगला मासनी ने बराहिन हुए बरबरा सी । फिर धूप से बघने की तरह
पोकों अगुलिया बतार से तमन्बर माय पर सगत हुए घपनी घुघसी
निगारों से दूर दरवाजे की घोर दरान की खेप्टा की । स्पष्ट कुछ दीसा
नहीं । बरबन बछ पाह्ल-मा धाई । फिर मुह भीषा दबी हमी । फिर
गुन्दुने मिला मीठी हल्की घौर ।

तभी बार से दरवाजे की भाति पट्ट से बाहर से बिबाह सन् हुए ।
बापरी का बाठ का जापीणर दरवाजा परमशता हुआ बाँप आया ।

घोर तभी मिली हावनी हुई घामने का सरी हुई । बाल हवा से
उड़ने इपर उपर बिगरे घामल की तरह उमन । सावरवाही से पहने
बनइ धम-धमन घोगों से गाम के बागला का गा घाबेण सिन्गुटी
बेहरा । घा घान बासीणर सगल दुपट्ट से घा पोंछती हुई तमतमा
कर बोनी— 'महा बौठ बुरे है धाभी ।' उमक मधुन पड़क घाए ।

सीना बड़ धग से उठने गिरने लगा । भीनी चुनरिया मफलर की तरह गले पर ढाल कर उसक नीचे भुके दोना पल्ले झीचकर भासँ तरेरकर देखा— 'सच्ची धीत बुरे हैं भाभा ! दरवाजे तक दन जो गई कि निगोडी घडी रह गई बस लाट साहूब की तरह हाथ प्रागे बढ़ा दिया । झकड़कर यो एठकर बोल— चुड़न घडी घाध ! वाघने लगी ता घडी के साथ साथ हाथ भी पकड लिया । फिर सामने की तरफ भुकी चोटी हथेली पर धर कर सूघने लग । मैंने कहा—सूघते क्या हां हजुर तुम्हारा घमेसी का तल नहा सगामा ! तो चुप भूठा बहकर गान पर एक धपत जमा दी । फिर नागन कहकर मरी घाटी पकडकर जोर-जोर से खीबन लग । दलो कही बाल उतर जात तो ।।।

भाभा की बुभी पलकें बड़ी हो आई । जस नहा विनारा वाढ़ के जल स घनायास विस्तार पा गया हो ।

लकिन मिन्नी उसी गति स बहती चली गई— मैंने कही तो !' भगुली पर सजी स छल्ल की तरह दुपट्ट का बिनाए लपेटती उफेरती बोली— कहा तो कहने लग गिलरी बिना पूछ के भी बुरी न लगे है । क्या बट्टो ! फिर बिना घात हो हो हो हसने लगे । मैंने मुख धिंदोर कर गुस्स स देखा तो सच्ची भाभी— सबली सबली । कह कर बस गए । 'सां न ज भी काई बात है ! पर म भी भगरेजी बोलत हैं !

उफनती-उबलती मिन्नी चली गई । भाभी देखती रही । सोचती रही । दा-धार मनदुःख शण्यो पर मन घनायास घटक घाया—मांछी के बण्ड म फमी कटिया की तरह ।

भाभी पाए भी पूरा गुजरा न होगा कि इसी पहल मंगल की सांभ के बसत सीढ़िया स हा हो-हूला मबाता हुमा जितेन घाया घा । नीचे भागन पर स हा घावाठ सगाता हुमा पुकार-पुकार कर बहने लगा घा जसे बिनी बहरी की वियाबान वन म पुकार रहा हो— धरि भा मुन्ती हा ! मुन्ती हो ! देखो यह क्या पकड कर साया हू जगत से !

तुम्हारे बगल की बसम सब धव बल बेच कर सो जाओ। घग्-बाहर का दुमना काम करोगे। वलन भांड माजगी। पपड़े उसें धोण्णा। बुहारी सगाण्णो, घांगन पर। यम घात्र स महरी का काम ठण्ण। घट्ट स घुटर्की बजान हूण, उसने घपनी पुगनी घादत व अनुगाए एन घात्र तनिव दगाए हूए कहा था— 'ग्यो गया है। गिलहरी है। है न।'

बिम्बय ने मामती ने दगा—साध ही सामने गिलहरी खडा है।
त्रिनन बान परइ मडा है—

म वा त्रिवा भाभी व।

वह माया त्रिवात के लिए भुंती तो भाभी नहानही कह कर, त्रिभियावा मुसगरा मर दो। एक उरी उरी सी क्षीणु मुस्वान परही सग भूय हगाह हाठा पर घाकर हीन स घो ही त्रिभर गर्। पग पर बुनके त्रिोट की तरफ धीरे धीरे घोमल हो खनी।

कर घाए त्रियी? भाभी ने घुपट म घपनी तल स कानी त्रिगी का बाना त्रिनाग घोड़ी चार म ठव दिया। फिर इचमर पीछे साक गई तात्रि सामन कानी भी बठ गये। पर म बाबा घादम के जमान का बिना ह्यव भी बेंन की जगह प्लादउड की पागी म ठुर्की एक ही कुर्मी है त्रिमव सामन त्रिनन मडा है।

'दगा त्रिघत्र गनीघर को।' त्रिनव सकोष से घावाड सीगी।

पग त्रिगी कयां हो! बठो भी न।' मामती ने कहा तो बहु बधी लठगी का तरफ त्रिभिट कर हीन स चारगाई की पठसी-मी बांस की पं घा की घा घणुन जगह परे बर गई।

पडनी कही हो घात्रवम?

कही बाबा व गई—बुड-मर।

त्रिभर की महरी रग की जानीघर करडा त्रिमवा एक ह्यवा गुनवी म बपा घा त्रिभर एवाप परे पठा नहा कर कए दूर त्रिभर घ बहु घभी नव भी घान दाहिने हाव म घान थी। त्रिममें एक जोरा गनवार कुर्ती दा चार घो उभरल की घोी घोी घोीं थी। उपर म घणुवार

के फटे जिल् से ढकी एक किताब थी, स्याही घोर पेन्सिल के मिथित चक्षरों से हिन्दी अक्षरी में कुछ लिखा था। छुट्टियों में पढ़ने के लिए साई थी—क्योंकि भन जी ने छुट्टियाँ मिलते समय कहा जो था कि छात्राओं को हसी ठट्टा में समय बरबाद नहीं करना चाहिए। सो समय बरबाद न करने के लिए ही वह बदरिया के बच्चे की तरह घसीट फिर रही थी। वैसे एक बार भी उसने पन्ने पलटे नहीं तो क्या हुआ !

भाज से पहले भी वह एक बार कभी यहाँ घाई थी। तब वह गायद पासपोट साइज की थी। लठकियां कितनी बड़ी हो जाती हैं एरदम !

मालती क्या कहे ! एकाएक बोलने को कुछ मूढता न था। गर्मी की छुट्टियाँ में घाई है तो !—कुछ सोचते हुए उसने सहानुभूति से कहा—‘इन्तहान दे के घाई होगी न। थकी थकाई !

‘ च्च अ अ । मुह के सामने स मक्खी उड़ाने की तरह हाथ या ही भटके से हिलाता हुआ चट जितेन बोन उठा— थकने के बाद यह हास है तो पता नहीं पहले क्या होगे ? हरे राम ! हाथ जोड़ते हुए एक गहरी सांस भरकर जितेन ने मिनी की घोर देखा— भाभी कहती थी कि इसका पेट चक्की है चक्की ! हाथ भर ऊचा ढर एव वक्त में हज़मनर जाती है ! ऊपर से घूंट भर पानी भी नहीं निगलती ! मुना हमारे यहाँ इतना नहीं मिलेगा हाँ हो हो हो ! वह फिर मुह फना के हसने लगा ।

मिनी झेंप गई ।

मालती ने अजोब-सा मह बनाया । उसे वह कहना चाहता था कि उसे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए थी ।

बात समझालता हुआ धुस्वियाँ लेकर जितेन बोला मजाकिय टोन में— मरी घाली बठी-बिठाई पटल नगरी में करती क्या ! इसलिये यहाँ धामत्रित कर लाया । गह अपना है । जयी वह भाभी, वसी यह ! रोग रीया पर बिधाम करती रानी साहिबा की देख रेख हो जाएगी । स्वयं मुझे चार-छ दिन पयटन पर रहना होगा । लौह पय-गामिनी से

यात्रा करनी होगी। सब कण्ठ में गगाजन करने वाला तो कोई चाहिए न ! वह बहता-बहता स्वयं ही हस पड़ा। फिर स्वाभाविक बहाव में बोला—'मई बाहू बसाव भी क्या है ! दोस्त हो तो ऐसा हो। बहने लगा—'मायू नू भोज से दूर पर जा। होते हमारे चिन्ता किस चीज की ? सेना न हम बुद्धि की।' कोई रात्रस्थानी ऊट-बूट मिले तो गले टांग देना। पड़ तिम कर इस चीज-सी मिनिस्ट्री सम्हालनी है।

जिनन ने मुह मटवान हुए देखा। मिन्नी मोठ तिकोड मुह बनाए—
हूँ हूँ ! बस ! बस ! बह कर दबे गुस्से में दस रही है।

तब मैं इन कुछ ही चार-छ दिनों में इस गिरहरी में बड़ा घन्तर घा गया है। एकाप जिन ता यों ही फूहड़ बनी रही। न सलीके से बपडे पहनने का दाउर न चांगी काड़ने का न उठने-बठने का ! शोचती तो बस बोलती बसो जागगी बलान पर बतबत पहिए की तरह। बड़ा बोले जा रही है। क्या बोल जा रही है। किससे बोले जा रही है—बोर् सुप नहीं।

—भाभी, हमारी मण्डी धनीरा वाली भाभी भी बड़ी मनानशर है। हम सब उन्हें मण्डीर भाभी बहुरे है। पहन मदमा घ सहेगी। फिर हाप मषाणी। फिर गुस्से से घाने पाँवों को घाने घाग परग पर पकेंगा ! सभी भाभी मदमा मोत करते हैं। बहन है—घोरत जान को मह सगाना घषा मही। तुमनीदाम जो न जो कहा है।

—हमारी को सहनी है न भाभी सबता त्रित्री। बहू बजनीमाला से घण्टा माषी है। बहू बहुरा है कि बहू घाने बनकर मनेमा न काम बनेगी। भोगर-भाड़ियों को मानबन बनेगी। तब भी मुझे भूसेगी मही।

—दमार रकुम को भन जो— निग पुरी सुड़ी होकर भा मडबियों की तरह हाफ-टाइम में लड़ी गाती है। धन-धुम बानना है तो सुपमुडे बषा की तरह मूरे में घूब गिरा है। साग बहन है बषा में टूटा प्यार है। सभी पर मैं कुत्ता पात रता है। बहने है ब उगवा नू।

तब खा लेती है और अपनी खटिया पर ही सुताती है ।

—और भाभी वो मिसेज टाकुर ! हर सान मुर्गी के अण्ड को तरह एक बच्चा ! वह अपनी एक अगुली हवा में खड़ी करती ।

फिर भाभी के तनिक पास खिसक कर कहेगी—भाभी हमें एक मुच्छन मास्टर जो पढ़ाने आते थे । ठिगने ठिगने से थे । वे मुझ से दिना बान गुस्सा होते और गुस्से में मुझ गधी' कहते । एक दिन वे मुझ से कहने लग कि मैं बड़ी मूख हू । गवार हू । इती बड़ी हो गई बगारू की तरह भाभी तक मुझ 'शादी' की बात नहीं आती । पहले वे जहाँ पढ़ाते थे वहाँ इसी इती छोटी छोकरिया भी सब जानती थी । पर मैं ही हूँ जो । एक दिन हमारी मण्डी घनोरा वाली भाभी ने सच्ची भाभी खुद अपने बानो से सुना । बाबा से कहा । बाबा भी बिना बात उस बिचार पर लाठी लिए पिल पड । पतानही भीगी बिलिया की तरह कहा भागा । खि खि वह फिर हसने लगती ।

लेकिन धीरे धीरे अब हालत इधर काफी बदल गई है । मासनी को यह अन्दाजा लगाना कठिन हो जाता है कि यह चाकई भोली है या इस तरह की ऊ-अटांग बातें बनाकर उस बनाया करती है । कभी कभी ता समझदारों से भी भली सधानी बात कर बैठती है ।

अब कम से कम एक घण्टा गसलखाने में खपता है । चार छ दिन में ही जितने की मुगपिल लेल की सारी चीन्गी भावे पर उड़ल टाली है । जिनन आपिम से सन्तितन का पनूट लाया था जिनसे उमने बीरों नायन रग डाल है । सारे दिन चीन्गा सामने रहेगा । संध्या को बाजस सगारे घासों में तल डाल छत की मुडर पर बठी म मासूम कदा-कदा निहारती रहेगी ! फिर बीच उतर कर गहरी सांस भर कर दोना हाथों को हवा में खेंकती हुई होंठों ही हाठों में बहगी—हह, हो गई ! भाभी प्राज इसी घबेर तक भी भद्रवा सीने नहीं ।

मासनी सब देखती है । सुनती है । तनिक साफ-आफ सादरक म ध ता

वहीं। अधिक पत्नी-मित्री नहीं है वह। बचपन में नाना की फटकार या झन्धी लाली के दुमार के कारण रामायण महाभारत और राम रत्ना पढ़ लेती है। ब्याह के त्यों में जिनमें रहता था कि वह पढ़ा देगा। पर अब पढ़ा पढ़ाया भी सब बिमर गई है। गिलग्री की बात खर मान लिया ठीक भी हो। जिनके कुछ माने भी हा। जेजिन प्ररु कुरु बात है। सभी तो पर में प्रयत्नी वाचन हैं। मिन्नी ठीक बन्गी है।

मन उत्साह हो धाना मालती का। उगे लगता उसकी रणु नेह भीषते बम्बन की तरह भागी होती घसी जा रही है। धन धन सांभ लेने में भी बटिनाई हो रही है। पिछले सवा माल की बीमारी में इतना बमजोर उमन घणने को बभी भी महगम नहीं बिदा। जितेन पहले भी उगडा उगडा-भा रहता सजिन बभी-बट्टास मीनी वतें तो बर ही निषा करता था। धारिम व काम में भी तन-भन में जग रहता था। पर अब! दम मवा-म पर में ही बीत जाने हैं। बिमो-बिमो दिन तो धायी छनी नेकर दुग्हर को ही हाजिर

'मिन्नी मर् फर डिजान बनना तो कोई तुम में सीमे ।
 सेजिन हां जरा पबोड-भाड तो बना धभी । तरे हाथ की पबोडियां
 मब । पर हू बेमन में नमक में मिमछी । फिर दागन में दरना
 मने ही धार ममकीन हा जानी है । धाम के प्याले में बीनी के धाने वह
 बभी मिनी में धरनी धरुमी डबोने को बहना । फिर मुह निपोडना हुधा
 बहना— का धरनर हो मर् धरनर । अननी मीनी कि मपुरी पो नहीं
 धायी । माग मवा ही घना जाता है । क्या ?

निगाहों फिर मिन्नी पर धरनर जातो है ।

मामनी जानती है उगका धारीर धर निगुड हा बोग की तरह बेकाम है । न रन । न मान । माग भी इटियां में धरनर हो रही है । उन धरने को धरोध बरकों की धार धरनर धायी को निगने धाट-म मरीने से धरनी बधा के पही बभी परे हैं । जितेन इनात्र कखान धरधरा धर उर बुवा है । धारिम से सोने क धार धरनी निगाहों से बेबल धर धर

देख भर लेता है। उसका जी चाहता है कि पहले की तरह उसके तपते माये को सहलाए उससे बातें करें, उसका मन बहलाए। उसके साथ बैठकर, बच्चों के बारे में बातें करने में उसे प्रजीब-सा सुख मिलता है। वह उसके हाथों को अपने हाथों से घामकर अपनी मुदी पसकों पर टिका देती है। और खोई-खोई-सी सुनती जाती है और जितेन कहता चला जाता है—मष्टू को वह स्कूल भेजेगा ! टिंकू कितना समझदार है ! इतने छोटे कम धक्क के बच्चे इस तरह रह सकते हैं, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती ! परसों जो चिट्ठी आई थी। वह अचकचाकर देवता—मालती को धाँसो में उसके मोती। और उसकी सारी हुयेसी महा आई है !—एक बार बस केवल एक बार कभी ऐसी बातें सुनने के लिए वह तरस उठती है। पर जब से मिन्नी आई है ! तब से !

उसका मन काश के टूटते टुकड़ों की तरह खनखना जाता और भयाह में डूब जाता।

जितेन अब अधिकतर आफरी बाल कमरे में बैठा रहता है। मिन्नी बठी रहती है। उसकी कसाई से घड़ी खोलती है। जूते उतारती है। मोखे उतारती है। करीने से उसके कपड़े सह करके हगर म सजाता है। उसके लिए वह रुमाल ही नहीं तकिए का 'स्वीट ड्रीम' लिखा गिलाफ भी काढने को कहती है। और कभी कहती है कि वह चादर भी बाढगी—बेस-बूटों वाली।

भइया आज आपने खाना नहीं खाया। अच्छा नहीं बना क्या ?

'सा तो चिया।

'हू वहाँ खाया ! बस इसे खाया न ! किता भी सगा है ! किसी मिहनन से सेंक-सेंक कर बनाई है—आपके लिए !'

न बस !

नहीं भइया !'

'ना ना ! वह अपने दोनों फले, उल्टे हाथों से पानी ढक देता और अपनी घोर सरका सेता।

पर मिनी माने सब न ! वह जबरदस्ती निशाना साध कर रोनी
गेर देती है।

“ ज्व प ! ”

मिनी देवती रहती है— मैं सिला दू मइया ।
पास ही दूगरे कमरे में बचत-सी लेटी मालती लडप उठती है । उसने
सूगे हट्टियों वाले शरीर में एक साथ हजार सुइयां बसकने लगती हैं ।
उसका शरीर बर्क स जा टकराता है । वह सुन्न रह जाती है । जैसे सारी
चेतना खुब गई हो । तभी फिर निजकारी और हसी के फम्बारे ! वह
अपने कानों पर हथसी धर देती है ।
घोर घाली पर ही हाथ धोकर जितेन बाहर ही बाहर घूमने निकल
जाता है ।

मिनी फिर भागती भीतर घाती है । उसका उमगा शरीर खिन रहा
है । पांव फिरक रह हैं । घांगें घमी तक भी नाच रही हैं— ‘भाभी घाप
क्या लेंगी ?

कुछ नहीं ।

कुछ तो लो भाभी ! जो कहो लो बना दू !

!

मइया भी क्या ! अकारण बट्ट हग पडठा— देगो न सामा
सामे-गाउ धोष म ही उबक पडत है— अब नहीं सामा । बम बम् ।
भाभी परे हगकर दोनो हापा मे डक लेने हैं । लेकिन जब मैं अगन हापों
छोड़-छोड़ कर निशाने गितापी हू लो गच्छी भाभी दो-तीन रोजियां
घौर बसा जाउं हैं । जब तक मैं मना नहीं करूंगी मुह बसाउं रहेंग ।
घौर देगो न भाभी पानी भी मुमी को गिताना पडठा है बच्छों की
छट्ट !

दिर भाभी क उनीं बेहरे की घोर देगती ।

“मइया घाउको बजल प्यार बजत है भाभी । हमारे पजल नगर घान
बजत हमारी बाजल बानी भाभी को जिता प्यार बजत है उसघ भी

अधिक । वो हमारी लच्छेदार भाभी तो बस् !

मालती का झुलसा मन बुझ-सा घाता ।

परसों भइया कहते थे भाभी !

। '

घाप को बुझार तो नहीं भाभी !' वह बिल्ली की तरह उछल कर पलग की पाटी पर जा बिराजती । भाषे पर हाथ फेरती— 'बघ रहा है भाभी मट्टी की तरह । कहते हैं बरफ की थली घरने से ठण्डक पड जाती है । भाभी थोडा ठलुमों को मत दू ! घाप कहती हैं उससे ठण्डाई पडती है । प्राणों को सुख मिलता है ।

नहीं नहीं । मालती भटके से कहती जैसे बिच्छू ने डक मार डाला हो । 'तुम खा लो मिन्नी ! जाओ रोटियां ठण्डी हो जाएगी ।

भइया कहते हैं भाभी कि मरे साथ बठकर खाने में उन्हें बहुत अच्छा लगता है ।

भाभी की घोर से कोई उत्तर नहीं सौटता । तब मिन्नी धीरे-से उठती है । मुडकर फिर देखती है— दनी भी आज चुबता हो गया, भाभी ।

इस महीन दस को ही सारा मत्तबान घाट डाला । मैं होनी तो इते से ही महीना दम न्नि घोर निकास देती । घी चुघा चुघा व साम-सभारे पराठ खिलाती जाधोगी तो बधगा क्या ? मालती क मन में घाता पर कह न पाती ।

भाभी घाप बहुत बुरी हैं । मण्डू-टिक्कू को म जाने कहां भेज दिया है ! एक बार दिसनाया तक नहीं । सुना बहुत प्यारे हैं । बहुत खूबसूरत । हू-हू भइया पर गए हैं ।

मालती मौन देखती रहती है ।

घापको यथा की या नही घाती भाभी ?'

मानती कुछ कह न पाती ।

भाभी, सन्धी हमारे बुलन्दर बान भइया कहने हैं कि मैं पढ़ लिख कर डाक्टरनी बनन वाली हू। मेरे जनम-पतरे म भी माजी कहती हैं कुछ एखा ही मजोग है। तब सन्धी भाभी, मैं इलाज कर आपकी प्रच्छा कर दूगी। भइया तो कुछ करते घरन नहीं। घाब-बल क डाक्टर मुए निगाह हान हैं। हमार बुलन्दर मे है एन भाभी। वह जिनका इनाज करता है वही पत्र हो जाता है।

।

भाभी सन्धी को हमारे घर भज दो! सन्धी, मैं पानूगी। भाभी भइया सब गिलरी विलैरी नहीं कहते। मरी बिजरी पर दो प्रगु लिखा छुवा क कभी लखरी लखरी 'कह दते हैं। सब पत्रा नहीं मैं कयो धरमा जाना हू। सन्धी भाभी मरा मुन तान हो जाता है—पत्रे धेर की तरह।

मातती को कुछ गुनाई नहीं दता। वह घालें पाद पपणी सप सूर दुर होंठ गाव विन्मिन-सी छत की धार दपती रहती है। सिङ्की के टोक ऊपर लगिया के पावों क पाछ हवा की जाना है। ठण्डा हवा से बचन क निग जिग जाडा में धमबार वा भोग गत क टकड़ म दफ दत है। ललिन गमियो क भाँकते ही वह धावरण हट जाता है। पर इन छाल बहु भाग हा है।—उसकी सन्धी भीमारी क कारण। मकहिया म उमम उतम कर जान रम कामे है। इन जाना क उम पार उस एन ताबार दीगती है जिनम धय गद की भारी तहू पड़ चुकी है। ललिन एकाग्र क गुने दागों म जब कभी उठकी पनहें गनती है—वही लरकीर उमर कर ऊपर भाठी है—मामतो-सी। धुपती-सी। न जन कवा।

मामन शक्तिनी घोर धार म बरबा क टूट गिमीन पद है। रग सब पुछ गना है। मट्ट बुला क धरं जात समय भूम गवा धा। सुयह की गरा वरुदनी सी। वो पत्र क प्रथमे अधिगारे म दागें मतना हुआ जमा गया था—सन्धी तुम भी जाना हा। सन्धी! सन्धी!!!

तब से कोई उस घोर जा न पाया ।

परसों टिकू का पत्र था । पेन्सिल से लिखा था— भग्नी, यहाँ सब हमसे भगडते हैं । कहते हैं हमारी भग्नी बीमार है । मरने वाली है । भग्नी रात को नींभ चिल्लाने लगता है । वह भब खाना नहीं खाता । दूध भी नहीं पीता । हमें बुला सो भग्नी !'

सब ही मालती का गला सूख जाता । चीखने को मन होता । पर गले में परधर जम जाता । दन्त फूट कर बाहर न आ पाता ।

मिन्नी पानी ।

दो घूट पानी गले से उठरने पर हाश आते । मिन्नी की घोर देखती । हाफती रोती— मिन्नी तुम्हें भया अच्छे लगते हैं ! य भी तो तुम्हें प्यार करत हैं न !

।

"मेरे बच्चों की देख रेस कर सकोगी मिन्नी ! उन्हे प्यार कर सकोगी ! बिलकुल तुम्हारे भैया पर गए हैं ।

घोड़ी देर बाद मानती सयत होती तो स्वय ही पछानने लगती । हाप वह क्या कह गई मिन्नी से । नहीं । मही । वह बस कर चार पार्स की पाटी से जा लगती । अस भूचाल से धरती फट रही हो । प्राण पान के लिए वह अन्तिम महारे से सिपटी जा रही हो । कहीं मम-घार म दिनका घोर !

चूकि मिन्नी की छट्टियां भब जिनारे पर हैं । चूकि जल्दी ही उसे भब अपने बाहर लौटना है । चूकि जितेन न ही सम्भवत उस उकसाया हो भत आज प्रात स ही वह तुली की बि इत तिनो म कभी उसने चिड़ीपर मही देखा । इसलिए आज इतवार का दिन होन से छुगी है । इसलिए उमे भवम्य दिगलाया जाय । नहीं तो वह बहा सौटकर क्या कहेगी ! याया न पाती बेर टेगन म बलात भइया से कहा था कि वह इस बार भवरय पुरी तिल्ली देखकर लौटनी चाहिए । भइया ने सिद

हिलते हुए हमी भी मरी थी । लेकिन ।

त्रितन न पहल अधिक बोझी होन की बात कही । फिर 'हेडक' की घोर घात म जब मिन्नी नहा मानी ता उसने श्रीमती जी की ओर देखा— 'यह गांव की गिलहरी खंन से बटने नही दगी । बतानो क्या करू । दो-चार रुपए का पानी यों ही हो जाएगा । पर

मालती न स्पष्ट कोई उत्तर न दिया । सुगना कुमा और बच्चों की नई चिट्ठी की बातें उपबद्धर सिता ही ध्यान आती ।

घनात म मिन्नी न धोरगुल अधिक मचाया तो वह घनमने भाव से टिपार हुआ । मिन्नी के फूटफुन की सा थार बातें पुद्बुताता हुआ मालती के सामने स क्रमसादर गुजरा ।

पर राख बाण सीढ़ियों म डनान की घोर छेड़ी से उतरते जूता की पद-पद आवाज आई । फिर सम्मिलित हवी का जसा स्वर ध्याया ।

मासता घबनी रह गई तो वे सूनी दीवारें मगान की सी पुर्ननी लिए उने भयान्त का भागी । वह घागें मीचे बार-बार करवा बसती रही । कभी उग बिदिबापर की बतग—सारसों वाली घुमावदार नील के किनार बगीच की छधीलमा डालियों की एकात छाह म हयी हगी मल मसा मुसायम द्रव पर बगी मिन्नी दीलता । त्रितन दीगता । त-ह-तरह की गुग-गुग की कटका भोटी बातें गुताई दती । मटवे स बहु करबट बाननी घोर घागें लोम दती ।

घब फिर वनहें दबने पर फिर बहा दुप्य । घब मिन्नी क पुत्रों के पात घाग्मान की घोर मुह किए त्रितन क्या है ।—जय लोया हो । झुता हो । तो घटुनिबा क बाध 'बार मीना' गुमगवर रास हूँ जा रही है, पर उव होग नहीं । मिन्नी उगक म म की पगीन की घुगें का घनने हुट्टे म पाछा है । त्रितन क पर पागद-ले लूबमूरत घुमरात बायो की छान की तरह मगुमा म मन्ती है । फिर बाध म से मगुमी ह्यावर देता है ।—पर मुदा छाना पूरी गाताई का बना नहीं । सा सिरे निमड नहीं । बाध म मागून के बराबर दावघ रामी रह जाता है ।

तब से कोई उस घोर जा न पाया ।

परसों टिकू का पत्र था । पेन्सिल से लिखा था— अम्मो यहां सब हमसे भगबते हैं । कहने हैं हमारी अम्मो बीमार है । मरने वाली है । मण्डू आधी रात को नीचे चिल्लाने लगता है । वह अब खाना नहीं खाता । दूध भी नहीं पीता । हम बला को अम्मो !

सब ही भालती को गला सूख जाता । चीखने को मन होता । पर गले में पर्यर जम जाता । शब्द फूट कर बाहर न आ पाता ।

मिन्नी पानी ।

दो घूट पानी गले से उतरने पर होश आने । मिन्नी की घोर देखती । हांफती रोती— मिन्नी तुम्हें भया अच्ये सगत है । वे भी तो तुम्हें प्यार करते हैं न ।

।

मरे बच्चों की देल रेल कर सकोगी मिन्नी । उन्हें प्यार कर सकोगी ! विलकुल तुम्हारे भया पर गए हैं ।

बोड़ी देर बाद माणती सयत होती तो स्वयं ही पछानने लगती । हाथ यह क्या यह गई मिन्नी से । नहीं । नहीं । यह क्या कर पार पाई की पाटी से जा लगती । उसे भ्रूषाल से धरती पट रही हो । त्राण पान के लिए वह अन्तिम सहारे से लिपटी जा रही हो । कही मम धार में निनका घोर !

चूँकि मिन्नी की छट्टियाँ अब किनारे पर हैं । चूँकि जल्दी ही उसे अब अपने दाहर सोटना है । चूँकि जितेन न ही सम्भवत उस उबसाया हो अन्त भात्र प्रात से हो वह तुली थी कि इस निना में अभी उसने बिट्टीपर नहीं देखा । इसलिए भात्र इनकार का दिन होन से छगी है । इसलिए उसे अवश्य दिखलाया जाय । नहीं तो वह बहा सोनकर क्या बहेगी ! याबा ने घाती धर टेसन में बलात भद्रया से कहा था कि वह इस बार अवश्य पूरी जिल्ली दलदर सोननी चाहिए । भद्रया ने सिद

हिलाने हुए हामी भी मरी थी। लेकिन ।

जितन ने पहन अधिक 'बीबी' होने की बात कही। फिर 'हिबक' की घोर घल्ल म जब मिन्नी नहीं मानी तो उसने थोमता जी की घोर देसा— यह गाव की गिलहरी घन से बटने नहीं देगी। वतामो क्या कहूं। दो-चार रुपए का पानी यो ही हो जाएगा । पर

मातली न स्पष्ट कोई उत्तर न दिया। मुम्बना बुधा घोर बच्चों की नई बिटणी की जाने उपडरर दिया ही वरन हासी।

घल्ल म मिन्नी न 'गोरगुल अधिक मकाया तो वह मनमने भाव से धीवार हुआ। मिन्नी के फटफटन की दो-चार बातें बुझुता हुआ मातली के मामने म झमनाएर गजरा।

पर दाग बाग गीदियों म डलान की घोर तेडी स उत्तरते जूतों की घर-घर धावाड झाई। फिर मम्मिलित हमी का जसा स्वर ध्यापा।

मातली घरनी रह गई तो व नूनी शीवारें मगान की सी मुनिगी लिए उमे भपन्न को भागी। व घागें बीच धार-धार करवत वलती रही। कभी उग बिदिवाधर की वलस—धारसा वाली घुमावदार नान के बिनार बगील की उभीनमा हातियों की एकाठ छाट में टपि-ह। मम मनो मुतायम दूब पर वी मिन्नी दीवती। त्रितेन शीतता। यह तरह की मुग-मुग की क या भीटी बासें मुना देती। नट्ट स बहु करवट बदलती घोर घागें लेन दनी।

घर फिर वलस टकने पर फिर वही दुष्य। घर मिला के घनों के पास धामपान की घोर मह बिग जितन मग है।—वैड तोया हो। घूना हो। तो घगुगिवा क बीब धार भीनार' एकर टप दूर जा रही है पर उग होग नहीं। मिन्नी उमक मय का पन्न का हों को घपने हुए म पाछा है। त्रिान क पके पागर-मे मज्जाइर दण्डन बागों की एम्प की तरह घगुगो म तागती है। फिर बीब वके घुनी टाकर देलता है।—घर मुधा छावा पूरी मामा का कगर्ग। ग विरे मितड नहीं। बीब मे लागून क बराबर दण्डन कर्ग गू बना है।

मिन्नी दो भगुलिया की नोक से उन्हें फिर फिर मिलाने की असफल चेष्टा कर रही है। दोनों चुप हैं। उस ओर रास्त से इसके-दुबके सोग गुजर रहे हैं लकिन मिन्नी की उधर पीठ है। उसने जितन का धूप का काला चामा पहन रखा है।

—सुम मेरी तरफ या धूर कर बयो देख रहे हो ?

—तुम्हारी दो भाखो म छोट-छोट दो जितन खिसाई दे रहे हैं ।

फिर दोनो चुप है।

—घर लौट कर याद करेगी न मिन्नी ?

वह एक धार उसकी ओर देखती है। हस भर देती है।

गिलहरी जब हसती है तो कितनी भली लगती है ! ममने-सा भोला मुखड़ा। रुई क गोस-स कोमल गुलाबी गालो पर गद्दे। कच्चे अनार के सफ़े दानो की तरह मोतिया दात मालती के बूब मन में लीर-सा धुमा। लपक कर उसने पास ही मज पर घरी कानी धारसी उठाई। अपने चहरे के सामने रख कर अपने से ही भाखें धार करती देखती रही, अविचलित भाव से। देखत देखते उसका मह मलिन हो आया। भाखो के कोर भीज गए।

दोपहर ठले बाहर की जाफरी के बिबाड़ का पुण्डा मटका। मासती ने चौक कर भांवा।—मानों नीद में जागी हो। धरे रघु । इत्ती धवेर।

धम् धम् कर मिन्नी दाखिस हुई हाथ में प्लास्टिक की रीती टोकरी मचाती हुई।

मासती ने यों ही दसा— वे नहीं आए ! धधर धनचाहे खुले।

यही सीं ब्लाक की तरफ गए हैं। किसी मन्गसी दोस्त के घर कुछ काम बताने के।

वह धम्म से निहुरपी धरमराता कुर्सी पर गिर पडी। पास ही कुर्सी की पीठ की पाटी पर सटके मासती के धुस म्नाउज से पर्स ना पोछती हुई बिलखे बामों को दोनो हाथा से बनपटी के ऊपर से समटधर, माये

की घोर से पीछे ले गई। फिर घुटनों पर दोनों कुहनियाँ टिकाकर, दोनों हाथा स ठोड़ी घामती बहक उठी—'मजा भा गया' हड़ हो गई भाभी! भइया भी क्या है! सच्ची मैं मरती-मरती यहाँ तक भा पाई। इत्ता सिला निया बम्ब! जहाँ पर भी खान का कार्ड बाज दाखी महीं घस हमारे बुल-दसर की बमेटी के कूडा उठाने वाले बल की तरह अपने भाप मिठक पड़े। बगल की पकीड़ी मिनाई। दही भान पिनाए। इत इते सन्तरे पुन भवन हाथों छीलकर पिनाए। ऊपर स दो महीं नहीं तीन भरी टाड़ी धोतले पिनाई। मैं जितनी मनाहा बरनी भया वी जबरन करत। कहते—मैं साजगी नहीं तो घपनी भाभी की तरह सीक समार्ई बन जाऊगी। सोन्ती बर सो येह मजा भाया भाभी। भइया की बगल स बटने को ठोर मिल गई। भइया गिन-गिन कर सब दिखाते रहे—इन्डिया गेट। हवाई-गाड़ी का घट्टा। इय सहर की मोटर-बस भी क्या है भाभी! मुए बड़े म्ठक सगते है। कभी भइया मरे ऊपर गिर पड़ने घोर-भाभी मैं भइया के ऊपर!

मातली के मन भाया कि यह यह भी पूछ कि भाया चिटियावर तो तुमा जल्दी देत मिया होगा फिर सारे न्ति क्या करत रह। भीस के तिनारे दूक पर भी बटे होत स। भया स क्या-नया बाने हुइ। पर तभी दरवाज गन। जिनन भा सबा हुमा।

मातली के महनुम किया कि लामन यह टोक सोचरही थी। लमके मूह का भापका बिगड़ गया। बिगी ग उगने बोई खान नहीं की। बट तने को तरह जिझाल के गई।

बल भी ता देना हा हुमा का कुट। परमा भी! निरमों भी!

पिनी काज पनी जएपी। मातली नीबडी है—बनी टोक है। पुईन कभी प्राय तो उगके तिन कुट नि नदीर सीना मम्भ हो मङगा। साचरी बाने कभरे स प्राज मुबह स नोहीं बर है। क्या पका बिजन

मे छट्टी का बहाना बना लिया हो।

मिन्नी जितेन के जूते के तरफे बाघती है। घौर उसके हाथ को अपने हाथ म थामकर घड़ी।

मासती सिर से पांव तक कान धनी है। जितन के हाथ में कल राम घर भाते समय कागजों का एक पुसन्दा था। हो न हो गिलहरी के लिए कोई चीज लाया हो। बल दिन से वह परेशान है। बातें करते करते काटने को भागता है।

दोनों अने पता नहीं क्या-क्या बातें कर रहे हैं। लडते हैं। भगडते हैं। कभी कभी हस भी लते हैं। वह आज फिर 'गिलहरी गिलहरी' धिड़ा रहा है। नागन' कहता हुआ उसकी छोटी सीब रहा है। उसके बालों में फूल खोंसता मुई अगरेजी म भी कुछ कह रहा है।

घौर समझा रहा है कि उस अब सलीके से बपडे पहनने चाहिए। सलीके से बोलना चाहिए। सलीके से उठना-बठना चाहिए। ययोकि अब वह यच्ची नहीं है। गांयों म लो उसकी उमर की लडकियो के दो-दो बच्च हो जाते हैं। घौर वह सिर हिला कर हामी भर रही है कि उसकी अनारो बुधा की छोटी सडकी कुलवती का व्याह बिरन पुरा में हुआ है। उसकी (मिन्नी की) मांजी कहती हैं कि वह उमर म उसस कम है। लेकिन हमी पिछले धैत म एक बच्चा हुआ है।

बाहर घर घर धर करता हुआ स्कूटर सड़ा है।

जितेन सीढ़िया पर सटा धावाज लगा रहा है— 'सुन्ती नहीं, घरि धो चुड़ैल !'

मिन्नी हडबड़ाती सड़ी है। उसकी बोरी के हत्ये वाली प्लास्टिक की टोकरी नहीं मिस पा रही है। अब उसकी बागपत वाली भाभी उसका धाड पर डालेगी।

बच्ची बड़ी उचल-पुपल क परधान् बडी बठिनाई से कोपसे की रीती बोरी से दबी मिस जाती है। भाडू सगाते समय चायद मेहररानी की मेहररानी हूँ हो।

‘मइया व हाय कभी हमारे पर भय्यो ह भाभी !

मासती के अघर खुस पढते हैं— हां हां ! क्या नहीं !

मिन्नी के हाथ में घसी टोवरी पने की तरह घूमती जाती है— मेरे
बाबा कहते हैं भाभी कि अगर मैं पढ़ने में इनकीस नहीं रही तो मैं आगे
पढ़ूंगी नहीं ! तब साता-पीता अच्छा घर दूब कर मेरा व्याह हो जाएगा !

व्याह में तो आधोगी न भाभी ! मण्डू टिकू को भी सइयो हं !

मासती क्या बहे ! होले से हस देती है !

मीचे से फिर आवाज आती है कि गाड़ी का समय हो गया है !

बुईस क्या कर रही है !

मिन्नी उठावने में हाथ जोड़ने की तरह अपने दोनों हाथों की
पंगुलियां बेवस दूर से ही मिला देती है— अच्छा भाभी !

सोइयां उतर कर पन भर बाद पुन हांफती सौं आती है— मुई
याद ही नहीं रही भाभी ! यह जनन से घान म घरी बागज में

लिपटी बोई चीज निजामती है यह मइया का पोटू लिए जा रही हू
भाभी ! मइया से मांग कर—हां ! वहां अपनी सब्जा जिग्गी को

गितामाऊगी ! मण्डी पनोरा वाली भाभी को भी ! बुनमर में हमारे

दूर के लिपे के फूरा के सइवे जममर मइया भी ऐन मैन जिनेन मइया

अमे ही है ! हमारे पर बौठ आने-जाने हैं ! मरे कपों पर दोनों हाथ

पर कर जोर मे दवान है ! कहते हैं दगें तरे मामा पने हैं या कब्बे !

कभी-कभी व मुभ पढ़ाने घोर बज्जल घुमाने को भी कहते हैं ! तुम कहो

तो उनको भी दिगसाऊगी भाभी ! एक मांग म कह कर मिन्नी

तेजी म बनी जाती है !

रडूटर म पहन मिन्नी बटती है ! फिर जिनेन ! रडूटर का मुह छानने

छाद की घोर है ! इगतिण मानती की आर पीठ ! गिइरी क सीकषों

के छहारे लरी बर दग रही है !

रडूटर की आवाज बढ़ती है ! छोटे-छोटे दो लिपेने पहिए घूमत है !

गाड़ी काग निगमती है !

भी मिली नहीं।

'अच्छा' ५ ५ । लख्मी ताऊ ने अजीब ढंग की सूरत बनाई। तराजू में भर भर कर फिर घाना तोलने लगे और सामने खड ग्राहक के खुभे धले म फटाफट गेरने लगे। उन्हें फिर मरी उपस्थिति का भी भान न रहा— अ ५ ये लत्सा कित्ता गुड ! धुसी मूग की दाल पाव भर । अाटटा गनेशी-छाप अापने ताईं नही। फोक्टी का माल नही बेचते—समझे ! अये रामदीन के छाकरे ! अणा उठा, अट्टा ।

में चला गया ।

लख्मी ताऊ के इनतीते बेटे अम्बन और हमारे दास भया की कमी गहरी दोस्ती थी। अर्पों तक वे साप-साप पड़े बड और अवन थ। इसी कारण हमारे और उनके घरा में भी अाना-जाना था। कहन हैं अम्बन भया उगती तरुणाई म ही भगवान के प्यारे हो गए। तब स लख्मी ताऊ दास भया की और भी अधिक चाहने लगे थ। दास भया जब भी घर अाने लख्मी ताऊ स मिले बगर नही जाते थ।

पर दास भया मना कहां से अाने लगे ! अघरी सकरी गनी के घुमावदार मोठों से गुजरता हुभा सोचता रहा—

घर की फिअर ही उन्हें हाती सी इन पिछल तीन चार सालों में एक बार भी घर न आते ! पत्र भेज कर ही कमी सर-अबरन लन । —अकथं कते हैं ! अम्मा कमी हैं ! अाखें देखती हैं या नही ! बीमार सी नही रहनी ! सान को होता है या नही ! हम जीन हैं या मरते हैं ! —कमी भूल कर भी जानने की कोणिग न की उाने ।

और फिर अवन यह हाल ! नीकरी के यह ! बस का अरोसा नही ।—क्या होया !

जो उचअ-मा अया। पढ़ाने म भी मन लगा नही। किमी तरह न्नि अटा। दूपान का एक अण्टा पूरा किया। सणा की तरह उवभा उदास पर सीन तो दीया—संक धिर आई है। अरों म दीए जल खुने हैं।

पर अन्न कमरे में अभी तक भी अंधरा है रोज़ की तरह। अम्मा टिन की डिबरी अलाए रसोई पर में साग छोंक रही हैं। पप्पू जूता की ब्राह्मट मुनते ही अंधियारे में भागता हुआ मेरी घोर लपका। पांवों पर लिप टका हुआ बोला— अक्का !'

दास भैया का सबसे छोटा बेटा है—पप्पू। जो अभी तक भी तुलसा-तुलसा कर बातता है। बनका के बन्से अक्का कहता है।

मुस्मान की असफ़म चष्टा कर मैंने उस बांहों में उठाया और उसके पूल से दश उदाम भुंगड़े को घूम लिया।

तभी अम्मा बोल उठी— बिन्नु ! हाथ में अमकतो डिबरी लिए बाहर की घोर भाकने लगा, कुछ बुबुदाती, बढबहाती हुई। अम्मा को गुनाई और गिगाई कम देता है। दास भैया के बारे में सोचने-साधते कभी-कभी उम्ह न जाने क्या हो जाता है। यों ही अकारण लपककर बास पड़ती है—बिन्नु !

ध्यान दिया नहीं मैंने। पप्पू को गोश्री में लिए छत्र की सीडियों की घोर बड़ने लगा। तभी पप्पू ने अपनी नही बांहें मेरे गले में जोर से सवेर सी—अक्का !

देर तक टहलता रहा। कभी तारा की घोर कभी दूर ऊषाई ठक-पन अंधरे में विरे मुकेसिण्टम् क पेहों की घोर ताकता रहा।

अक्का हम पाला लगे ! पप्पू ने तारा भग की।

अक्का।

अक्का हम माया बेटा है। साथ को सोते नहीं ।'

अक्का।

जिरी बटनी है अक्का सोने दे साथ मूप जाती है।

हां राग रुठ जाता है ।

"साथ लपका कैउ है अक्का ?

मैं क्या जवान देना। कुछ कह कर टालता हुआ घुर हो गया।

पर पप्पू घुर न रह गया।

क्षण भर बाद फिर बोल उठा— भक्ता, हमाली पृथो बिल्सी का मुख काला है ।

मैंने सहमति प्रकट की । सिर हिलाया—हां, है ।

वह जूय बोलती है न भक्ता ।

“हां ।

‘निंदी कहती है जो जूय बोलता है उछका मुख काला होता है । मैं जूय नहीं बोलता न भक्ता ।

हा तुम बहुत सच्चे हो । मैंने उसके भ्रूखे वालों को सहलाया ।

पृथो दूद पीती है भक्ता ।

हां बहुत बुरी है पूसी । दूध पीती है न ।

मैं भी दूद पियूगा भक्ता ।

हां तुम भी पियोगा ।

इत्ता-इत्ता पियूगा ! छब पियूगा ! छब ! उसने अपनी दाना बोनी बांहें फला दी ।

हा हां कहकर मैं मुडर पर जा बठा । सभी तक भी निगाहें ऊध ऊधे दानवकार युक्तलिप्टम् के पेड़ों पर टिकी थीं । जा अब घोर घन घोर बान हो आए थे ।

पप्पू गो ी से उतर कर फग पर खेलने लगा । बौने म कुछ बौयले बिगडर पड़ थ । उही से हाथ कास करन लगा । थोड़ी देर बाद गोदी पर भा लपका । दोनों बाली बाहें जोर से गल म सपेट मर मुह की घोर ताकने लगा— भक्ता !

बाहों की छाप गन्ने पर छत्र गई । बमीज का बालर फालिग स पुत घाया । रुमाय से यों ही पोंछ-पाँछ कर फिर टहलने लगा । फिर मुडर पर बठ गया ।

मीच स सभी खासने बा-सा स्वर सुनाई दिया । भ्रुक कर भांका तो स्पष्ट कुछ दीक्षा नहीं । मरे बमर म भव घुपली-सी त्रिवरी मन्नक रही थी । मटमला प्रकाश था—धीमा । गृहास से पिरा जता । ऐसे

धमराव धमरा रोम हो रुमर में दिया बाल देती है । फिर नई बात क्या !
 मैं निश्चिन्त बना रहा । धमराव म बठा-बठा न जाने क्या-क्या
 सोचता रहा ।

तभी फिर सांसने की सी आवाज आई ।
 पगू भी इस बार मर साप नक कर देखने लगा ।
 धमरा आज घस म आई धापा ।
 'बीन धापा ? उल्लुबठा म पूछा ।
 पगू खर रहा ।
 रुद धापा ?
 "निर म ।

बी—न ? मैंने छोर मधिक जिजासा स दुहरापा ।
 उमन धमरा मन्हा मा फिर हिला लिया कि वह नहीं जानता
 बीन है ।

तरी दीगी बहूँ गई ?
 दिरी । मरते लिम्बो क घस ।

मै उमका हाथ धाम जल्ने-जल्दी सोझियां मांधन लगा । धमरा ने
 बठमाया भी मटा बीन धापा है । धापा छोर मामा हूंगे । उन्होंने ही
 जाने की विगत था । धोर बीन होना ।

निरउ धमराके विवाह पकम कर होने स धमर युवा । देसा—
 दिबगी की धार पीठ लिए, हुसीं पर पवि पयाण गरदन मराए कोई
 क्या है । धाली म धमरा है । गिररु का घुमा छत्र की धोर उठ रहा
 है । मामा जी ठा गिररु पीठ नहीं । दास भमा धमरा नहीं
 मयत । तो निर—

मै धीरे-म या ही मांभा । तनिक धागे की धार बड़ा तो देसा—
 दास मया नक हा दास भमा धमरा मूदे बीन है । हीनें पर गिररुट घटकी
 है । मरी उदाहरित का एा माक भी मान नहीं है ।

देसना रहा दास भमा की धोर—

घाँसों गडबे में घसी हैं। दुहरा मोटा चश्मा नीचे की ओर मुका है। गौरा दूध-सा धुला रंग उठ कर स्याह पड़ गया है। दाढ़ी दिनों से बनी नहीं। हँसे बाल सफेक हो गए हैं—कपास की तरह। पपड़ी सगे मोठ भिचे हैं। पतकें मुदी हैं। सिगरेट अपने आप मुलग रही है। धुप की हल्की-सी लकीर ऊपर की ओर उठ रही है हवा में कापती।

चाहकर भी दास भया को जगा न पाया। दबे पाँव हाले में कमरे से बाहर निकल पड़ा। दरवाज फिर बंद दिए।

दास भया कभी किसने ठाट वाट से रहते थे ! मजसनी सिल्क की कमीज नीली काट्राई की पण्ट चमचमाते जूते मुह पर कँवस्टन दवाए जिघर निकस पड़ते लोग देखते रह जाते।

वही दास भया आज ऐसे भिचे भिचे बैठे हैं बुझे हुए। सरीर निधुड़ा हुआ। चेहरा—‘दयनीय कातर’। कपड़ गए बीते भले कुर्बाने—सिन्धुबे हुए। क्या ये वही दास भया हैं !—हठिहयों के डबिचे मात्र। मन साब मनाए, मानता न था।

‘अम्मा तुमने बतलाया भी नहीं दास भया आए हैं ! वे तो सुना, सुबह ही भा गए थे मेरे जाने के घोड़ी ही देर बाद ! गिनायत के स्वर में अम्मा से जब पूछा तो वे कुछ भी कह न पाए। अम्मा की घाँसों आज अधिक लाल हैं। अधिक भीगी। यह ठीक है कि रसाई में घुसा अधिक है। अम्मा को दिलसाई कम देता है। घाँसों में पानी भरता रहता है सेजिन !

अम्मा की ओर देख न सका। लोट कर बरामदे में टहलता रहा। कमरे से तमी फिर सासने की घामाज आई। पप्पू को गोदी में घामे छपर बड़ निकसा।

दास भया जग गए थे।

दाए भर दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। कोई कुछ न कह पाया।

“कब आए भया ? अनापास मुह से निकल पड़ा।

दास भैया उस नाद से जगे। उचक कर ऐसे देगने लगे मानो स्पष्ट कुछ दीखना न हो।— 'बीन मु पाई स' उनके मुरमाए घोठ फटने।

'मुवह बी गाबी से पाए क्या ?'

'हां।'

'चिट्ठी भी नहीं भेजी ! डाकिए का राह दमते-खते बक गए ।'

'।'

'मामा जी का जवाबी पत्र मिला ?'

'हां।'

'धम्मा जी इधर बुगार धमिल रहता है। दमा भी बड़ गया है ।'

'।'

पत्नी मोड़ियो पर विमत पडा था। बनाई की हड्डी टूट गई। छोटे मामा जी ने अपने घर से जाकर इलाज करवाया। यहाँ तो सरकारी अस्पताल में साय पानी तक नहीं। प्राइवेट के लिए पस ।

दान भया बोल कुछ भी न पाए। बेबन धुप देखते रहे।

बमरा मुनमान रहा।

पत्नी दानों बाहें बम कर सपेट सामने बैठ मजदूरी की ओर जिजासा से दग रहा था। मोना धरनी सम्बी घोठी का पन्सा दाँत से दबाए दरवाजे के सहारे लड़ी थी। उसकी माँ की कुछ बधी-बचाई धोतियाँ हैं, जिन्हें धर वह इन्तमान कर लती है।

'पत्नी परवानका नहीं पाया बी ! तू से समझ कहा ?' कने बीन मर किया बाठबाठ का सिनगिमा टोटोने के लिए।

पत्नी मरबा-सा घावा। एक बार उठने मेरी ओर देसा। फिर निगाहें नीची कर सी।

बमरे में फिर धमक उठता रहा, देर तक। भैया की पशुनियों के बीच धरबी धरबी से धमिक निगरेते बत कर राग हो गई। सम्बी

राख की सफ़ेद सकीर अभी तक भी गिरी न थी। पप्पू अभी मेरी ओर देखता अभी सामने की ओर। नीना अगुली में रस्सी की तरह बट कर धोती का पल्ला लपेट रही थी। पाँव के अगूठे से बिना बात मिट्टी का फग खुरच रही थी।

‘नीना तू कहाँ खती गई थी ? वह घुटनभरा सन्नाटा सहा नहीं जा रहा था। अतः मैंने बड़ी ताकत लगा कर कहा रखे कण्ठ सूखे स्वर में ‘पापा आए हैं। सांझ के समय तो घर पर रहना चाहिए। देखो न, लिया भी दर से जला। शायद अम्मा ने जलाया होगा। नहीं तो अभी तक भी अंधरा रहता।

प्रत्युत्तर में नीना से कुछ भी कहा नहीं गया।

थोड़ी दर परवाह अम्मा ने चौके से आवाज सगई तो उठकर चला गया।

देख तो बिन्दू को भूल लगी होगी। सुबह भी कुछ खाया नहीं। रोटिया अभी बन रहा है। तू बाप में खा लीजो हा।

नीना घाली नजर आई तो एक बार दास भया ने उसे पूरा दवा— सिर से पाव तक। घोने कुछ नहीं। यों ही रोगी तोड़ कर निवाले निबलने लग। बाच-बीच में गन से नीच उतारने के लिए पानी का सहारा सना भी न भूलने। ध्यान उनका रोटिया की ओर नहीं माने की धार नहीं न जाने कहीं और था।

दो-जान रोटिया बनी मुश्किल से तोड़ी हागी। खाया प्रनयाया कर, रूमान ग हाथ पीछ कर बठ गए और सिगर के बस खींचने लगे। अथमुनी आथा में छत का ओर उड़ने हुए गुए की मागी-मोगी पारदर्शी बाथी लबोंगों की ओर देखने लग।

मैं खान बटा तो अम्मा अभी तक भी बहे जा रही थीं—बिन्दू ने सुबह भी नहा खाया और दाम भी। खाना नहीं खाएगा तो त-दुदरती बनेगी बग। तभी तो गूस कर कांटा रह गया है। रग ही बाला पड़ गया है। अब आया तो पहचाना ठर नहीं। सब बिन्दू को क्या हो

मया है ।

इतने ज़िंदा वाट पास मया घर आए । लेकिन घर म कुछ भी परि बत्तन बही भन्नकता नहा । वही रोज धी उगासी । वही रोज का मूना पन । मोना बसो ही चुप । पप्पू बसा ही चुप । धम्मा धव बिलकुल भी धोतती नहा ।

लगता है इन तीन चार सालों म दाम भैया बूढ़े हो गए । बहरे पर भुरियां फिर आए हैं । दासा म सफेगी । बमर भुकी-भी । शरीर सूखा सा । खाते समय धैने दवा हाथ की उमरी योगी नमों क तार साफ भन्नक रहे थे । हड्डियां साफ दीग रही थी । पपहे भी ऐसे ही गए-गुजरे । बिस्तरा तक साथ नही । सब दास भया मया बरत हैं ।

मिट्टी से पुनी, पुए मे पीली पडी दाबारों की धोर दखता रहा । पपू गोनी म ही बठा-बटा सो गया है । मोना बाहर बठी कुछ सिल रही है । धम्मा रात क जूट बत्तन भांज रहा है सांगती हुई । दास भया गुण-न बठ हैं । मैं बग हू ।

मया साफ बग्न हुए दाम भैया के भिवे हाट विचिन गये—

पपू इकुल जाना है ?

हां ।

तम उयो पाठगाना म पढ़ाने हो ?

हां ।

तुमन फिर प्रायत रमनदान ता पाग नहा रिपा गाना न ।

धैने फिर लिताया— नही ।

सो पाठ लगी हो धोरधारिक उगरी उगरी बातों के दास दाम भैया बुर हो गए ।

गुरह उगरे गए—तम भया की चारपाई क नाथ मिगल क था । धपका गइ ह उगरे विगरे पड़े है । रात नर प बरवते बग्नते र । एव दास उगरे छा पर नी गए । फिर मोट बर गाए मही ।

घुपू अधिपारे में सोने की तरह सिगरेट की भाग कभी खमकती, कभी मडम पड़ जाती ।

पहन अम्मा रोज कहती थीं—बिन्नु एक बार कभी घर आए तो उसके वच्चे उसे सौंप कर गया नहा लूं । मम्मा बुढ़ापे का भरोसा क्या ! किसी घड़ी भासैं मुद गई तो इन सबका क्या होगा ! तबिन उसे तो कुछ फिकर ही नहीं ! रत्ती भर भी फिकर होती तो एक बार घर न आता ! दो चार पैसे ही कभी वच्चा के लिए नहीं भेजता ! परदेस कौन नहीं जाता पर या कलेजे पर पत्थर बांध कर भला कौन बैठता होगा ! ऐसे—वेड़े जैसे वच्चे ! वह है कि न जाने क्या विराम ले घटा है ! किसी दिन जोग न ले ले !

अम्मा फिर मेरी ओर देखती— एक तू है !—गुमसुम बग्न रहता है डन की तरह ! बिट्टी भी नहीं गेरता ! तू बिट्टी देता तो क्या वह जवाब भी नहीं सोचता ! बिन्नु को मैं जाने हू ! मम्मा निठोर तो कभी न था ! भला अपनी कोस की सन्तान के लिए ! कहत-कहते अम्मा की भासैं निराधार शून्य पर अटक आती ।

फिर छपर छोड़ दिनों से अम्मा रट लगाए थीं— बिन्नु का पत्ता तू जाने है सुगील ! मुझे पहूचा दे । एकाध महीना वहाँ बट जाएगा । सतो की काबी कहती थी कि उपर जमनाजी पास हैं । कभी नहा भूंगी—अपने बिन्नु के परसाद । कौन जाने वही मर पडी तो जमनाजी में तो बहा ही देगा ! पर ऐसे धन्न भाग कह !

अम्मा के मरिस्तक म तिन रास मुवह ताम घाठों-पहर दास भैया के बारे म ही विचार उमडत रहने । अम्मा की दग्णता का कारण केवस दास भया हैं । तितनी बार सभभाया—बुभाया । मैंने । मामा जी ने । लेकिन फिर—बिन्नु बिन्नु ! !

माने के विण चौंके पर बटना तो हर रोज अम्मा भाजी परोसती रोगी बेपत्ती दान छौंकी मुद्दुनाती गहनी— मैं मर जाऊगी तो मेरे बिन्नु

बच्चों का क्या होगा रे मुसीबत ! अम्मा फिर मेरी गम्भीर आकृति का भाव ठाड़ जातीं। चुन हो जातीं। पर दूरमे ही दाए कह उठतीं— बिन्दू गाने का क्या करता होगा। बसे ही बिन्ता सापरवाह है। लोग कहते हैं गांव-गांव घर घर पूमने फिरने की नौबरी है। कौन जाने बंसा मुनब है। कौन उमकी रोजियां मँबता होगा। कौन देख देख करता होगा। बसा ही भूया पढा रहता होगा।

घोर फिर घावों पोंछनी घनजाने दुहरा झालती— क्या पता नौबरी है नी या नहीं। बही या ही तो फिरा नहीं करता बाघर। बमी भाए तो पूछू। सचिन !

दाग भया को भाए अब इतन रोज हो गए। पर अम्मा ने एक बार भी पूछा नहीं। एक बार भी कहा नहीं। कितनी बार दास भैया के कमरे में जाती है पर बस सौं घाती है। घावों मूँ फेर एवान्त में घनने घान बढबड़ाती रहती है। अकारण घनने से बाँठे बरती रहती है। हुमेगा की तरह गुबह होनी है। दिन बलता है। रात फिरती है—

गांव-गांव बर। दाग भया जमे घाए बसे नहीं घाए। कोई बदभाव नहीं नहीं। बही उगाती। बीरानी।

पाठाना की परीघाएँ अब समीप हैं। टयूगनों में भी इपर अफिक समय देना पडता है। गुबह निबन जाता हूँ तो मूनापन रहता है पर पर। घोर रात को बही मगान की मी उगाती।

दाग भैया बिननों गिनों की छटिया में घाए ! अब तो बापा घर्मा हो गया।—मैं सोबना सोबता एक दिन पर सौं रहा या। अन्तर पडुषा ही या कि पन्नु माग्जा दूषा घाया। पाँवों पर जोर मे लिपट पडा—

घनने उम लेगी में उगाया ही या कि वह फिर बहता—घ-ब-बा।

उमका बर भोगा-गा या। गूरत—उनीगी—रमाई भरी।
बनों बग दूषा है। उमने बिगरे बावों को संगुतियों म ग्बारेते हुए दूषा। पर बह बोना नहीं। बापे में मुह छिनाए चुनबाप रो पडा।

क्या हुआ ? मैंने आश्चर्य से पूछा । इस बार वह बोलने के बन्ने और जोर से फवक पड़ा ।

क्या हुआ नीना ! पप्पू को किसने मारा !—सूने ।

नीना बेसन से सने हाथ लिए नगे सिर बसी ही रसोईघर से बाहर निकल आई । काना हमने कुछ नहीं कहा । दीए-स्वर में वह बोली— सुबह सिगरेट के बिसरे टकड़े बटोर रहा था । फिर चूल्हे से भाग जलाकर कोने में छिपा धी रहा था । पापा ने धमकाया तो रोने लगा । सुबह से अभी तक इसने खाया नहीं । केवल भक्का भक्का कह कर रोता है । पापा ने कितना मनाया । पसे लिए । लेकिन इसने छुग तक नहीं ।

‘ भ्रच्छा, तो यह बात है । हमारे पप्पू बेटा को हमारी गरहाजरी में तुम सब लाग पीग करते हो न ! अब किसी ने हाथ उठाया तो बुरी बात होगी । नीना सा भया के लिए रोटी ! कहता हुआ मैं छत पर चला गया । पप्पू अभी तक भी सिसक रहा था गोपी में बैठा ।

मैं रोती खिला रहा था तो वह एकाएक उचक बठा— भक्का, उछने माला उछने भक्का ! पप्पू मरे मुह की ओर गुस्से से ताकता हुआ बोला ।

किसने मारा राजा बेटा को !

उछने ! उसने मीच कमरे की झार इशारा किया, उछने !

पाप बहुत बुरे हैं न ! हमारे राजा बेटा को इस तरह मारा करते हैं ।

पापा बहुत बुले हैं—भक्का ! वह फिर मिसक पडा हम सोची नहा दोगे । डूग नहीं दोगे । व बहुत बुल हैं ! बहुत ! जार से बह रो पडा ।

बडा मुदिबल स मनाया । रोती खिसाकर फिर निकल पडा बाहर । एक टपूगन अभी और पूरा करना था ।

भाग भैया अभी तक भी भात्र सीट न थे । मुना था सुबह निकल

गए थे, बिना खाए ही। अम्मा अभी तक सुबह भी रोनी सैबे बैठी थीं।

सोंग तो बाफा रात हो गई थी। अम्मा बतन मात्र चुका थी। नीना बाहर गार्ड पर पड़ती-पड़ती, किताबा म माथा टिकाए दुलक पठी थी। दाम भया क कमरे से बोलन की-सी आवाज आ रही थी। त्विरो धुंसा उगन रही थी।

'तू हमारे साथ चलोगा ?

'ना।'

'तुम्हें सब नहीं मारेंगे—हां।'

' !

'नीना के साथ रोज स्कूल जाता है ?'

हां।

'नीना म भगड़ठा तो नहीं ?'

ना।'

'तुम दूध मिलता है ?'

'ना।'

'घरनी ममी की याद नहीं घाती कभी ?'

' !

'कभी नहीं घाती ?'

' !

'कभी भी नहीं !'

' !

निष्ठनी रात म आगमान पिरा है। गुरमर्द बापन अखिर धन ननों है। तिर भा बरतन क आगार तो अलकडे ही है। मयह दया रि कही कही कूठ बँदाबानी-जा हो रही है। पाठशाला की परीक्षाएं प्रारम्भ हो गई हैं। पर में पडा नहीं। बापना म इके गुरम का भगंगा क्या।

अ-श-अ-श-अ-श पर करके डालकर जूते पहन रहा था। तभी "मुनी

सुसी ! कहती अम्मा कमरे में चली भाइ ।

बिन्नु भाज जाने को कहता है । अम्मा की आवाज भर्रायी थी । क्या भाज ही चल जाने को कहते हैं ? तनिक विस्मय से मैंने पूछा ।

हाँ ।

तो शाम की बस से चले जाएंगे ! जल्दी क्या है ! तब तक मैं भी लौट आऊंगा ।

'यही तो कह रही हूँ । मानता नहीं । आहत स्वर में अम्मा बोली, 'बस बनला देता तो रास्ते के लिए चबना बना देती । अमी के लिए कुछ खाना तयार कर देती । लेकिन वह तो जिद पर है । भूखा ही चले जाने को वहे है ! अम्मा का स्वर आद्र था । आँखों में अजब-सी बेबसी ! अजब-सा मूनापन ! जो अथ और भारी हो आया था ।

तदमे बांधवर दास भया के कमरे की ओर बढ़ा । लेकिन कमरा खाली था । फिर छत पर देखा । दास भया घोती पहने मगे बदन आँखें मीचे मुँह पर बठ दातून कर रहे हैं । सामने पानी की बाल्टी है । सोटा तीलिया है । लेकिन उन्हें सुध नहीं ।

"दास भया ।

दास भया ने दातून के छिलके धुक्ते हुए आँखें खोली । उनका चेहरा भाज सच ही बहुत भारी था ।

'शाम या बस सुबह की बस से जाकर नहीं हो सकता ! अम्मा कुछ चबना बना देंगी । भूखे जाना भी ठीक नहीं । शाम तक मैं भी लौट आऊँगा । बसे बस तो मेरी भी छुट्टी है ।

दास भया धैरे मुह की ओर ताकते रहे । अच्छा ! मपा-मुला सगिप्त-सा उत्तर दे के चुप हो गए ।

दूसरे दिन सुबह जैसे ही सितबट-पड़े बपड़ों से ढके दास भया तीमार लड़े हो गए । अम्मा ने पी पटने से पहले ही जग कर रखोई का काम शुरू कर लिया । पणू भी सतर-बटर मुन कर भाज और दिनों से पत्नी

जाग गया था। नगा ही चींके में घुसकर गुमसुम बैठा था। टुकुर टुकुर बड़ी-बड़ी आँखों से सब देख रहा था। नीना प्रम्मा का हाथ बढ़ा रही थी।

जहाँ तक बन सका प्रम्मा ने आज के मारी चींके बनाए जो दास भैया को पसन्द थी। रागता था। सावुत उरद की दाल थी। कुछ तले पापड़ थे। बड़िया थी—जिनमें दास भैया के कारण नमक ज्यादा छोड़ा गया था। पर दास भैया ने दो-तीन टक्के मुश्किल से तोड़े होंगे। यसे ही खाने का स्वांग कर हाथ धोया घोर बाहर भा गए।

कमरे में लड़े-खड़े छत की घोर न जाने क्या ताकते रहे। दास भैया तयार तो हो गए, पर जाने का खरचा है भी या नहीं। मैं बाहर लड़ा सोचता रहा। असमजस में हुआ कुछ भी निर्णय न कर पाया।

“दास भैया पते हैं?” बड़ी मुश्किल से मैंने पूछ ही लिया। सहसा मुट्ठकर मेरी घोर देखा उन्होंने, क्या तुम्हें चाहिए?” यों ही घपर घुल-से घ्राए। पीले पीके दांत थोड़े-से चमके। फिर मिच गए। मैं हस पड़ा। नहीं तो! मेरा मतलब खरचे से है। आपके जाने के।

वे कुछ बोल न पाए। लड़े देरते रहे। सोचत रहे। फिर मेरी घोर देरते हुए विसियानी मरी मुखान होंठों पर खाने की खेप्टा करते हुए बोले—तेर पास है कुछ पचे। शायद कम पढ़ेंगे। दास भैया बड़ी मुश्किल से बह पाए—इतना मात्र! चहरा प्रबोध बालक की तरह था—निर्बिचार घाल सहमा हुआ।

दूगान से मिल बीस दार बचे थे। जो रागन बाले के लिए रख छोड़े थे। वे ही दो मोट मैंने सन्दूब से निबाल कर भागे बढ़ा दिए। पर खरचे के लिए कम पढ़ेंगे तो। नहीं, नहीं! खरचा खल जाता है। पस घोर है। दासते हुए मैंने बहा। घोर बहता भी क्या!

सुसी ! कहती अम्मा कमरे में चली धाह ।

बिन्नु धाज जाने को कहता है ! अम्मा की धावाज भरौयी थी । क्या धाज ही चले जाने को कहते हैं ? तनिक बिस्मय से मने पूछा ।

हाँ ।

'तो धाम की बस से चले जाएंगे ! जल्दी क्या है ! सब तक मैं भी लौट धाऊंगा ।

'यही तो कह रही हू । मानता नहीं ! धाहत स्वर में अम्मा बोली, 'कस बतला देता तो रास्ते के लिए खबना बना देती । धमी के लिए कुछ खाना तैयार कर देती । लेकिन वह तो जिद पर है । भूखा ही चले जाने को बहे है ! अम्मा का स्वर धाद्र था । धासों म धजब-सी बेबसी ! धजब-सा मूनापन ! जो धब धीर मारी हो धामा था ।

तमने बाधकर दास भया के कमरे की धोर बड़ा । लेकिन कमरा खाली था । फिर छठ पर देखा । दास भया धोनी पहने नगे बदन धासों मीचे मुडेर पर धँठ दातून कर रहे हैं । सामने पानी की धाल्टी है । सोटा लौलिया है । लेकिन उन्हें सुध नहीं ।

दास भैया !

दास भया ने दातून के छिसके पूकते हुए धासों खोली । उनका बेहरा धाज सब ही बहुव भारी था ।

'धाम या कल सुबह की बस से जाकर नहीं हो सकता ! अम्मा कुछ खबना बना दोगी । भूसे जाना भी ठीक नहीं । धाम तक मैं भी लौट धाऊंगा । वसे कल तो मेरी भी छुट्टी है ।

दास भैया मेरे मुह की धोर टाकने रहे । अच्छा s !' नपा-नुला सगिप्त-सा उत्तर दे के चूप हो गए ।

दूसरे दिन सुबह धसे ही सितबट-पडे कपडों स ढके दास भया तैयार सड़े हो गए । अम्मा ने पी पटने से पहले ही जग कर रसोई का काम शुरू कर लिया । पन्पू भी सटर-पटर मुन कर धाज धोर न्तिनों से जल्दी

भाग गया था। नगा ही चौके में घुसकर गुमसुम बठा था। टुकुर टुकुर बड़ी-बड़ी झांझों से सब देख रहा था। नीना अम्मा का हाथ बटा रही थी।

जहां तक बन सचा अम्मा ने आज वे सारी चीजें बनाई जो दास भया को पसन्द थी। रायता था। साबुत उरद की दाल थी। कुछ तले पापड़ थे। बढिया थी—जिनमें दास भया के कारण नमक ज्यादा छोड़ा गया था। पर दास भया ने दो-तीन टुकड़े मुश्किल से छोड़े होंगे। वैसे ही खाने का स्वांग कर हाथ घोषा और बाहर भा गए।

कमरे में खड़े-खड़े छत की ओर न जाने क्या ताकने रहे। दास भैया तयार तो हो गए, पर जाने का खरचा है भी या नहीं। मैं बाहर खड़ा सोचता रहा। असमजस म हूँ कुछ भी नियम न कर पाया।

“दास भया पसे हैं? बड़ी मुश्किल से मैंने पूछ ही लिया। सहसा मुहकर मेरी ओर दखा उन्होंने, भया तुम्हें चाहिए?” यों ही अघर खुल-सा भाए। पीले पीके दांत योढ से चमके। फिर मिच गए। मैं हस पडा। नहीं तो! मेरा मतलब खरच से है। आपके जाने के!

वे कुछ बोल न पाए। सड़े देखने रहे। सोचने रहे। फिर मेरी ओर देखने हुए लिसियानी मरी मुल्तान होंग पर ताने की बेला करते हुए बोले—तेर पास हैं कुछ पस! घायल कम पड़ेंगे! दास भैया बड़ी मुश्किल से बह पाए—इतना मात्र! चहरा प्रशोध बालक की तरह था—निबिबार घात सहमा हुआ।

दूपान से मिल बीस दए सब थे। जो रागन बालक के लिए गये छोड़े थे। वे ही दो नोट मैंने सद्बुत म निबाम कर घायल बदा लिए। पर खरच के लिए कम पड़ेंगे सो!

‘नहीं नहीं! खरचा चल जाता है। पैस चीज है।’ राजन हुए मैंने कहा। ओर बहता भी गया।

परिणति

•

वितस्ता ने खानी के बेल-बूटे वाले रंगीन भारी पर्दे रिंग पर एक घोर समेटे तो देखा—दूर गेट के पास कोई छाया-सी खड़ी है। व्यस्तता के कारण उधर अधिक ध्यान न दे पायो। यों ही देखा-धन्येया करके ब्राह्मण-रूम की घोर खनी गयी। उसका मन घाज न जाने क्या इतना भारी उदास है। वहीं भी जी सगाए लगता नहीं।

नाहन की प्लेटें सगी थीं। भदर्ई बाघे पर गमछा सटकाए घटे घदब से ठहर-ठहरकर गिमासों में जल भर रहा था। एक भी बूद घोखे-से टैबिल-बलाय पर बिसरी नहीं कि उसे बड़ी घालीनता के साथ गमछे में समेट लेता।

बिरन्तन ने समाचार-पत्र परे रखते हुए एक हल्की-सी घगड़ाई ली। छपर-उधर देखा तो निगाहें वितस्ता पर ठहर गयी। सामन की कुर्मी पर यह गूंपी-दुलहिन की तरह होंठ सिये चुप बंठी है। दोनों कुहिनियां मेज पर टिकाए ह्येतियों में छोड़ी धामे धारें मूटे पता नहीं क्या सोच रही है। हम तरह से जब कभी वह किसी भाव में सीन रहती है तो

उसकी यह भगिमा चिरतन को बहुत प्रिय भाती है ।

वितस्ता घर-बाहर का साग काम-काज जानती है । कला के प्रति उसकी अभिरुचि है । यह बहुत मीठा गाता है । सितार बहुत अच्छा बजा लेती है । अपने भयमुदे भयरे कमरे में जब कभी सांभ के समय यह, तमम होकर तारों को छेड़ती है तो प्रशान्त मातावरण में एक सहर-सी दौड़ जाती है । एक भजीब सी वेदना कण-कण में घ्याप जाती है । घण्टों तक पता नहीं कि कब तक उसकी सगमरसर-सी सफे तरासी हुई बायेन लम्बी नाजूक जगलिया तारों को सहलाती रहती हैं । धीरे धीरे हवा धम जाती है । जगलियां ठहर जाती हैं । सितार के मनमनाते तार धपकपाना छोड़कर सांस साधे रुक-से जाते हैं । वितस्ता गरदन झुना लेती है । माथा सितार पर टिबा देती है । सब उसकी भावृति भाव-सूय हो जाती है । एकदम प्रतिभा की तरह घान्त । बिलु दूसरे ही क्षण ज्याहो गरदन ऊपर उठाती हुई ओर से पसर्ने मीचती है कभी-कभी सूद भर सारा पानी माखों से उतरकर गालों पर बूलक पड़ता है ।

सब कितनी विचित्र है वितस्ता ! चिरतन क्षण भर उसे देखता रहा । फिर हीले-से कुर्सी से उठकर उसके पीछे खड़ा हो गया । उसके कन्यो पर चिरतनी घघगीली सटों को सहलाता हुआ, उसकी भासों की गहराईयों में कुछ टटोसने लगा ।

वितस्ता ने भी उसी भाव से गरदन ऊपर उठाया तो चिरतन ने सामने गिरा बाँध अपने दोनों हाथों में भर लिया— क्या सोच रही हो बिनो ?

वितस्ता ने केवल चिर हिनाया— 'जी, कुछ भी नहीं ।'

'कुछ तो !'

ना ।

"बुर ! घुप !" बहटा हुआ वह और रुक गया और अपने घघकते होंठ उसके रनितम कपोनों पर रखने ही वाला था कि कभी दरवाजे की निगोड़ी बॉम-बेल टनदुनाई । भयकथाकर, सग्टकर दोनों बाहर की ओर

मानने सगे जैसे कही खोरी न पकड़ सी गयी हो ।

मदई टिकोजी से ठका टी-पाट साता-साता ठहर गया । साहब को वहीं उठकर देखने का बप्ट न हो अत स्वयं मसा ही दरवाजे की ओर मुखा ।

‘ कहिए !

मिस्टर चिरन्तन हैं ?

आइए ।

मदई ने जैसे खाना-पूरी की । वैसे ही झूह सटकाए कहा । वास्तव में मदई को इस आकृति में सनिक भी नवीनता नहीं दीवती । अकसर यक्त-वेयक्त इसी तरह घण्टी बजती है । नाहनोंनी माँ में निपणी पस हाप में झुलाती लिपिस्टिक-मुते अथरो से मुस्कराती कोई गिडिगि घाती है और यद्यक चिरन्तन के कमरे में चली जाती है ।

चिरन्तन के विवाह के बाद आज बहुत दिना पचात् यह पहली बार घायी है । अत आकृति में कुछ असमजस का अस्पटा भाव है । पावा में अनिश्चितता । वे सधे ढग स आत्मविश्वास के साथ आग बड नहीं पा रहे हैं ।

आइए ! आइए ! चिरन्तन न आगे बढ़कर स्वागत किया— ‘कम इन ! आप दोनों का परिचय करा दूँ ! आप हैं कुमारी जुबना और आप यानी कि यानी कि आइ मीन ।’

‘सम्भी सम्भी ! कहकर सामने खड़ी कुमारी ने वितस्ता की ओर मुस्कराकर देखा । अभिवादन किया और बड तपाक में हाप मिलाया ।

टथिल पर सीनों बटकर बड़ी घतकान्सुफ बातें करने लग । वितस्ता कुछ कम बोनती अपने स्वभाव के अनुसार पर चिरन्तन और जुबना साहित्य से लेकर सकस तक हर टापिक पर देर तक निस्तबोध बातें करते रहे । वितस्ता को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कोई नारी किमी पर गुरप से अपनी स्पष्ट बात कर सकती है ।

किसी काम के बहाने उठकर वितस्ता दूसरे कमरे में चली गयी। माई की गमलों पर पानी देने और पत्र को साबुन से धोने के बारे में कुछ हिदायतें देती रही। फिर रसोई घर में घुसकर सारा काम स्वयं देखने लगी।

धुए के कारण उसकी आंखों में पानी भर आया। आचल से पलकें पोंछती जब वह ड्राइंग रूम की ओर लौट रही थी कि उसकी आंखों के आगे बिजली-सी कौंधी। उसके चलते पांव एकाएक ठहर गये—एनदम बेतना गूँस हो गये।

जुरग चिरन्तन की बाहों में धिरी धीं धीं और वह उसकी काली विसरी जुल्फों को हाथ में समेटे ।

तीनों प्राणी—जो जहा पर थे वही पर मुन्न सड़े रह गये। न चिरन्तन कुछ बोला न जुबेदा कुछ कहने का माहस जुटा पायी और न वितस्ता ने ही कुछ कहने की आवश्यकता अनुभव की।

राम की चिरन्तन का मन घर लौटने को न था। फिर भी वह लौट रहा था। अनेक आंखें उठ रही थीं। वितस्ता से सामना कर पाने की हिम्मत न थी। मुन्न के अपने व्यवहार से वह बेहद धुन्ध था। उसे स्वयं पर झुमसाहट ही रही थी कि वह क्या अमर व्यवहार क्या कर बठा। विवाह हुए अभी जिन ही कितन बीते हैं! फिर ऐसी हरकतें क्या शोभा देती हैं! इतनी बड़ी नींजरा है इतना बड़ा जिम्मेदारी का मोहदा है दान है शोहरत है भागी नाम है। फिर यह! वितस्ता क्या सोचती होगी! उसने म्यान पर बाईं ओर होती तो क्या माचती!!

उमने जब घर की देहरी पर पाव धरा तो चारों ओर रोज की तरह सनाटा था। वितस्ता अपने कमरे में बितावा के दर के पास खिन्ना रहना रही थी। दर की एक हलकी सी सहर बापु में पुन घुमकर एक बीतरागी कारण-दृश्य रच रही थी।

दरवाज को खोलने की सक् और सीमेंट के पत्ता पर जुठा की

आहट से वितस्ता की सन्न टूटी । वह लपककर घागे बड़ी । हुनेगा की तरह मुस्कराती सामने खड़ी हो गयी । बोली— 'बड़ी देर कर दी आज !

चिरन्तन धूप था । कुर्सी पर बठा ही था कि वितस्ता उसके पांवों के पास पंज पर बठ गयी । जूते के तनम खोलने लगी । फिर निविचल स्थान पर जूते रखकर कुर्सी के सहारे उसके सामने खड़ी हो गयी । बोली— 'तबीयत तो ठीक है न !

प्रत्युत्तर म चिरन्तन स कुछ भी कहा न गया ।

वितस्ता उसके ठण्ड माथे को अपनी गरम हथेलियों ने सहलाने लगी— इतनी रात बाहर रहते ही सभी तो सेहत खराब रहती है । मैं न जाने कब से लिबकी पर लठी-लठी प्रतीक्षा करती थक गयी । किताने उलटने लगी तो मन लगा नहीं । सितार भी कब तक बजातो !

चिरन्तन अपलक उसकी धोर दलता रहा । न मासूम एक साथ कितनी परछाइया वितने भाव वितने विचार अन्त से उभर-उभरकर धूप-छांव की तरह आए धोर प्रोम्न हो गये ।

अभी तक भी चिरन्तन को धूप देखकर वितस्ता उसके धोर समीप विष भायो । उगने धुपराने बातों को छन्न की तरह उगमियों में सर्पन्ती बिछोष्टी रहा । फिर सामने खड़ी, उसकी टाई की गांठ खोलने लगी— 'कितनी धोर से बांधते हैं आप ! गरम में दर्द नहीं होता !

।

'बसो उठी न ! खा सो । कब से पडा-पडा ठण्डा हो गया । कितनी मेहनत से आज धूप ही सग्री खरीदकर लायी, खुद ही बनायो । पर सब ! वह चिरन्तन का हाथ धामे उटाने लगी ।

चिरन्तन को इन सब की कल्पना तक न थी । न वितस्ता धर पर बठी बठी थी । न धर में भयेरा था । न उसके धर पहुंचने ही वह बिकरी । न उसने रोठ हुए ही यह कहा कि सुनिए, मुझे मेरे मँके पहुंचा दीजिए ।

इसक ही लगना था तो फिर ब्याह क्यों किया ? किसी एक की जिन्दगी से यों खिलवाड़ करके आपको क्या मित्रा !

पर वितस्ता चुप थी। उसकी निर्विकार सुघात सुनिश्चित भ्रातृति की भोर वह न मालूम इस तरह से क्या देखता रहा। और फिर पासतू पशु की तरह चुपचाप उठा और पीछे-पीछे चल दिया।

निवाल लोड-लोड कर, भवाघ शिदु की तरह वितस्ता उसे खिलाने लगी।

तुमने खा लिया ?

जी हाँ लूगी। इतनी जल्दी क्या है। पहले भाप लीजिए न !”

चिरन्तन का निगाह घड़ी की भोर मुठी— तुम्हें खाकर सो जाना चाहिए था। खाना भर्त्सित खिला देता था मुजानो। इतनी जल्दी काम काज समाप्त करके घर चली गयी क्या ?

क्यों खिला देती जी कोई—होते हुए मरे। वितस्ता कहकर भी कह न पायी। नेवत बुन्दुदाकर चुप हो गई।

चिरन्तन ने बौर के साथ-साथ दो-तान धार उमकी पलासधीन-सी पतली नाजुक उगनिया भी काट डाली। अन्तिम घास के साथ वह धाररत स मुम्करता हुआ वितस्ता के होंठों के पास मुह ल गया तो वितस्ता चौंकर कर पीछे हट गयी। चिरन्तन के मुह स धाराव भी बन्दू था रही थी।

क्या हुआ ?

‘जी कुछ नहीं। वितस्ता हम परी। वह हसी उसके दिन को धीर कर पता नहीं किस गहराई से निकली थी।

सोते समय वितस्ता उसके माथे को सहलाती रही। चिरन्तन के मन में न जाने कौन-सा ज्वार उमड़ रहा था। न जाने कौन सा क्रमागत उसे भकभोर रहा था। शायद उसके अन्तःकरण की अपराध भावना उसे मप रही थी। शायद वह हीन न थी— ‘तुम बहुत मोठी हो। हो न ! वह बुन्दुदाया— लेकिन जुवेदा तुमसे भी ।’

वह पग धी । चिरन्तन मी ।

क्या जी वह आपकी बहुत अच्छी लगती है ?

हां ।

क्या सासियन है उसमें ?

सासियन ! वह बड़ जोर से बढ़े मड़े ढग से हसा— कोई जवान हो । उस पर लहकी हो । उस पर खूबमूग्त हो यह क्या कम है ! तनिव एक घर निरन्तन बोसा—सायन अब यह बिलकुल हीन मे न था— शी इज रिपला स्वीट ! वह बड़ मोहन ढग से मुस्कराती है हमती है बातें करती है चलती है । उसके चिक्ने सुडोल गोरे दागीर में साप की बँचुनी-भी बारीब नाइनाँन की फिसलती हुई भाड़ी खूब फबती है । बड़ धार्मि रिपन ढग से स्मोक करती है । बस हॉस और शरावी निगाहों से देखती हुई धम्पेन के । मोह शी इज रिपली स्वीट ! उसने जोर से बिनस्ता षो धपनी और लीचा जैसे मामन बितस्ता नहीं जुवेन ही हा और फिर धालें भूँ जोर से उसे घूमता हुआ पुमफुसाया— स्वीट ! तो स्वीट ! ! तो स्वीट ! ! !

सबिन दूमरी और बितस्ता का मन धीन्वार कर लटा । वह धसी ही बेबस पकी रही । चिरन्तन जब एक घर सा गया तो वह शील से अपने कमर म गयी और फिर सारी रात सितार उसकी बाहों म लिपटा न जाने क्यों राना रहा ।

सुरह फिर ताजे पना की तरह बितस्ता ताजी थी । बड़ प्यार से उसने चिरन्तन को जगाया । बित्तरे पर ही बाँकी का गरम प्यासा उसने होंग म लगाती हँ बोनी— दलिए आप बित्तन सापग्वाह हैं ! एक तो आफिम म काम बहून रहना है दूगरे रात को शेर तक जागते रहने हैं । इसम नेहन तराब न जाती है । दसो न आपका धाँसे रिन्नी सात है—गुनी हुई । बितस्ता पास ही मेज पर रसा पीशा उसके सामने तक साधी । पर चिरन्तन पीछ की ओर नहीं कबल उगड़ी

आकृति की ओर दखता हुआ हस पडा। वितस्ता की समझ में कुछ न था। चिरन्तन ने शीशे का मुह वितस्ता की ओर कर दिया और कॉफी का गरम प्याला उसके हाथ से घाम लिया।

वितस्ता सचमुच वितस्ता लगती न थी। उसका चेहरा बेहद सूजा हुआ था। आँखें गुडहल के फूल की तरह सुख थीं।

लगता है रात भर जागता रही ?

‘नहीं तो !

फिर ?’

‘फिर क्या’ का ही हसने का प्रयास करती वितस्ता न कहा—
‘‘मेरी आँखें इधर बहुत कमजोर हो गयी हैं न ! तभी तो थोड़ा से ही धीत में मूज जाती हूँ।

चिरन्तन ने दो ही घूंट में प्याला रीता कर लिया। वितस्ता ने फिर कोई बात न की। केवल चुपके से रीता प्याला उठा कर चली गयी। बाह्य-रूम में आन्मन्द शीशे के सामने अपना प्रतिबिम्ब तोड़ने लगी— सचमुच उसकी उदास आँखें भर पड़े की तरह सहसा छनछना भापी। अपनी को सम्हालती हुई वह गांधी चाय रूम गयी। बिचाइ भीतर से बाहर कर खूब जी भर रोती रही।

अन्त में, हलारी हाथर नया पोकर बदन बालकर जाने की मेज पर आयी ता दया चिरन्तन का स प्रतीक्षा कर रहा है। गंध-दूध में अमन्त गिगरट के डेर घारे टूट-टूबड़ तर रह है और अपनी तक वह अगातार घुमा उगन रहा है।

उसे दमते ही चिरन्तन का गूह ब न गया— आज तो तुम बहुत खूबगूरत लग रही हो। पूरी की पूरी सिगरट जान ऐग-दूध में डुबो जाती और फिर भट छगी चम्पन सरर डवन रोगी के अथ तिके टकड़ा पर मनखन की मोटी मोटी परतें चगने लगा— ‘आज तो एकदम अल्ट्रा पाइल नउर आती हो। बनर-नस नालॉन का स्वीचिज नाला। नालॉनी साडो, इतना बाराक पना-कोट पहने हो और इतनी गहरी

लिपिस्टिक कि जुबेन भी पानी भरन खली जाय ।

वितस्ता साज से सिकुड़ कर चौपाई रह गयी ।

डॉन जानती हो ?

वस जानती तो नहीं । आप कहेंगे तो सीख लूंगी ।

चिरंतन फिर सिगरेट जला चुका था । घुए के गाल-गोल छम्ले एक के बाद एक छल भी धीरे उठान लगा । वितस्ता प्यालियो के दूध बाल कर फिर चम्मच से उह हिलाने लगी । आज ठण्ड कुछ पधिक थी । इसलिए उसका वदन कपकपा रहा था ।

चिरंतन के मुह से सिगरेट छीन कर वितस्ता न अपने रंगीन अघरों पर लगाया । एक कम जोर से साचन हुए कहा - वह उस ही पीनी है ! कहिए न अब तो आपको अच्छी लग रही । सभी खांसी दुरु हुई । वह इतनी जोर से इतनी दर तक लगातार खासनी रही कि उसकी आंखों में पानी भर आया । किन्तु दूगरी धीरे चिरंतन ठहाने लगाता रहा ।

चिरंतन आफिम जाने लगा तो आज वितस्ता उस छोटेन शर तक गयी । जात समय अपनी नाजूक उमरियां हवा में हिलाती हुई बोनी—
दलिए आज आफिम से सीधे घर आइएगा । बनब जाना चाहन तो मैं भी साथ चलूंगी ।

हू । कुछ बड़ने लगी तो वितस्ता की आवाज उभरी अनुपान से ऊंची हो आयी उस चिरंतन को कुछ कम सुनार्या पडता हो आज आपसे कुछ बहुर जरूरी बातें करनी हैं । टीक छह बजे पहुच जाना हा । ' वह सपक कर धीरे पाम खती आयी । उसक कंधे पर नुकीती हुई बोनी—
नि भर अकेली बगी-बैठी वोर हो जाती हू । यदि नि म कभी आपको फोन कर लू तो आप डिस्ब ठा न होंगे । बुरा तो नहीं मानेंगे ।

साम की चिरंतन आफिस से उठ कर सीधे घर चला आया । बिठस्ता पलकें बिछाए पाच बज से ही द्वार पर खडी थी । चिरंतन की

देखते ही उसकी उदास आँखें धमक उठीं। वह लपक कर भागे बढ़ी और उससे लिपट पड़ी।

पास ही भदई फूला में पानी द रहा वह सब देव रहा था। अतः उसकी ओर दृष्टि जाते ही वह शम से लाल हो लपक कर भीतर चली गयी। भदई भी अपने को कीमती पानी का फव्वारा धामे दूसरे कौने में लडा हा गया।

वितस्ता न एक वन्दुत सुन्दर कलात्मक नया धलवम उसके सामने बढाया रालीवठ वठ क्या करती। आपक वरस में कितने सुन्दर-सुन्दर फोटो यो ही पास बूढ की तरह ठुसे थे। सोचा उह ही ठीक कर दू।

उह दन्त ही चिरन्तन को कुछ कहत न बना। बढ मौन भाव से, दाशनिक-ढग से पने पलटता रहा। ये व चिथ ये जो उसकी पूर्व प्रमि काधो ने अमित-स्नह के साथ कभी समर्पित किये थे।

कोई नारी ऐमा व्यवहार भी कर सकती है वह सोच नहीं सकता था। पर यह वितस्ता नाम की लड़की वस्तुतः क्या है—उसकी समझ म न धाता था।

‘इहे देख कर तुम्ह ईर्ष्या नहीं हुई?’

ईर्ष्या क्यों हो भला। बड़ महज भाव से वितस्ता कूने सगी— ‘जो आपकी प्रिय है व सध मुझ भी प्रिय है। जिन्हें आपने अपने प्राणों से भी अधिक चाहा मरे लिए उनका मून्य मेर प्राणा से भी अधिक क्यों न हो। गिवाह की बदी पर परमात्मा को मागी रख कर मने सौगंध लाई है कि जिस ढग से आप सुधी रह जो आपको अच्छा सगे लसी को अच्छा मान कर आपसे चरणा पर बडी, जीवन-वयन्त आपकी सेवा करती रहूगी। मरी सुगिया का सारा ससार आप पर कन्तित है— बेवस आप पर!’ वितस्ता की आवाज भारी हो गयी।

दूसर दिन रविवार की छद्नी थी। चिरन्तन सौन म बेंत की बुसियां हाल घूप सेंकता हुआ मगबीना के पने पलट रहा था। और पास ही वितस्ता उसक लिए रोएँदार मुसायम ऊन का पूरी आस्तीन का

स्वटर बुन रही थी और बार-बार घड़ी की ओर देख रही थी।

भाज भी आपको आफिस जाना है ! सच कह रहे है !

हाँ, तो S !

मैं सोच रही थी, भाज आपके पसंद की डिश बनाऊंगी। भाज घुप में बठे हम दोनों साथ-साथ भोजन करेंगे।”

चिरन्तन वैसे ही पन्ने पलटता रहा।

कभी-कभार एक दिन मुझ भी तो दीजिए ! केवस इसी दिन की इन्तजारी में अपना सारा सप्ताह किस तरह से गुजारती हूँ आपको क्या पता !

चिरन्तन की ओर से उत्तर इस बार न आया तो समझौता करती बितस्ता बोली— अच्छा तो शाम को जल्दी आइएगा हाँ !

शाम को ! चिरन्तन ने गरदन उठा कर ऊपर देखा और ऐसे कहा जस पहली ही बार मुन रहा हो— शाम को भी समय कहाँ मिलेगा ! जोनल कमटी की मीटिंग कभी कभी तो रात के आठ-नौ बजे तक चलती रहती है। फिर !

इस फिर का बितस्ता के पास कौन-सा समाधान हो सकता था। धत यह घुप हो गयी और चिरन्तन भी समय पर गाड़ी लेकर आफिस चला गया।

बितस्ता का यह केवसी से लगा अकेलापन बहुत भावने लगा। वह अकेली ही अपने आप में जूझती भगदनी रही। कभी उमका मन रोने को होगा। कभी अपने बाना को नोभने को। लेकिन फिर एक आशा की गुनहरी सहर-सो दीड़ती और वह घुप हो जाती। उमे इस पर ही कुछ कम मन्तोप न था कि घना इतन त्तिना में चिरन्तन में कुछ तो परिवर्तन आ ही गय है। धीरे धीरे एक त्तिन पूरा ही बदल जाय तो क्या आनन्द ! जुबन का एक बार भी उसने नाम लिया न था और न कभी हल्की याचें ही कही थी और न कभी सोचने में ही अकारण बल विम्व किया था।

पर वह बैठी-बैठी क्या कर । हर तरह में खीझ कर अब वह पीठ के बल विस्तरे पर लेटकर छत पर नटके रंगीन लाल बल्ब की ओर देख रही थी । आज सितार बजाने को मन न था । न फूलों को सजाने को और न पुस्तकों को पढ़ने या घर के किसी और काम-बाज में ही ।

तभी कमरे के किवाड़ प्यटके । वह चौंक कर उठे इससे पहले ही बिन्दा हुयेली में भरी प्लेट घामे लड़ी हो गई— कहिए श्रीमती वितस्ता देवीजी एम० ए० अर्थशास्त्र आप किस कल्पना नगरी में विचरण कर रही हैं ? बिन्दो ने सदा की तरह धरारत से अजीब-सा मुह बनाया ।

बिन्दो उसकी वचन की सहली है । यही पास ही सी स्वयायत म, पीसी-बोठी की मालकिन है । मालिक देश विदेश में इम्पोर्ट एक्सपोर्ट का घंघा कहते हैं और यह घर पर अकेली रहती है । खूब पमे और खूब वाम-बच्चों वाली है । किसी किस्म का कष्ट नहीं । वचन से ही खुशमिजाज है । मिनतमार है । इसलिए जब भी समय मिलता है कोई न कोई काम का महाना बनाकर स्वतः ही चली जाती है ।

वितस्ता सहसा विस्तर पर ही उठ बठी । सामने बिखरे बालों को परे हटाती हुई बोली— भरी बठी न ! यह क्या ले भाभी ?

अचार तुम्हारे लिए ।

क्यों ?

भरी भोलो !' हाथ नचाते हुए बिन्दा बिलकुल पास ही सटबद बठ गयी— हमने छिगाती हो रानी ! अर्थ तो अचार खान को मन करने लगा होगा न ।

अचार खान को ! क्या ?

'अब ! मम साहिबा य बनाने वाली बातें किसी और से करना । हम सब जानते हैं । वह हस पड़ी ।

अगि क्या जानती हो ? बाइर्गॉड में समझी नहीं !

सच बिली तू तो एकदम निरी निरी ही है री ! उसके मुह पर भीठ अचार की एक फांक ल जाती हुई बोली— सच तू कभी इतनी सुनर सगती है कि बस खूमने की जी चाहता है । सन्धी तू पुरुष्य हाती तो मैं तुझ स ही धानी करती !

दोना बिलपिला कर हस पडी ।

थोडा अचार बाहर से मगाया था । कुछ पल बाद सयत होकर बिन्दो न कहा— सोचा तुम्हारा सेयर तुम्ह दे आऊ । मुन जब जरूरत पडे निस्मकोष कहना । तुम्हार लिए तो मैं अचार का कारखाना तक खुलवा दूगी ।

बिन्दो मुस्कराती हुई उठ खडी होती है— अरी सुन तो ! देख, आज मदई से मालूम हुआ कि साहब आफिस गये हैं । हम भी अकेले हैं । यही साच कर सिनेमा के दो टिकट मगा लिये । ये देखो ! उसने अपने ग्लाउज म से मुड तुम्हे दो टिकट निकाले और सामने की ओर बढ़ा लिये ।

बिलस्ता असमजस में सोचती रही— ' उनसे पूछ बिना !

अधम ! तो क्या गजब हो जाएगा कालिग ! तुम्हार साहब सात घाठ म पन्ने सौटने क नहीं और हम छह स पहल ही घर पर हाजिर ! फिर ! ' बाह्र पकड़ कर बिन्दो ने उम पसग पर से उटाया— जब देखो सब पसग पर ! अरी पलग क्या इतनी अच्छी सगती कि ! ब्याह तो सभी क हाते हैं पर दुनियां का भी तो कुछ लिहाज कर ! '

उम मुह भीचकर हसती देग बिलस्ता भी अपनी हसी रोक न पायी ।

बाइरगॉड म बिलस्ता का कही भी जाने को मन न था । सविन यह जोक की तरह ऐसी बिपन्न गयी कि

जाने जान बिचर शुरू हो चुकी थी । हाल में अधियास छा गया

था। सामने के सफ़्त पर्दे पर डाकघुमण्ट्री बठी तेत्री से किमल रही थी।

थोड़ी देर बाद फिर अमली पिक्चर प्रारम्भ हुई। वितस्ता ने देखा आज छुट्टी का दिन होने के कारण हाल खवाखव भरा हुआ है। लोग छुट्टी के मूड में हैं। कितन ही दम्पति साथ साथ बठे सिनेमा का पूरा पूरा आनन्द ल रहे हैं। बाह्य में बाह्ये डाने—बीच बीच में फुसफुसा रहे हैं। मनापाम खिलखिला रहे हैं। और एक हैं—उसके पति जो छुट्टी के दिन भी आफिस जात हैं। जोनल कमटी की मीटिंगें जिन्हें भाये दिन खाये जाती हैं। जस आफिस क चलवा जीवन में उनके लिए और कुछ है ही नहीं! सामने तीसरी बतार पर बठे एक दम्पति पर उसकी निगाह ठहर गयी। अभी अभी अंधरा होत ही जिन्होंने बड़ी मदा से एक दूसरे को किस कर लिमा था।

वितस्ता के सारे शरीर में सुरसुरी-सी फल गयी। पिक्चर वहाँ से शुरू हुई कहां तक पहुंच गयी—उसे फिर कुछ पता न चला। लेकिन इण्टरवल में ज्यों ही सहसा प्रकाश फला उसकी मुदी पलकों खुलीं जैसे वह नींद में जागी। अचकचाकर उसने बिन्दो की ओर देखा और फिर सामने तीसरी बतार में बठे दम्पति की पीठ पर पलकों गड़ गयीं और खुली-की-खुली रह गयीं।

चिरन्तन बगल की सीट की पिछली पाटी पर दूर तक अपनी बाहें फैलाये बठा था। बाह्य की सीमा रला पास बठी जुबान क दाहिने किनारे के कंधों तक को पर थी। चिरन्तन मुस्करा रहा था। जुबेदा भी बालों में पीस फूल लोंसे मुस्कराकर चिरन्तन को भाँलों ही भाँलों में पीकर 'कोका' की बुकिमा ल रही थी।

वितस्ता ने पाँवों तसे धरती छिसक गयी। सारी की सारी छत टूटकर उसके सिर पर गिर पड़ी। वह गिर-दद का बहाना बना कर सीट से उठी और सीधे घर की ओर निकल चली।

राम को चिरन्तन काफी दूर से लौटा। वितस्ता आज रोज की

वितस्ता ने आसुओं से भीगा मुखड़ा ऊपर उठाया— लेकिन देखिए मैं ऐसा न करूंगी । अपने पावों के पास धाही-सी ठौर द दीजिए । वहीं पर यही रहकर जिनगी गुजार दूंगी । कभी उफ तक न करूंगी !
वितस्ता जोर से फूट पड़ी ।

विरन्तन ने उस बाहो में समेट कर उठाया । उसका आसुआ स भीगा मुखड़ा हीरों से छुआ और अपनी हथलियों में छिपा लिया ।



नई बात



जब कहा ध्याह की बात न चली दरजा दस तक पठान लिखान के बाग भी सायकता मिद्ध न हुई घौर बियग होकर घर बिठलाना पडा—घोर घर बग-बठ भी बदनामी होने लगी तो घग्ग बल्लभ उपरती ने अपनी बहन बंता को पहाड स दिल्ली भजन को लिख दिया ।

गरमिया क गिन ये—तपते । मरी दुपहरी । सू के पपड़ो के बीच, ब्रह्मा-दुपका साइजिल सवार हांपता हुमा विनय-नगर 'मिन मारकीट' की घोर गुजरना दीसता ।—घौर घासमान न कोई घाल महराती कीवे बांय-बांय कर गग्गी नानियों म मूखी घोंच डूवोत तो—एव—गरमी में लिपटी घुपनी उदासी घाग घोर बिसर जाती ।

घग्ग बल्लभ घनुप का डोर की तरह, गले में जनेऊ डाल मात्र घण्डर-धीयर पहने, अपनी आल जैसी खुसी खीली बांस की सटिया पर गिरा—कमती का हिसाब जोड़ रहा था (हर महीने पाष-बांय रूपए जम कर परस्पर घ्यात्र पर लगा कर, कृष्ट अपने को कृष्ट समझने बासे घपरा-सिया तथा घर्षामाव में बिसबिलाने पर भी अपनी पोंठ निमोरेने बासे—

वितस्ता ने आसुघो से भीगा मुस्रठा ठपर उठाया— लेकिन देखिए मैं ऐसा न करूंगी । अपने पावों के पास थोड़ी-सी ठौर न दे दीजिए । वही पर पड़ी रहकर जिन्दगी गुजार दूंगी । कभी उफ तक न करूंगी ।’
वितस्ता जोर से फूट पड़ी ।

विरन्तन ने उसे बाहों में समेट कर उठाया । उसका आसुघा से भीगा मुस्रठा होने से छुआ और अपनी हथलियों में छिपा लिया ।

नई बात



जब वहाँ ब्याह की बात न चली, दरजा दस तक पढ़ाने लिखाने का काम भी साधनता मिट न हुई और बिना होकर घर बिठाना पड़ा—घोर घर बड़-बैठ भी बटनामी होने लगी तो चन्द्रा बल्लभ उपरती ने अपनी बहन बती का पहनाह से दिस्वी भजन को लिपि दिया ।

गरमियों का दिन था—तपत । भरी दुपहरी । सूँक थपड़ों के बीच, इतना-दुबका साइकिल सवार हांफता हुआ विनय-नगर मग मारकीट की ओर गुजरता पीसता ।—और आसमान में कोई चाल मढराती कौब काँप-काँप कर गन्दी नालियों में सूखी बोंब डुबोते तो—एक—गरमी में लिपटी धुपली उदासी चारों ओर बिसर जाती ।

चन्द्रा बल्लभ धनुष की डोर की तरह गले में जनेऊ बाने मात्र घण्टर-धीयर पहने अपनी जाल जसी खुली ठीसी बांस की सटिया पर गिरा—कमटी का हिमाव जोड़ रहा था (हर महाने पाच-पाँच रुपए जम कर परसदर ग्यात्र पर लगा कर कुछ अपने को 'कुछ समझने वाले अपराधियों तथा अर्थाभाव में बिलबिताने पर भी अपनी पोंठ नियोरने वाले—

सजातीय बघुओं ने अह-नुष्टि के लिए इस व्यवस्था का नाम कमेटी रखा था)

इस अगले महीने की पहली को सेवा-नगर हीतविष्ट के बवाटर में 'कमेटी थी।—बट्टा बल्लभ गुरु कहलाने तथा गत माह से दफ्तरी से तरकी होकर जूनियर-बलक होने की बजह से सिवरेटरी था।—उसे अपना हिमाब ह्यातसोंग को नियत समय पर सोचना था। ताकि मीटिंग ठीक चल सके। किन्तु सवा-सेरह धाने का जोड़ मिलता न था। इसलिए बार बार वह अपने छोटे से कपाल पर पेंसिल का कुन्दा ठोक रहा था।

चार मरियम बच्चा की मा उसकी धरम पत्नी—गोविंदा जिसके गारे गाला पर 'छोए पड गए थे जिसकी गोदी पर लिपटा पसाले से नहाया नगा बच्चा दूध भिमोड रहा था—उप रही थी।

तभा यादर गली पर हाक की सी भाबाज भाई।

अबबचाते हुए उसने मुना—कोई पत्रा बल्लभ पुकार रहा है।

जाफरी ने छेना से भापा एक सांगा रपता रपता माड पर मुठता खता खिताई लिया—

देखत ही धावें फल-सी भाइ उसका— द व मारी बेति जसी !—देखो तो हो ! मछली की तरह धावें पति पर स किमल बर नीच की घोर डूब गई—

बन्ना बल्लभ हाथ का बागज हाथ में धामे मुनीमा की तरह पन्सिल बान में पाप कर हवाहाता इभा सग हुआ। अजीब सा पन्ड्रा से बाठ की स्लेटी रग की जाफरी ने बर्गाकार धर्नों के नीच—दोना हाथों की अगुनिया का गोन धरा बनाए इग तरह दसन लगा, जस टाट बच्चे दोन्दा पस में बाइन्वोप के बबस के भीतर भांसे हैं।

सांग की धगसो सीट पर सांग धान की बगन न धोवी के गट्टर की त ह बतती बटी है। पिछनी सीट पर टुन बना पाया का सीट पर समट, सहम-स पाल्थी मारे बठ हैं।

तांगे वाला नेतकी का हाथ पकड़ कर बड़े जतन से उतार रहा है।—कहीं गिर न पड़े ! बेटी बहकर उसकी पीठ पर हाथ फेर रहा है।

बन्ना बल्लभ को यह भ्रष्टा न लगा। तजी से वह नीचे उतरा। हिकारत की नजर से तांगेवाले की ओर देखा। पमे चका कर मुह काला किया।

बन्ना बल्लभ ने फिर कना को प्रणाम किया।—चरण छूकर। फिर कुतुब मीनार की तरह खड़ी नेतकी को देखा—जो भव पहले की तरह बच्ची नहीं मरी-पूरी औरत सी लगती थी। उसने पाव छुए तो उसे अजीब-सा लगा।

दोना मोटे मोटे हाथों में मोनी मोनी लाल बूड़ियाँ। विनास मांसल शरीर में छोटी सी घोनी—टलना के ऊपर तक उठी।—बड़े मद्दे ढंग से पहनी—घहरों में ऐसे पोह हो पहनव हैं।

बारगाँ पर पसरत हुए बन्ना ने अपनी मैली-बुचनी फनी गरम टोपी बर गौरव एवं आत्म विश्वास के साथ उतारी और अपने ऊपर उठ घुटने पर रनी—

दिनी स्वरग है मार बन्ना ! तुम लोगो के पिछल जनम के करम हैं। हमन ता गहूँ क खहूँ में पड पड उमर जिता दी। तरे परसाद आज यह न भा ल्य लिया ह।

बन्ना बल्लभ न बयना अनुमय वा।

माय बक गहूँ होंगे बन्ना !

न हो मुझे तो मुरादाबाद से किसी क घसत के ऊपर बटने को डोर मिल गई थी। पर हमारी बति परमान नहीं। गाड़ी में बभी बड़ी नहीं थी—माँच लगता सिर घूमता था।—उम पर भीड़ के रल-पेल में दबी रही। आदमी पर आदमी था। यहाँ उतरल समय बहती थी—'हाड़ दुस रहे हैं बन्ना ! मितटरीवाला से इन्ना सबासब भरा था।

कका ने अपने दोना पांव दूर तक तनकाए । दसो अगुलिया एक दूसरे पर कच्ची की तरह फसा कर सिर के नीचे पट्टी की तरह तान कर रख दी—

अपने गगान्त की सड़की का कुछ पता चला हो ! सुना दिल्ली में थी ?

कमसुका डराईभर कहने से ।”

कका ने घर की तरफ की बहुत सी बातें बतलाई । यह भी कहा कि मिलटरीबालो ने रानीक्षेत्र के पास एक औरत क साथ बम्पली की । औरत बरुचे पर थी—मर गई । सरपच हम लोगों के घडे से बाहर है । एक दिन कुल्हाड़ी उधाकर हमें मारने को भाया था ।

अडा बसभ भाषा हिलाता रहा चुप । बेतकी गिलनिलाती हसती अपने छोट भाई सदिया को इतने जोर से धूम रही थी कि उसे बीच में टाकना पडा ।

शाम को भोजन के लिए ठन कका जब कपडे उतार योगी पहन कर थोक पर बिराज तो उन्होंने पहाड-मुराण की चातो का टेली प्रिण्टर फिर सोल दिया—

गाव-नाक म मोटर सड़क बन गई है हो । बलोक बाने मर गए हैं । हमने भी अपने घर क दो कमर बिराण पर लगाए हैं—चौह रूपए पर । तीन बलोक के बाबू रहते हैं । कमी-कमी घर म ही सा लेते और रात को समय मिनने पर हमारी बेनि को भी पना दिया करते थ । —वे बिचार न होत तो कसि दस साल म भी दफा दस पास न कर पाती । अपन हाथ से कलम पकड पकड कर निशाना मियाते । अपने पीने स पिताक-काम सारीद कर सात । उस अलमोन्धिया बाबू ने तो बड़ी मन्त की । बेनि जाने और बह जाने अब देगो पढ़ाने म । हमारे इधर आती बेर कहना था बेति को दिल्ली म ले जाओ हो चचा, यहीं परादभेन पागु करवा कर बलोक की मोकरी में मया देगे ।

खूब तरक्की करेगी। सुख रहेगी। जसी हमारी बहिन है वसी यह भी है ।

‘हमने सोचा केति दिल्ली जाएगी तो हमारी भ्रानन्दी का भी सुघर जाएगा। वह भी पढ़ लेगी।—बिना पढ़े भ्रव शहरों की तरह गांव घरा में भी बर मिलना मुश्किल है। जमाना ही बदल गया हो चद्रा !

भ्रानन्दी चन्द्रा बल्लभ के ठस बना परमानन्द की बड़ी बेटी है। ठुल कका को उसके भविष्य की भी चिन्ता है।

‘हमारी भ्रानन्दी भी भ्रव सपानी हागी । रोटियां बेलती गोबिन्दी ने घुघट के भोट से कहा।

द न पूछो ! इस पाच गते पूस को उसे सत्रह पूरे हुए हैं। लेकिन सगती ज्वान-भ्रमान है। हमारी केति से इक्कीस होगी, उन्नीस नहीं ।

पढ़ती है न !

फराफर पढती है। पटवारी-मेशकार भ्राने हैं तो उनक सामने बैठती है। बातें करती है।’ कका घासलेट से घुपडे फुलके एक के बाद एक निगलते रहे।

चद्रा बल्लभ अपनी भोर के अधिक नहीं किरफायत से बोलता है। यह भी भ्राज घोटो सपेट कर चौके पर बठा है।—नहीं तो ठुल कका घर जाकर घरम-इबने की बात कह कर बदनामी करेंगे।

हाइ इसकूल खुलने से गाव में बड़ी तरक्की हो रही है।—जसो घर घर से लौटने पर सुना रहा था । चद्रा बल्लभ ने कुछ कहने के लिए कहा।

‘तरक्की-तरक्की तो क्या होती। यार, शहरों की तरह गावा में भी ‘लोफर’ भर गए हैं। गुण्डा-गर्दी मच रही है। ग्राम-देवियों के तो किस्से ही भौर हैं ! कका ने सेर भर का सोना सिर से दूर ऊपर तक उठाया। फरने की सी लम्बी धार गटा-गट गले में घेरते रह। एक ही सांस में लोटा रीता कर दिया। किर भोगी मूछा को पोछते हुए निवाले तोड़ने लग।—

तेरी चिट्ठी जब पिछले दिन आई तो हमने गांव में भेसी बांटी । सब कहने थे—भौलाद हो तो ऐसी हो । सेरा-बामो का लडका होनहार निकला । दफतरी से किसक हो गया । पटवारी के घरावर तनखा पाता है । कुर्सी पर बैठकर कनम चलाता है ।

अपने 'होनहार' होने की बात सुनकर चंगा धन्नभ मन ही मन बहुत मगन हुआ । उसकी पत्नी का चेहरा भी एकाएक खिन्न उठा । भले ही भाकिम म अभी तक भी वह पहल की तरह चिपिया ही चिपका रहा था ।—किन्तु लोगा के बीच एक आदर का स्थान तो बन ही चुका था ।

वह सचमुच मोम बन गया भव । खुशाम के सहजे में बोला—
क्या आपन तो कुछ खाया नहीं ? आहार कम हो गया क्या ?

आहार बाहार तो ठीक ही है चंगा । क्या ने परम विराग स कहा— पर भव शरीर म सुस्ताई जैनी घा गई है हो । कसी बुदाली खलाई नहा जाती । जजमानी से जमता क्या है । नोन-तेल का भी पूरा नहीं पड़ता । इन कपामो के ऋण से उच्छ्रण हो जाता तो जगनाथ जी का पुन मिल जाता ।

हुन क्या न पापाण गिला भी बठी बेतबी की घोर देखा । जिस अभी तक भी रोज क धनक लग रह थ । जो अभी तक भी सारी बस्तुधा को धचरज से देख रही थी ।

बेति, कँसी खगी लिन्वी ? क्या ने खाने के बाद हाथ पोछकर सींक से दांता को कुरेदने हुए पूछा ।

बेतबी बतीमा दिखता कर फी इ इ कर बिहम दी ।

नीं न आई चंगा बल्पभ को । 'कमटी का हिसाब छ मत्तर हो गया था । भव समझ्या थी—बेतबी की । उसने उमग म धावर लिन्वी धान को निरत ता लिया था पर यहाँ आकर बोन-सी समस्याए उठ लड़ी होंगी—साधा न था ।

अपराधियों के बलास पौर बवाटर म एक जाफरीदाता कमठ सेकर

पिछने सवा साल से गुजारा कर रहा था। दूसरे में कोई रोहतक की तरफ का छोटा था—भकना। भव एक ही कमरे में सात आत्मी कैसे रहेंगे ! एडे के साथ कस निभेगी ! वहीं कुछ बात हो पडी तो—जमाना बिगड बना है ! किसी का भी ईमान नहीं !

सुबह नहा धोकर ठल कका ध्यान में बैठे। चन्द्रा बल्लभ राशन व दूधिए का हिमाय जोडता रहा। आने वाले महीने में गुजारा मुस्किल था।—उस पर ठल कका क आने-आने का खर्चा—सी छलग !

वह सोचता था कमेटी से कुछ पस निकाल देगा। परन्तु सत्तर का पिछला ककाया गत तीन महीने से उतर न पाया था।

हहो चन्द्रा बल्लभ ! पूजा के आसन से उठने के बाद ठल कका को जैसे कुछ सहमा याद आ पडा— यहाँ मुना है पुतलीधर है ! तेरी काकी के घाघरे के लिए दस-बाहर गज किरप तो मित्र ही जाएगी न !

चन्द्रा बल्लभ ने सिर हिनाया—केवल !

चाय का हाथ भर लम्बा गिलास कका ने हाठों पर तगाया— वार, कुछ कपड बगड मिलवा देना हो—हमारी कति के लिए।—देसी फसन के। वहा समय ही नहीं मिला। फिर गाध-गराम म मिलता भी तो महंगा है ! दुकानदारों ने लुट्पोन मचा रखी है। जितना मुह म आया उतना दाम वह देत है।

कका ने चाय के साथ धाढी भी मुलगा ली— पहार म जुनम भकाल पडा है हो चन्द्रा ! एक समय याने को भी राशन नहीं मिलता। लोगों को लाज रक्वता कति हो गया है। चीनी की दान तो दूर रही लोगों को बीमार के लिए बांस मिसरी तक मुहम्म्या नहीं है। तू भव कुछ घर वाला की मन्त कर हो !

चन्द्रा बल्लभ पाठशाळा के विद्यार्थी की तरह हर धान पर सिर हिनाता है।

घाम को स इन्डिल पसिन्ता कमेटी की मीटिंग के बाद घर

सोटा—यहद हारा पका हुआ । बवा छोट लच्छू को लिए मारकीट' गए हैं । अभी तक लौटे नहीं । बेतकी बाहर चारपाई पर मगरमच्छ की तरह सटी है ।

इनके लच्छन भले नहीं हो ! गोविन्दी ने पति के कानों पर पुसफुसाते हुए कहा ।

क्यों ? सांचय चन्ग बलम ने देखा ।

'इनकी बकसी म चिट्टिया ही चिट्टियां भरी पड़ी हैं । पता नहीं किस की ।—बेशरम बाप लिखी है ।

चन्द्रा बल्लम ने कुछ कहा नहीं । किंचित आगे सरक आया—
किस की है ?

क्या पता ? मुह-जले बलोक धालों की होगी । इमकूल के मास्टरों की हागी । धनिए की गुल्लकी तरह बकसी भरी पड़ी है ।

जमीन घसने लगती है—उसने पावों से ।

मुनो तो ! यह और पास आई— कसा बेशरम जमाना हो गया है । किमी स कहना नहीं—!

एक अजीब-सी स्थिति हो गई चन्द्रा बल्लम की । यह सब जानने सुनने को वह तयार न था । एकदम गूंगे की तरह सास रोक चुप रहा । पत्नी को इस मामले में बढ़ावा देना उसे ठीक न लगा ।

वही किमी के पल्ले बांध देते—गुपघुप । यहाँ बान्नामी हो पढी तो फिर कहा जाएगे ! डूब मरने की भी ठौर न रहेगी !—परदेस का ममला टहरा । चिं उत्त भाव से सयानेपन के साथ कहकर गोविन्दी चुप हो गई ।

देर तक सन्नाटा रहा । कुछ टगोलते-सोजते हुए चन्ग बल्लम ने पत्नी की ओर दखा— तू तो दिन भर यही रहती है ।—अपनी नगाहा पर रत ।—बान्नामी कैम होगी ।

क्या ? पत्नी की पलकों फन गई— त्ति भर में भेड़ों की तरह इहाँ की रखवाली कर । सारा दिन निटकी पर बठी, बाहर भाठर

घाती-जाती तारु भांक करती रहती है।—यह मुसण्ड ! (उमने दीवार की ओर इंगित किया। उसका तात्पर्य छोटे पड़ोसी से था) —भाज दोपहर को ही छुट्टी लेकर घर आ गया था। तब स वह जाने या यह ! दरवाजे पर खूटे की तरह गढ़ गई हैं। मैं किसी काम स बाहर जाती हू तो वह सपक कर बागज की गोली फेंकता है और यह खिस से हस देती है ।'

अनन निलज्ज पड़ोसी पर चद्रा बल्लभ को बहद गुस्सा आया। पर दान्त भाव से पानी की तरह पी गया। अगीठी के कोयले से थोड़ी मुल गाता—बसा ही रोज की तरह अण्डर-वीयर पहने बठा रहा।

चद्रा बल्लभ को आता केतकी ने देखा था पर वह वसी ही पड़ी रही। लकिन देर तक भीया भाभी को गुप-चुप बातें करते मुन उसे न जाने क्या प्रतिक्रिया हुई। बाल बिखेरे भावल बहाए, बरगद के पेड की तरह यह आखें मलती खड़ी हो गई।

दोनों अब चुप थे।

ददा कत अपने प्रौफिस से आठ-न्स लिफाफे ला दोगे न !'

'क्या ?

"हमारे पड़ोस म जो वे भारत नन्दन ब्लोक-बाबू रहते हैं न उनकी हुलहीणी को बिटठी निवनी है। दिल्ली घाती बेर कहती थी—सली, बर्हा पहचने पर कम से कम बिटठी गेर कर ही माद कर सना । भारत नन्दन बाबू कहते थ—जादों म छुट्टिया म दिल्ली आऊगा ता तुम्हार ही घर पर रुकूगा। भारत नन्दन बाबू बहुत अच्छे हैं। तुन कना को घड-चौ-यू कहकर पुकारते हैं।

रेल के इजिन की तरह चन बल्लभ भक भक थोड़ी फांक्ता रहा।

बतकी के नाउज में एक छोटा-सा पैन लगा था। चद्रा बल्लभ ने यों ही पूछा— यह पहां स आया ?'

मेरा है। गिस गिस हमती केतकी बोली— 'गुमाद राम मास्टर जी ने इनाम म दिया है। कहते थ—इसमे जो भी लिखता है, पास हो जाता है। मैं भी इसी स लिखा था। तभी ता पास हुई।

ठुल बका पूर छ' दिन बके—भाज जाता हू बन जाता हू करके । अपने लिए वास्कट का कपडा छतरी और चदर की बाकी के लिए बारह गज किरप का कपडा स जाना भी न भूख । पूरा फरी-वालौ का सा गट्ठर बना कर चलने की तयारी करने लग—

ह हो चद्रा यहां मलमोडा के हमार तिवाठी बशील साहब के सड़के भी रहते हैं । सुना भफसर हैं । उनकी सोहबत म रहा कर मार ।

फिर कुछ रुक कर सोचते हुए बोले— 'गाँव में जर ने जुलम मचा रखा है हा । लोग कहत हैं तरी गिल्ली म बडी पट्टुष है । हो सके तो उसका भी कुछ बदोवस्त करवा देना हो ।

चद्रा बल्लभ बन्दोवस्त करवाएगा या बन्दोवस्त नहीं करवाएगा— कुछ नहीं कहता ।

ठुल बका को कुतुब-मीनार बिरला-मन्दिर सबक दशन करा के चन्ना बल्लभ बड स्टेशन सब छाड़ने जाता है । जान जात भी बका बर्नभ्य का बोध कराते रहत है—

बति दुरली और धानदी का भार तरे ठपर है । उनके लिए घर की तलाश भरत रहना । घर-सरचा भेजना हो । अपनी बाकी के लिए गागा की एक बातन और मर लिए जाडा म पहनने क लिए एक काना ठनी वास्कट ।

जय सब रोधना हरी न हूँ सीनी न बडी गुन्-गुन् पहिए न धूमने लगे बका प्रवचन दत रह— चद्रा बल्लभ हा मक तो बति या कुछ और पना निना देना । उमवा जनम मुघर जाणगा । मुम्हार पढोन का लड़का बडा हानहार है—धीए एम तर पदा निगा ।—बहता था बतकी को भी पदा दुगा । म पतान का बात पक्का कर भाया हू ।

चन्ना बल्लभ घर लौटने लगा ता उसक पाव बापन लग—न जाने उमक बानो म फुसफुसाकर गाबिनी भाज बीन-गो मई बात कहूंगी ।

दशित



मले ही लोग कहते रहें कि ददा मरे नहीं लडाईं म मारे गये—
साहीद हो गये । पर बाबूजी का घायल मन, किसी दूसरी ही दुनिया म
पर-बटे पछी की तरह छटपटाता रहता है ।

इ-दर आज क्या बार है बेग ? घर म अम्मा-बाबू जी मुझ
इसी नाम से पुकारते हैं ।

'मगल है बाय' ।

'तुम्हारे ददा को गुजरे किते महीन हुए ?'

मैं उपलियों मे हिसाब लगाता हू । कुछ जोड़ता हू । कुछ घटाता
हू 'बरस पूरा होने में अभी दो-डाईं महीने हैं बाय' ।

'ह दो डा 5 ई ! बाबू जी के रूख होंठ खुनत हैं । वे इस
तरह दायत हैं कि मैं कही गलत तो नहीं कह रहा ।

सभी पगग असबार मोचता है ।

इस जहाज बना दो न घबल जी ! हम इसम बठ कर पापा क
पास बोमडीसा जायेंगे ।

मैं कुछ भी उत्तर नहीं देता तो वह बछिया की जसी बड़ी-बड़ी निरीह भावों से मरे उगस चेहरे की ओर सावता है।

भाप भी सरन जायेंगे न अकल जी ! सिर हिलाकर पूछता है।
हां। मैं यो ही कह देता हूँ।

वह कमीज की आस्तीन से नाक पोंछता है। फिर भावें भिषमिषाता है आपको तो गुस्सा नही आता। फिर कसे सरेंगे ? हूँ अकल जी !

मैं भकवन के गोले को अपनी दोनों हथेलियों के बीच भरता हूँ। पास खींचता हूँ। उसकी छोटी-सी पतली नाक के दो हल्के-से छोटे छेद ऐसे लगते हैं जैसे दियासलाई की बारीक नोक से अभी-अभी धुमोकर बनाय हों।

मैं उसे जूठा बूझूँ इससे पहले ही वह उछलता है। चला जाता है। पर मैं उसी परिधि पर फिर फिर घूमने लगता हूँ।

हां पराग ठीक कहता है। मैं लड़ाई में नहीं जा सकता। मुझे अब गुस्सा नहीं आता। अभी-अभी मैं स्वयं भी सोचता हूँ मुझे गुस्सा क्यों नहीं आता है।

नदी के किनारे बिजरे पत्थरों की तरह मुझे असम्य सपाट आश्रितियाँ मिललाई देती हैं। पर एक भी ऐसी नहीं जिससे अकारण नक़ सकूँ। भगद सकूँ। मन की सारा धातें जिस पर उड़ेल सकूँ।

मेरी रीती भावें सब प्रकाश विहीन मध-साइन् के हण्डे की तरह निरपेक्ष बागे ओर घूमती हैं। फिर अघमुष्टे दरवाजे पर ठिठक पड़ती हैं।

एक गूमी-सी गहरी परछाईं दूर वहीं से उठकर ठहर जाती है। सीपी जमी चौड़ी पतकें सोले मरी ओर दिखती है।

नीरेन दा !' बच्चों की भांति वह पूछने लगती है उमर में इतनी बड़ी हो कर भी, 'आप इस अघरे बमरे में अकेले क्यों बैठे रहते हैं ?

मैं कुछ कह नहीं पाता।

"घूमने के ठाँदुररती अच्छी रहती है न !"

मुझ ख्याल आता है—हां वह ठीक कह रही है। मैंने भी हार्द
वीन की कौंस की किताब में पढ़ा था सायद—यूने से त दुइस्ती भच्छी
रहा करतो है।

“आप कहते थे न।” वह धजीव-भा मुह बनाकर दुपट्टे का छोर
छल्ले की तरह धगुलियों में लपेटती है। आप कहते थे न भगसे जाइँ
में स्कुटर खरीये। एक गुरा-सा मूट मिलवायेंगे। एक छोटा-सा सुन्
पर बनायेंगे। जिसमें नीले-नीले परने होंगे। एक नया नीला सोफा सेट
होगा। पर्दों की तरह जिसकी गदियों का रंग भी एकदम गहरा नीला
होगा। एक सुधसूरत सूत्र गानेवाला रेडियो और और।

“और कुछ नहीं।”

वह विस्मय से देखती है ‘और कुछ भी नहीं?’

‘हां।’

उसके माथे पर रेशम की तबीरों की तरह हल्की हल्की तिलबट्टें पड़
आती हैं। अरे गस्से से वह घूर कर देखती है ‘भूठे कहीं के! विद्या
बसम कहो! नहीं कहते थे!’

“क्या नहीं कहता था?”

‘क्या नहीं कहता था! वह मुह जिगाइसी है तुम भूठे हो!’
नहीं कहते थे कि एक बड़ा-सा रिजल होगा। उमम एक मुनिया होगी।
एक गीरेया होगी। एक छोटी-सी खूब बोलने वाली चीलने वाली, धी
काली-काली मधमली मीना होगी। और एक मेरे बराबर बड़ी गुडिया—
जिसकी मरी जमी घालें मेरे जैसे दात !

बहने-बहने एकाएक वह चहक उठती है। तामी पीटती हुई किल
बती है। नीरेन दा सच्ची आप बूठे हो गये। आपके सारे बालों पर
सफ़दी बिसर रही है। मैं सबसे बड़ हूँ। वह ही-ही-ही हंसने
सगठी है।

मैं उसके बया के घोसल जैसे उलझे बालों को नोचता हूँ “जगती
कहीं की! अभी तक फल नहीं आई। इतनी बड़ी हो गई—बिजली के

मैं कुछ भी उत्तर नहीं देता तो वह बछिया की जसी बड़ी-बड़ी निरीह भाखों स मरे उदास चेहरे की घोर ताकता है।

भाप भी सरन जायेंगे न अमल जी ! सिर हिलाकर पूछता है।
हा। मैं यो ही कह देता हूँ।

वह कमीज की आस्तीन से नाक पोंछता है। फिर भाखें मिथमिचाता है आपको तो गुस्सा नहीं आता ! फिर कैसे सरेंगे ? ह अकल जी !

मैं मक्खन के गोले को अपनी दोनों हथेलियों के बीच भरता हूँ। पास खीचता हूँ। उसकी छोटी-सी पतली नाक के दो हल्के-से छोटे छेद ऐसे सगत हैं जैसे नियाससाई की बारीक नोक से धमी-धमी चुमोकर बनाय हों।

मैं उसे जूठा करू इससे पहले ही वह उछलता है। चला जाता है। पर मैं उसी परिधि पर फिर फिर घूमने सगता हूँ।

हां पराग ठीक कहता है। मैं सड़ाई म नहीं जा सकता। मुझे धव गुस्सा नहीं आता। कभी-कभी मैं स्वयं भी खोचता हूँ मुझे गुस्सा क्यों नहीं आता है !

मदी के बिनारे बिलारे पत्थरों की तरह मुझे अमस्य सपाट आकृतियाँ निखसाई देती हैं। पर एक भी ऐसी नहीं जिसस अबारण सड सकूँ। अगड सकूँ। मन की सारा बातें जिस पर उठेन सकूँ।

मेरी रीती आखें तब प्रकाश बिहीन सच-साइट के हण्डे की तरह निरपक चागे और घूमती हैं। फिर अघमुंटे दरवाजे पर ठिठक पडती हैं।

एक गुंगी-नी गहरी परछाई दूर वहीं से उडकर टहर जाती है। धीपी जगी धोधी पलकें मोले मरी और देखती है।

नीरेन दा ! अच्चों की भांति वह पूछने सगती है उमर में इतनी बड़ी हो कर भी 'आप इस अघरे क मरे में अदेने क्यों बठे रहते हैं ?'

मैं कुछ कह नहीं पाता।

'घूमने म ठाडुगगी अण्टी रहती है न !

मुझे ख्याल थाता है—हां वह ठीक कह रही है। मैंने भी हाई जिन की बीस की किताब में पढ़ा था शायद—धूमने से तब दुखस्ती अच्छी रहा करती है।

“भाप कहते थे न।” वह मजीब-सा मह बनाकर दुपट्टे का छोर छल्ले की तरह भगुलियों में लपेन्ती है। भाप कहते थे न भगले जार्जों में स्क्रूटर खरींगे। एक भूरा-सा सूट सिपवायेंगे। एक छोटा-सा सुन्दर घर बनायेंगे। जिसमें नीले-नीले परले होंगे। एक नया नीला सोफा सेट होगा। पर्नों की तरह जिसकी गदियों का रंग भी एकलम गहल नीला होगा। एक खूबसूरत खूब गानेवाला रेडियो और और।”

और कुछ नहीं।’

यह विस्मय से देखती है ‘और कुछ भी नहीं?’

‘हां।’

उगके माये पर रेगम की सकीरों की तरह हल्की-हल्का दिनबट्टे पद जाती हैं। दब गन्स में वह धूर कर देखता है, “नू वहीं क। दिवा कसम बहो! नहीं कहने थ।

क्या नदी बहता था?

सम्भे से भी ऊधी ?

वह बालों को छुशान के लिए छप्पटाती है ।

बता यहा क्यों भाई थी ? मैं उबल कर देखता हू ।

विज्जो स मिलने ! वह भटका देती है बसाई बही न !' दूर खली जाती है ।

निगाह जादों को फीकी घूप की तरह फिर विज्जनी पर बिलर पठती है—उत्साह । इटा से पटी छोटा-सी सक्करा गली । मादमी ही मादमी !—घोटियो की बहार की तरह । इतने मोग इस मली-सो दम घोटन वाली घधी-गली से हाकर बर्हा घाते जात होग ! मैं फिर बरगन व पेड़ की घोटी की घोर देखता हू छठ की मठ पीती है । जहा बनू सुयह नहा कर उर छारे गोल रघम को कघा पर बिघेर देती है । नाइलानी घुए के उस पार घूम्य म साबती पता नही क्या-क्या सोचती रहती है !

मुझ लगता है बनू ठाक बहती है । सधमुच मर बालों पर रात बिसरता बला जा रही है । एक बार भम्मा ने दला छो मुए तल बालों को बास कर घुप हा गई थी । पर बावू जी जब बर्मा मर सफद बालों की घोर देखत है ता उनका घुघली-सा पुठलिया म एक घबब-भा रग उमर घाता ह । सफद मलजी बागज की तरह जिघम कोई भी भाव पस भर ठहर नही पाता ।

घास घसमय फूल जात है क्या फूल जाते हैं ! घान्मी समय से पहले हा मुरा हो जाता है—क्यो हा जाता है ! थोड़ स समय म सन्ध्या स सत्राय सपन पता नहा कहा खल जात है ! घभी दुनिया हा मैन किलनी दती है । घगर दहा हात सा क्या म भी घभी सचकी तरह घुनिकसिटी म नहा पढ़ता । घरकी व दुहर पा । म या तिन रात बिसता रहता । दहा बहन घ—कुम्ह पढ़न व लिए परिन भत्रग । मरा व मर घाता है । म मठक स मुझ माइता हू घोर फिर कुछ ठहर कर फिर उसी नाम म नुट जाता हू । परग की पीस दहा की घानघानी क्यो

हरिद्वार जाने घाने का खर्चा और बाबू जी की दवा का हिसाब लगाता हूँ—कि इसा दरवाजे पर फिर वही परछाई ठहर पड़ती है—बिज्जो स मिलने के बहान ।

जी, यहाँ बिज्जो नहीं आई ?'

“ना ।”

ना के साथ उसे चला जाना चाहिए था लेकिन वह ठिठक पड़ती है ।

नीरेन दा आप बिलकुल बल गये है सच्ची !' उसने जैसे मुझे धमकते वयो वाद दमा और बहुत गहरे में उतरते हुए कहा आप इतना सारा काम किसके लिए करते हैं ! न समय पर खाते हैं न पीते हैं न सोते हैं । बिज्जो कहती थी नीरेन दा को नीरेन न घाने की बीमारी हो गई है । सच, आपका चेहरा भजाय भजीब-सा हो गया है । दूर से देखने पर डर-सा लगती है ।

मैं अपने रूख होंठों को जीम से भिगोता हूँ । धूर कर उसकी ओर देखता हूँ । वह सहम जाती है ।

‘धर मा ५ !’ सरोप कहता हूँ ।

वह पास आकर खड़ी हो जाती है ।

वा सामन कुर्सी खीच !

वह कुर्सी खींचती है ।

बैठ जा ।

सिबुड कर बैठ जाती है ।

आटा सच-मच बता ! मुझ तक कर डर लगता है ?

वह बचपन फिर हिलाती है— ना

भूट बोतती है ! लगता है न !

नहा तो !'

फिर क्यों कहता थी ?

भूट मूठ कहता थी ।

‘भूट-मूठ कहती थी ! मुटठी भर तार तार सुनहरा सूखा रसम हवा

से उठ कर फिर माये पर फन जाता है । मैं उसके मामूम-मुखड़े की ओर देखता हूँ । बड़ी-बड़ी भूरी पारदर्शी घाखा की ओर ।

अच्छा बना मुझ दल बर डर नहीं लगता तो क्या लगना है ?

वह बिना सोचे अनायास कहती है अछा लगता है ।

मैं हस पड़ता हूँ । मुझ हसता देख वह भी यो ही हसने लगती है ।

कुछ गण फिर मनाटा रहता है ।

मैं सिगरेट के सिरे की राख की सम्बो लकीर की ओर देखता हूँ ।

फिर बड़ी तसल्ली के साथ कहता हूँ 'देख बन्नु !

बन्नु सचमुच देखने लगती है ।

बाबू जी बूढ़े हो गये न !

वह पराग की तरह तिर हिसाती है हाँ !

'तू देखती है अम्मा जो इस ऊपर में भी कितना काम करना पड़ता है ! जबसे बिम्बो गई कोई भी हाथ बटानेवाला नहीं रहा ।

वह अचानक देखती रहती है ।

माभी गुद हो चुकी हैं । उस पर दिन रात बच्चे नोचने रहने हैं ।"

हां । वह फिर माया हिसाती है । जैसे यह बात भी वह जानती है ।

ओर फिर दहा के गुजर जाने के बाद कमालेवाला अचैता मैं हो तो हूँ न !"

'हां ।

तो गुन ! तू ही बटा इतनी बड़ी गाड़ी अचानक से सोची आयगी ! तुम्हारे डेढ़ी की तरह तो सब पीछे वाले नहीं होते न !'

बन्नु की बड़ी बड़ी निरदल घालों में रत का गुप्ता-नागर सिमट आता है । बड़े-बड़े घामू के टील बनन हैं, बिगड आने हैं ।

तो नीरन दा ! वह बहुत देर तक सोपती गृही है तो घाप घानी क्यों नहीं कर लेते !

'हूँ ! मैं बिरमय से कह उठता हूँ घानी बर लू ! क्यों ?

"यया क्या ? वह मारा काम कर लिया करगी न !

मैं कुछ भी कह नहीं पाता। भाखें भीचे पता नहीं नया नया सोचता रहता हूँ।

हो कहती तो ठीक हो। जो घर का सारा भार उठा ले अगर ऐसी औरत मिल पाती तो ।'

बनु वान काटसी है। आश्चय से कहती है क्या कहा, औरत से घापी करोगे नीरेन दा। लडके लोग तो लडकियों से याह किया करते हैं। यह अपनी अबूझ हमी में बिल खिल हसने लगती है, सम्बी, मैं सबसे कह दूगी ।

वह नपास की तरह हल्की हो जाती है।

मुमम कुछ भी कहत नहीं बनता। यह क्या है। किसी भी बात को गहराई से क्यों नहीं ल सकती। मुझे उस पर हसी आती है। दुःख होता है। बितनी बड़ी हो गई। इसकी उमर की सारी लडकियों की घादी हो गई है। पर यह अभी तक बच्चो जसी उठी उठी बातें बिया करती है कि

अपने सफ़द बाला को पहले कुछ गिना तक एक-एक कर नोच कर निकालता रहा। पर यह प्रम भी अब छूट गया। बेहरे की आइयां गिनने से क्या। अपनी ही आकृति अब मुझे अपरिचित लगती है। भय-सा महसूस होता है।

पर यह क्या! बनू अब बहुत दूर-दूर क्यों रहती है। कभी भी दीखती नहीं। बिगजो कहती है इन्तौर चली गई है, ममसी बुझा के पास।

इस धुन्न भरी मोभिल जिन्दगी से हार कर चक कर मन अनायास जहाज के पछी की तरह फिर फिर उसी ओर पल्ट छटपटाता है।

लेकिन बनू अब से युष्मा के यहां से लौटी है बदली-बदली-सी सगती है। इन दो ही महीनो में उसना बषपना न जाने कहां चला गया है। मय न वह हसती है न बोलती। खोई-खोई-सी न जाने किस भवर म

हूँबी रहती है।

एक दिन देवता हूँ वह भारी भारी ढग भरती बमरे म घा रही है। इस बार यह नहीं कहती कि बिज्जो से मिलने आई है। उसे बिज्जाम के साथ दरवाजे यों ही बन्द कर पास ही कुर्सी पर बठ जाती है। जहाज के पक्ष की तरह वेहुरा भारी है—निराग।

बया लमा नहीं हो सकता कि कौन एक ऐसी लक्ष्मी मिल जाय जो पाबू जी की श्रेष्ठ भाल कर ले। मां जी के काम म हाथ बग ल। भाभी को भी कुछ सहारा मिल जाय और घापकी सवा भी कर गके तो घाप उसम घानी कर लेंगे न नीरेन दा।

मुझ का भी उत्तर नहीं सूझता। मुझे कुछ भी कहा नहीं जाता। वह एक बार दो बार बार बार घपनी वातें दुहरानी है लकिन मेरी जुवान पर लखवा मार गया है। मैं बहुरा गया हूँ न।

यह घत म एक गहुरा निन्वाम छोटो है और बली जाती है। घाम को एक छोटी-सी बिन्ट शिमी के हाथ भिजवा देती है। घोर उमने बाबू बनू फिर कभी भी निन्वाम नहीं देती। न गिडकी गालती है न छन पर राम गयानी है।

घोर मैं भी काम म घब बुरी तरह पिता रहता हूँ। पठा ही नहीं बसता बब पी पनी बब साकू दनी।

दहा की वर्षों के दिन। हम हरिद्वार होकर घाये थ। बाहर भीतर मोर्गों का जमघट जुटा था। बाइलणा ब बम घम म निन्व कर घाने बमरे में पन्था तो एक बजने को था। सारा मगार सोया था। बाहर बीबी-गन ब बीगने की घावाड घा रही थी। घाम ब बमरे म भाभी के गिगबने का स्वर। पगग हान भग म बीमार है। मेरी रन्धा मोरनी को छूटे घार दिन हो गय।

रोगनी पतता रहती है। मैं मस्य की घार दगता रहता हूँ। लकी

दरवाजे का कुण्डा-सा खटकता है। दो निरीह भासों मेरी ओर न जाने किस भाव से भाँकती हैं !

बनु !

अवीर म डूबी सफ़ हकी-सी राख की लकीर-मी !

'मरी कय से खड़ी हो ?'

भाज वहरी बनने की वारी बनू की है न !

'सुना था तुम्हारा ध्या हो गया ?'

बन टकटको बाँधे मेरी ओर भयभीत आखा से देखती रहती है।

मुनिया उठ गयी। नीले पर्दों का चमकता रंग स्वाह पड़ गया !
घर खरीदने से पहले ही बिक गया ! लगता है रेडियो अब संगीत नहीं,
मसिया मुनाया करता है न !

बनु के मुलावी अघरा पर जामनी रंग फिर गया है। बुझे दिने की तरह उसकी आदृति-सगा घूँस हो गयी है।

'नीरेन दा ! वह भाचल म मुह छियाकर, दांता से होंठ काट कर पफ़-पफ़ कर फूट पड़ता है !

पीर कुछ दण उसी तरह खड़ी रह कर सिसवती हुई भोक्ल हो जाती है।

परग अब असवार नहां नोबता। यह भी नहीं कहता कि मैं जहाज बना हूँ। वह उड़कर पापा के पास भीमा पर जायगा। भाभी अब ब्राह कर भी रा नहीं पातीं। उनकी भासों से घामू कुलबत ही नहीं। डाक्टर कहत है—बाबू जी दवा नहीं पीत। कहते हैं—व्यय में पसे जाया करने मे क्या ! मां अब मुए तनवाल को भी नहीं कोसती। बनू भूलकर भी एक धार नहीं देखती।

मैं दिन भर इन धूल मरी सड़कों म मारा-मारा फिरता हूँ। घर में घुसते ही गिता जी भागन पर लडे मिलते हैं कुछ मिला !

इन 'तीन' शब्दों का अर्थ्यूह मैं भेद नहीं पाता। उत्तर दिये बिना

ही घसा जाता हू । छत पर सेटा-सेटा घासमान पर सनी नीली चादर की ओर देखता हू ।

सोग कहते हैं—कनु हर समय उदास रहती है । भव खिडकी नहीं खोलता । भव बाहर नहीं देखती । शायद कभी-कभी दूर से झलक पड़ती है तो उसका हाथी-दात उसे गौर हाथो में महरी कितनी घन्धी लगती है ! जब वह सार में गोल कपड फलाने के लिए झुकी है तो उसकी सुनहरी बुड़ियो की चमक बिजली की तरह चौंध जाती है ! भांग में सिन्दूर कितना सुंदर लगता है ! रेसम का लाल ओरा-सा !

सड़को का ब्याह सड़निया से हुआ करता है । ब्याह के बाद सब बदल जात है । कनु भी बदल गयी है ।

बिज्जो कहती है कनु सचमुच बहुत बदल गयी है । भव बहुत सुख से रहती है । पर उसका बचपना अभी तक भी गया नहीं ।

उसने अपना कमरे में कितन ही ठर सारे नाल-नील पर्दे मकारण सटका रखे हैं । गहरा नीला सोफा-सेट है । खूब बोलनवासा खूबसूरत रडियो । घोर कितनी हा मुनिया, गौरया पाल रखी हैं । सुनहरे पिंजरे में एक मखमली काला मना है । जो दिन रात बिटुर बिटुर चींगती रहती है । जब कठ में बाटा बसक पडा हो !

मैं पीरो में देखता हू । कुछ भी तो दिखलायी नहीं देता । कबल टिड्डीकी सिपटकी रगहीन खोलनी दीवारों का प्रतिबिम्ब एक-दूसरे से टकरा-टकराकर बिसर पड़ता है ।

वृंद पानी



इतना सारा यह सामान किसका धरा पड़ा है नन्ही ? आफिस से सोते हुए, घर की देहरी पर पाव रखत हुए माथे पर उभरी पसीने की बूँों को निरछी भगुलिया से समेट कर दूर छिंकते हुए विश्वंवर ने पूछा क्या बड़े भया घाये हैं गाव से ?

बालिन्दी ने जमे सुना नहीं । तमतमाता मुह भटके से फर कर सामने से मुहो घोग दूसरे कमरे में घोमल हो गयी ।

बिन्वेदर ठिठक पड़ा । जोम की नोक को दाहिने जबड़े के दुलते दांत पर टिकाये किंचित् अघर खोले दखता रहा । फिर वसा ही खोया-खोया-सा भागे की ओर बढ़ा ।

घर देहरी के पास दो फटे टायर के मोट तलुवेवाले, धितकबरे बेडोल जूत मुह फाड़ बटे हैं । बिन्वेदर समझ गया बड़ भया होंगे या ताडजी ! पर एकाएक कैस ? चिट्ठी तक गरी नहीं !

बपड़े उतार, पीठ क बल खटिमा पर बह गिर पड़ा । छत पर सेजी से घूमते, घरघराते पुराने पधे की ओर देखता रहा ।

कालिंदी चाय रखकर चली गयी उसे पता नहीं । गुड्डो जिसवती भायी लेकिन उसने देखा नहीं । किसी ने पूकारा कुछ कहा लेकिन उमन सुना नहीं । टक्करी बाघ वह बेबल पक्षे की घोर दस्तता रहा देखता रहा । पता तेजी से हवा काट रहा है । एकाध सूखी घास के तिनके ऊपर से सटकते हुए बुरी तरह काप रहे हैं । पिछले आठों में गायद चिड़िया ने घोंसला बनाया था । घोंसला कहां गया ? चिड़िया कहां गयी ?

हृद हृद तू घोर ! तू मरजानी मुई ! चुप भूठा
कुत्ती मा । आवाइ-सी भायी लभी ।

विश्वेश्वर झुके से उठ बैठा । जैसे नींद से जागा । घबराचा कर हृदर-उधर देखने लगा लेकिन दीखा कुछ नहीं । कान लगाकर फिर सेट गया हां चारपाई के नीचे खटर पन्तर की सी आवाज सुनायी दी । कुछ छीना भपनी कुछ मार-पीट कुछ दवा हुआ शोग्गुल विलियों की जसी लडाई ।

बीन गुड्डो ! घोंसल चारपाई की पाटी के सहारे झुंवर भांवा—एक-दूगरे के बाल नोबने म चार न हैं-नहें हृद अस्त है । तूब गुत्थम गुत्था हो रही है । पर उसे देखते ही जो जहां था यही पर रफ गया । जम चलतो मगान की बिल्ली सफसा समाप्त हो गई हो । सांस रोके चार बड़ी-बड़ी भयभीत आंखें सहम कर उमरी घोर देखने लगीं ।

घर र र ! ये बीन ? चारपाई से उछलत हुए विश्वेश्वर ने कहा उह कालिंदी ! ये किस आवाजघर स !

आपके गाव के घोर कहां के । मुह फलत हुए कालिंदी म कहा घोर लनक कर घोती का पल्ला पीछे पकती सामन लडी हो गई । हाथ हवा में दिखाती हुई घोनी देखत क्या है भया जो जो सगरीफ साये हैं । दो गजकुमारों की भी साय ल ये हैं । पूरे मझेने दो महीने बेटा डाल कर पड रहेंगे । निजातो दो सो दामे लक ! म हों तो एकाध

मेरे गहने गिरवी रख कर साधो । मया जी भाये हैं न गाथ से ! साधोने कसे नहीं ?

विदेवेश्वर मुह खोल भासिन्दी की ओर देखता रहा । कुछ बड़े, उससे पहन ही एक एक कर कुत्त के पिल्ल की तरह बाहर घसीट कर कालि-दी ने दोनों बच्चे त्रिवाले और सामने खड़े कर दिये ।

पत्नी का यह व्यवहार उसे बला न लगा ।

घुटने तक लम्बे स्याह मलशिया के कुरत और फटे हुए धुमरले मारकीन के पाजामे में लिपटे दोनों बच्चे हर स कांपते लग । जस उनसे कोई बहुत बड़ा अपराध हा गया हो और धभी धभी जिसकी कठोर सजा सुनाई जानेवाली हो ।

दो मामूम चेहरे । खूबसूरत । उदाम ।

बिन्देश्वर रोम गया । भजीव-से पुत्तुहन से देखता रहा—

धनोखी-सी गोन-गोल भाटति, ब्याई भरी बठी बठी गुस्सली, डरी हुई आखें भिचे हुए तरह भधर ।

हथी भाण बिना न रफी उसे ।

भरे यह कील ? चहक कर यह बोला हुमासा धीनु बेता है न ! कील कील यह बिन्ने । वि-दो लानी भई, तुम लोग ता पहचान नहीं जाते रम कसा हो गया जग सगी कील जसा !

दाना बच्चे एक-दूसरे का मुह ताकने लगे ।

इम से नमस्त कहा ?

, फिर दोनों की भाव्य मिला । बाठ घायब समझ म भायी नही ।

छाट बच्चे को बिन्देश्वर न गोदी म उठा लिया । जो मिहुड सा थाया । उसकी बहती नाव धुले सौनिए से पाछने लगा तो कालि-दी ने गुस्म म उसकी ओर देसा, पर उनी तरह उसका सारा मह पाछता हुमा गिर दित्ता कर बोला, क्या हरजठ, जिस भजायबधर से सधारीफ साथ ?

बधा धीर छोटा हो गया ।

'गाव म घोवी भी मही था न ! नार्द भी नहीं था ! कची भी नहीं थी ! कमे मालू के जमे बाल बना रहे हैं—या लम्बे-लम्बे ! धरे पानी तो होगा ही घोने के लिए ! क्यों ? क्यों ? दो घण्टियों के बीच चिमटी की तरह उसनी नाक पकड़ते हुए हिलाते हुए विद्वे-वर ने कहा क्यों ?

बाबिल्ली यह देख कर जल कर राग हो गई । जैसे उसने किये कण्ठ पर पानी डलक पड़ा हो । हाथ नचाती हुई धोली चाय पीनी है या नाटक मेखना ! छ-बजे घायले दोस्त साहब अपनी धरम-पत्नी सहित घान-नोपालो की पल्टन लिए पधारने बाल हैं राने की । बुला तो लिया बहो रोब स ! घर मे है भी कुछ ! बनाऊ क्या अपना मिर !

विद्वे-वर टाट गया । पहले तो दाए मर गम्भीर रहा फिर खुस्वियां बना हुआ बनापती धीम स्वर म बोला क्या घायले व पल्टन से कर इन तरह स ! हमने उनका क्या बिगाडा है जो वे राने की उतार हा ? यह विद्वे-वर हस पड़ा । बाबिल्ली भी क्या करे ! हस बिना न रह सकी । फिर भी गुस्से से बोली, 'दिखती हू क्या घा रहे हैं ! पूछना उन्हीं से !

'घर तुम क्या परगान होनी हो ! कोई नवाब की घोलाद तो है नहीं । घायले तो घर म जो होगा मिला देगे । बस !

बम्ब ! हाथ नचाया बाबिल्ली ने घर म भूनी भांग भी नहीं । उम पर कुछ भी बौर-नगर रह गई तो उही के मामन मुभ पर बम्ब पढेगे । जग मिन ही जानबम्ब कर सुरा बनाया । धीर घर म तो जमे मामान बग पदा-पदा मड रहा है । दम-म गिन तर घपने दोस्तों को रात्र मये-नेय बिम्ब मड कर मुनागे फिरोगे । बान-बवान तरह-तरह के लाने भोग । मी घात्र घात्र । गरम छे-सा ठम-माता मुद् पोछती तेजी से बाबिल्ली बनी न ।

मुटार दोन्नां की घात्र गाना गिलाया तो मरा नाम बम्ब दना ।

बुला लाते हैं जिसे जी में घाता है ! जैसे घरमचाला है ! चौके की ओर से अंतिम चेतावनी आई ।

चूल्हे पर घड़ी पतीली उतर गई । रसोईघर क किवाड़ धढाके से घद हो गय । कालिन्दी मुह दिशोर कर अपने कमरे मे घली गई । पलंग की पाटी पर बठ कर नीचे की ओर लटकते पांशों को हिलाती हुई कुछ सोचती हुई कुछ परशान-भी उलझी हुई बुनाई की सीकों में ताग पिरोने लगी । हाथ तेजी से चल रहे है । हृदय तजी से घटक रहा है । नयुने तेजी से फटक रहे है । हाठ गुन्स से कांप रहे हैं । और बुनाई गलत हो रही है । लेकिन उसे क्या ! होती रहे ! लास हाती रहे—बसा से !

एक ही सांस मे पानी की तरह धाय पी कर विश्वेश्वर ने ठण्डा प्याला परे रख दिया । नाश्ते की तश्तरी दोनो बच्चा के सामने घर दी । फिर पलंग पर लेट गया और छत्र पर लटकते पक्षे की ओर देखने लगा ।

कुछ क्षण बाद उठा तो देखा काफी बक्त गुजर गया है ।

कनी ! झरी ओ कालो ! बड़े प्यार से भीठी आवाज में बोला, ' भई कहा घली गई हो ? '

बाहर सहन की ओर भांका । बद रसोईघर की ओर भांका । कुछ और भागे बदा कालिन्दी !

कालिन्दी न मुह फुजा निया बलून की तरह ।

कालिन्दी बोल तो वह कालिन्दी ही क्या !

' बाह यहाँ बठी हैं रानी साहिबा ! मैं कमरे-कमरे मे विरही यक्ष की तरह बाबला-मा भटक रहा हू । बाहर बरामटे मे उदास पड़ी भगीठी के घुण के उमड़ते घुमड़ते बापला से सन्दशा भेज रहा हू पर तुम सुनती नही । फिर कुछ रुककर बोला ' चूड ! चांद तो महा निकला ! मैं बहू धान रोगनी बहू !

कालिन्दी ने मुह पर लिया ।

विश्वेश्वर उसक माथ पलंग पर बठ गया । कुछ और सट कर बठ गया । बघे पर दिवरी लगे की सहलाता हूपा बोला तुम मुस्कराती

हो तो बरबस फूल झडने लगत हैं। तुम गुस्सा होनी हो तो घोर भी घबिन सुन्दर लगती हो। सोचता हूँ चकार कितना मूरख प्राणी है। तुम्हारी तरफ न देखकर जान की घोर बयो ।

बस-बस रहने दो। मुझ पेह वकवास अच्छी नहीं लगती। मुझे छोड़ दो बस। गुस्से से कालिन्दी घोर परे हट गई।

मैं पहले यह बतलाओ हमें कौन-सी छूत की बीमारी है। हम कौन-सा ऐसा भयकर सक्रामक घसाध्य रोग है जिसकी यजह से तुम दूर भागती हो। सध । यह घोर विसमा तो कालिन्दी दूर धली गई घोर पलंग के दूसरे सिरे पर बठ गई।

विष्णुदेवर सोचता रहा। फिर तनिक घोर घाने बडता हुषा भारी घावाड म बोला तुम्हें मुझमे नपरत है न कालिन्दी।

कालिन्दी चुप थी।

हां बहो! बहो! बोसो! डरती क्यों हो—मैं बहुत मुरा हूँ न। विष्णुदेवर की निगाहे सामने मेज पर टिकी थीं।

कालिन्दी फिर भी चुप रही।

बोसो भी—मैं बहुत मुरा हूँ न!"

हां! कालिन्दी ने होंगों को छिकोडने हुए छिर हिलाया।

तो सो! जस उसे मनचाही घात मिल गई। उसने मेज पर रता सखी छीने वाला चाकू उगाया घोर सामन रग दिया 'सो! सो म! दगती बया हो! सो!

विष्णुदेवर उमरी भिभी मुटगी में जबरदस्ती चाकू की मूठ दवागे सगा घोर यह गुस्से म झझमाती बघाव करने लगी। दगी छीना झरती म डोरा म जाने वहां छिगर गया। मार्के न जाने बडी गिर गई। चाकू पग पर न जान बहा मुडक पडा। कालिन्दी की बलाइयों को विष्णुदेवर की बलाइयाँ दबोच जा रही हैं। दबोच जा रही हैं।—'छोडो भी! छोडो भी!' कालिन्दी बडती पसी जा रही है।

बडी मुदिरस मे मरके मे साथ कालिन्दी ने घाने को छड़ाया।

